॥ श्रीः ॥

औरंगजेबनामा

तीसरा भाग ।

अर्थात्

मुगलसम्राट् महीउद्दीन मोहम्मद् औरंगजेब आलमगीर बादशाहका इतिहास ।

जिसको

राय मुन्शी देवीप्रसादजी मुन्सिफ राज्य जोधपुर इतिहास-
वेत्ताने फारसी तवारीख मआसिरे आलमगीरीसे सरल हिन्दी-भाषामें उल्था करके उपयोगी टिप्पणी तथा तत्सम्बन्धी विशेष संग्रहादिसे विभूषित कर लिखा ।

वही

खेमराज-श्रीकृष्णदासने

बम्बई

खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा लेन,

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-मुद्रणयन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रकाशितकिया ।

संवत् १९७०, शके १८३५.

भूमिका.

औरंगजेबनामेके दो भाग दो वर्षोंमें "श्रीवेंकटेश्वर समाचार" के पाठकोंको भेंट होचुके हैं । यह भाग तीसरा और अन्तिम है । "औरंगजेब नामा" भारत-इतिहास-भंडारका एक बहुमूल्य रत्न है। ऐसे सुप्रसिद्ध ग्रन्थका अनुवाद हिन्दी भाषामें करके मुन्शी देवीप्रसादजी मुन्सिफ जोधपुरने हिन्दी साहित्यकी सराहनीय सेवा की है। उसी ग्रन्थका यह अन्तिम भाग आज हिन्दी भाषा भाषियोंकी भेंट करनेका सौभाग्य हमको प्राप्त हुआ है । आशा है कि विद्वज्जनोंके निकट यह यथोचित आदर पावेगा । इस भागमें औरंगजेबके शासनकालकी, संवत् १७४० से संवत् १७९९ तककी घटनाओंका उल्लेख है ।

प्रकाशक ।

॥ श्रीः ॥

औरंगजेब नामा.

तीसरा भाग.

द्वादश खण्ड.

सन् १०९४ हि० संवत् १७४० सन् १६८३ ई०
२७ वां आलमगीरी सन् ।

१ रमजान (भाद्रपदसुदि २ । १४ अगस्त) को २७ वां जलूसी वर्ष लगा बादशाह महीने भर तक दौलतखाने की मसजिदमें रहे.

७ (भाद्रपदसुदि ९ । २० अगस्त) को बादशाहजादे आजमशाह ने खिलअत सरपेच जड़ाऊ तलवार हाथी १०० घोडे और २ लाख रुपये की इनायत पाई ।

शाहजादावेदारबखत खिलअत सरपेच कलगी खंजर और हाथी पाकर अपने बाप के साथ रुखसत हुआ सैयद शेरखां इखलासखां और कमालुद्दीनखां वगैरा शाह के तइनातियों को बहुतसी बखशिशें मिलीं।

४ (भाद्रपदसुदि ६।१७ अगस्त) को काशमीर के नाजिम इबराहीमखां की अरजी से अर्जहुई कि उसके बेटे फिदाईखां ने तिब्बत नाम गांव दलदल

---

१ कलकत्ते की प्रति में—"पाकर बीजापुर को मोहम पर रुखसत पाई । "
२ कलकत्ते की प्रति में—नवसत ।

जमीदार से छीनकर वादशाही अमलदारी में मिलादिया हुक्महुआ कि दरवारी लोग आदाब वजालावें और शादियाने वजावें।

आतिशखां हुक्मसे आजमशाह के लशकर में जाकर अमीरखां के बेटे मोहम्मदहादी को हजूर में लाया जो पहिले रुहुल्लाहखां के और फिर सलावतखां के हवाले हुवा फिर २५ रमजान (आश्विनसुदि ११।१२।७ सितम्बर) को हुक्म हुआ कि दोलतावाद के किले में कैद रखें।

३ शव्वाल (आश्विनसुदि ५।१५ सितमवर) को वादशाह के हुक्म से शाहआलम वहादुर की पेशखी में कोकण और रामदडे वगेरा की तर्फ लेजाने और गनीम के मुल्क फतह करने के लिये शादयाना वजातेहुवे औरंगावाद से वाहर लाये गये।

दिलेरखां पठान १ लंवी वीमारी भुगतकर मरगया अकसर लडाइयों में खूब वहादुरी से लडा था मोटा ताजा जोरमंद था भागवल से उसको वडी सूख और अजव कुव्वत थी अपनी कोम को कावू में रखने की ताकत और किसमतकी मदद अव्वल से अखीर तक रही।

इलूरे की कवरों का हाल।

औरंगावादसे २० और दोलतावादसे ३ कोस इलोरेमें शेख वुरहानुद्दीन,

---

१ कलकत्ते की प्रति में इतना और लिखा है कि इवराहीमखां को इस वडी फतह के पलटे में दो हजार सवारों का इजाफा होकर ५ हजारी ५ हजार सवार का मनसव जिसमें २ हजार सवार दुअस्प थे और १ करोड दाम का इनाम इनायत हुआ और बहुत ही शावाशी का फरमान खिलअत खासा जडाऊ खंजर मोती लडी का फूल कटारा सात हजार रुपये की कीमत का सुनहरी साज का अरवी घोडा, दोसौ मोहरों का १ हाथी, खासा हलके में से १५ हजार रुपये की कीमत का भेजा गया उसका लायक वेटा ७ सदी ४०० सवार के मनसव से वढकर हजारी ७०० सवार के मनसव को पहुंचा खासा खिलअत सोने के काम की तलवार मीना के साज की १ इराकी घोडा सुनहरी साजवाला सौ मोहर का और १ हाथी ११ हजार रुपये का भी उसको इनायत हुआ। २ कलकत्ते की प्रति में ८ कोस।

शेखजैनुलहक, शेखनजीबुद्दीन, मीरमोहसन, मीरहसन और सैयद मोहम्मदगेसूदराज के बाप सैयद राजू वगेरा वलियों की कब्रें हैं जिनकी जियारत के लिये लोग जाते हैं इनमें से अकसर वली निजामुद्दीन औलियां के मुरीद थे जब तुगलक के बेटे मोहम्मदशाहमलिक जूनाने देवगढ के किले को सब मुल्कों के बीच में जानकर दोलताबाद नाम रखा और सदर मुकाम बनाकर दिल्ली के रहनेवालों को बाल बच्चों समेत वहां जाकर रहने की तकलीफ दी थी तो यह लोग भी उस जगह गये रहे और मरे वहां से कुछ दूर इलोरा नाम १ जगह है कि जहां पहिले पहाड की गुफाओं में जादू के से काम करनेवाले सिलावटों ने १ कोस तक बडे २ मकान बनाये हैं छतों और दीवारों में तरह २ की सूरतें पूरे बदन की काट २ कर खोदी हैं पहाडके ऊपर तो १ मैदानसा दिखाई देता है उन घरों का कुछ निशान नजर नहीं आता अगले जमाने में जब शरीरकाफिर इस मुल्कपर हाकिम थे तो उन्हीने शायद इन मकानों को बनवाया हो जिनों (भूत प्रेतों) ने नहीं जैसा कि लोग कहते हैं ये उन झूठे मतवालों के मंदिर थे अब तो १ ऊजड़ जगह है जिससे समझदारों की आंखे खुलती हैं सब ऋतुओं में और खासकरके बरसातमें जब कि वह पहाड और जंगल हराभरा होकर बाग जैसा होजाता है पानी की चादर १०० गज चौड़ी गिरती है. लोग देखने को जाते हैं अजब शैर (तमाशे) की जगह है देखते ही बनता है लिखा कुछ नहीं जाता।

औरंगाबाद से अहमदनगर जाना.

१ जीकाद (कार्तिकसुदि ३।१२ अकतूबर) को बादशाह के डेरे करन पुर में हुवे तोपों की कड़क से दुशमनों के दिल धड़के आदाब और मुबारक सलामत की धूम मची आजमशाह और बेदारबखत जो हजूर में आये थे १९ जीकाद (मार्गशीर्षवदि ९ । ३० अकतूबर) को खिलअत सरपेच हाथी और नीमचा पाकर गुलशनाबाद को रुखसतहुवे ।

---

१ कलकत्ते की प्रति में शेख मुततलब उलदीन जरबखश । २ यह तो वही मसल हुई कि रीझोगे तो पत्थरही मारोगे ।

सखरके जमींदार पदमनायक ने मुलाजिमत करके खिलअत तलवार और जमधर पाया ।

चांदा की जमीदारी रामसिंह से बदली जाकर किशनसिंह को मिली ।

३ जिल्हज (मार्गशीर्षसुदि ५।१३ नवम्बर) को दिलेरखां के बनायेहुवे अहमदनगर के कच्चे किले में डेरे लगे काजी अबदुलवहाब के बेटे काजी शेखुलइसलाम ने वैराग उपजने से बादशाह की बहुतसी महरबानी होने पर भी कजा काम छोडदिया जो उसके बहनोई सैयद अबूसईद को सौंपागया और उसने दिल्ली से आकर मुलाजिमत की खिलअत तलवार, और जमधर मिला ।

१० जिल्हज (मार्गशीर्षसुदि १२ । २० नवम्बर) को नये शहर का हाकिम मोहम्मदखलील दरगाह में हाजिरआया खिलअत और १ हजार रुपया पाया ।

श्रीरंगपट्टन के जमीदार के वकील पेशकश लेकर आये २०० रुपये मिले ।

सैयदऔगलान शाहजादे कामबख्श को पढाने पर रखागया औरंगाबाद का काजी मोहम्मद सालह दिल्ली में गया और उसकी जगह रकाब (सवारी) का मुफती मोहम्मदअकरम औरंगाबाद का काजी हुआ ।

सातों चोकी की अमीनी की खिदमत भी जानमाजंखाने के दरोगा मीरअबदुलकरीम को मिली ।

सरबुलंदखां ख्वाजायाकूब बागियों को सजा देने के लिये बहादुरगढ को गया मुंगलखां के बदले जाने से कामगारखां आखताबेगी हुआ ।

कवामुद्दीन का बेटा शुजाअतखां मीरआतिश और मुतलबखां अहदियों का बखशी बनायागया ।

सन् १०९५ हि० संवत् १७४० सन् १६८३ ई०

९ मोहर्रम (पौषसुदि १०।१८ दिसम्बर) को रुहुल्लाहखां पतेरानदी और बहरामंदखां असैनी की तर्फ आधी रात को गनीम पर बिदा हुवे ।

---

१ कलकत्ते की प्रति में तपराद । २ कलकत्ते की प्रति में आस्ती । पेज २४० ।

मामूरखांने जिसे दिलेरखां का खिताब मिला था गनीम पर धावा किया और फतह पाई उसको खिलअत, फरमान नौग और झंडा मिला।

१९ मोहर्रम (माघवदि ६।२४ दिसम्बर) को शाहबुद्दीनखां ने गाजी उद्दीनखां बहादुर का खिताब और सिपहसालारी का दरजा पाया क्योंकि उसने कई दफे धावा करकर के गनीम को हराया था उसका भाई मोहम्मद आरफ मजाहदखां और मोहम्मदसादिक नादिरखां हुआ।

दलीपबुंदेला राजा उदोतसिंह और दूसरे तइनातियों को खिलअत, हाथी, घोड़े और इजाफे मिले।

आजमशाहके बेटा पैदाहोने की १ हजार मोहरें उस का नोकर मीर हाशम हजूर में लाया जीजाह नाम हुआ मोतियों की टोपी जडाऊ चशमक और मोती लडी उसके लिये इनायत हुई मीर को भी खिलअत और ५०० रुपया मिला।

गनीम के पट्टन की तर्फ आने की खबर लगी बहरेमंदखां तरकश और कमान पाकर आधीरात को उनके सामने गया।

सन् १०९५ हि० संवत् १७५० सन् १६८४ ई०

१९ सफर (फाल्गुनवदि ६।२७ जनवरी) को खानजहां बहादुर की अरजी आई कि गनीम किशना नदी पर बुरी मनसा से जमाहुआ था उसने ३० कोस से धावा करके उसको लडाई में हराया और माल असबाब लूटलिया शाबाशी का फरमान भेजागया मुजफ्फरखां हिम्मतखां और नुसरतखां उसके बेटों को सिपहदारखां का मोहम्मदसैफी अनुसरतखां गोहम्मदवका को मुजफ्फरखां और आजमखां कोके के बेटे जमालुद्दीनखां को सफदरखां का खिताब मिला।

जुमदतुल्मुल्क असदखां अजमेर से हजूर में पहुंचा २९ (फाल्गुनवदि १२।२ फरवरी) को अशरफखां गुसलखाने के दरवाजे तक पेशवाईकरके मुलाजिमत में लाया।

---

१ कलकत्ते की प्रति में झंडा दुअस्पे का। २ कलकत्ते की प्रति में दलपत। ३ कलकत्ते की प्रति में यों लिखा है कि इसके बेटे मुजफ्फरखां को हिम्मतखां का और नुसरत खां को सिपेहरदारखां का खिताब मिला। ४ कलकत्ते की प्रति में मोहम्मदसमीअ।

२७ सफर (फाल्गुनवदि १४।४ फरवरी) को मोहम्मद आजम और बेदारबखत मुलाजिमत में आये और ७ रबीउलअव्वल (फाल्गुनसुदि ९।१४ फरवरी) को खिलअत और जवाहर पाकर बहादुरगढ को गये।

सलावतखां ने नौखेले[1] ऊमरे से आकर खिलअत पाया।

आजमशाह की सरकार के दीवान मलूकचंद को खिलअत और हुक्म दियागया कि ६० हाथी जो शाहजादे को इनायत हुवे हैं अपने साथ लेजावे।

सूफीबहादुर नोकरी की उम्मेद में बुखारा[2] से हाजिर आया खिलअत सोने के बंद का खंजर तलवार और १ हजार रुपया इनायत हुआ।

सन् १०९५ हि० संवत् १७४१ सन् १६८४ ई०

४ रबीउल आखिर (चैतसुदि ५ । ११ मार्च) को रणदूला मरगया।

९ (चैतसुदि १० । १६ मार्च को शकरुल्लाह नजमसानी ने असकरखां का, खानदोरा के बेटे सैयद एहसन ने एहसनखां का, मुरशदकुलीखां के बेटे मोहम्मदमुराद ने मोहम्मदखां का खिताब पाया।

२४ (बैशाखवदी १२ । ३१ मार्च) को गाजीउद्दीनखां बहादुर पूनां[3] कडा और तमूना की तर्फ रुखसत हुआ कमान तरकश १० हजार रुपये और २०० मन सोना बखशिशमें मिला उसके बेटे कमरुद्दीनखां ने जो सादुल्लाहखां का नवासा था ४ सदी १०० सवार का नया मनसब पाया।

२९ (बैशाखसुदि १।५ अप्रेल) को मोहम्मदनईम दिल्लीका दीवान हुआ।

११ जमादिउलअव्वल[4] (बैशाखसुदि १३।१७ अप्रेल) को बखशी उलमुल्क रुहुल्लाहखां १ अच्छी फोज से शाह आलमबहादुर की रकाब में तइनात हुआ उसके हाथ २० हजार अशरफी १०० घोडे ५०० ऊंट २५ खच्चर शाहजादे के लिये और खिलअत जवाहर हाथी तइनाती अमीरों के वास्ते भेजेगये।

---

१ कलकत्ते की प्रति में नौलखेअवध। २ कलकत्ते की प्रति में काशगर। ३ कलकत्ते की प्रति में पूनागढ और नमूना। ४ कलकत्ते की प्रति में १५ जमादिउलअव्वल (जेटबदि २ । २१ अप्रेल)

इसी दिन आजमशाह बेदारबख्त और वालाजाह भी खिलअत जवाहर घोड़े और हाथी पाकर रुखसत हुए ।

सफीखां सूबे औरंगाबाद का नाजिमहुआ ।

बहरेमंदखां ने गुलशनाबादसे आकर मुलाजिमत की, हाथी पाया ।

शुजाअतखां सफशिकनखां का खिताब खिलअत खासा जीगा अलम और तौग पाकर श्रीरंगपट्टन को विदाहुआ ।

संभा के ११२ नोकर जो कोटवाली चबूतरे में कैद थे कतल कियेगये ।

दिलेरखां का बेटा मोहम्मदयारखां मामूरखां का खिताब पाकर बाप के पासगया.

६ जमादिउलआखिर (जेठसुदि ८।१२ मई) को सुलतानवालाजाह का ८० रुपये रोजीना होगया ।

१२ (जेठसुदि १९ । १८ मई) को शाहजादे कामबखश के महल में बेटा पैदाहोने की खबर ख्वाजायाकूब लाया उसको और खासनवीस हाजी इसमाईल को खिलअत मिले ।

बादशाहजादे को खिलअत बालाबंदसमेत और जडाऊ तुर्रा इनायतहुआ लडके का नाम उमेदबखश रक्खागया ।

शुजाअत हैदराबादी ने बादशाही ड्योढी पर आकर माथा घिसा ९ हजारी ९ हजार सवार का मनसब और शुजाअतखां का खिताब पाया एतकादखां बहुतसी फौज लेकर जफराबाद बिदुर की तर्फ रुखसत हुआ ।

दुआबेजालंधर का फौजदार मीरकखां गुजरात का फौजदार हुआ ।

१८[१] (अषाढबदि ६।२४ मई) को शाहआलम बहादुर ने कोकन से आकर सलामकिया खिलअत और ३ लाख २९ हजार रुपये का जवाहर इनायत हुआ उसके शाहजादोंको भी खिलअत और जवाहर मिले ।

रुहुल्लाहखां और मनव्वरखां ने मुलाजिमतकरके भारी २ खिलअत पाये ।

मुगलखां ने जो अनिरुद्धसिंह की मदद पर दुरजनसिंह के निकालने को

---

१ कलकत्ते की प्रति में २३ (असाढबदि १ । २९ मई)

गया था फतहमंदी के साथ आकर मुलाजिमत की और शाबाशी का खिल-अत पाया ।

हाजीमहताब हैदराबादी ने ड्योढी पर आकर माथा घिसा ।

२३ रजब (प्र० श्रावणबदि १०।२७ जून) को कुतुबुल्मुल्क के ड्योढीदार मोहम्मदजाफिर ने आकर मुलाजिमत की यह हाफिज मोहम्मद-अमीनखां के उस्ताद का बेटा था जब वह आगरे से काबुल को गया तो यह बख्तावरखां को सोंपागया था उसने नोकरी के वास्ते हजूर में इसकी नजर कराई शाहजादे मोहम्मद अक्बर की सरकार में नोकर होगया लाइक आदमी था बहुत अरसे तक उस सरकार में रहकर फीलखाने का दरोगा हुआ अकबर के बागी होने पर हैदराबाद को चलागया और वहां शेखी मार २ कर कि मैं ऐसा हूं फलाने अमीर का भाई और फलाने का रिश्तेदार हूं अबुलहसन और उसके पेशकारोंमें पैरगया और एनुलमुल्क का खिताब लेबैठा जब अबुलहसन ने चाहा कि किसी को वकील करके दरगाह में भेजें तो इसकी शेखियां उसके गले पडगईं जिससे इसीको आना पडा मुलाजिमत के वक्त बखतावरखां ने अर्जकी कि यह वही है फरमाया कि अबुलहसन की हरीफी को देखना चाहिये कि वकील भी भेजा तो अकबर के नोकर को वह मुझे जानता था इसलिये मुलाकात का पैगाम भेजा मैंने उसकी शान शोकत मालदारी खर्चसे चारोंतर्फ उसकी खरीदारी देखकर कहला भेजा कि क्योंआये हो बोला कि प्यारों की मुलाकात का शौक लाया है मैंने कहा कि बहुत बुरा किया २ दिन पीछेही कोतवाल उसके घर पर जाकर उसे चबूतरे में लेआया मालअसबाब और बहुतसा नकद रुपया जबत होगया-१ मुद्दत पीछे ३ सदी मनसब मिला और बंगाले में तइनाती पर गया ।

२७ रजब (प्र० श्रावणवदि १४ । १ जोलाई) को जेबुन्निसा बेगम औरंगाबाद से हजूर में पहुंची शाहजादा कामबख्श[1] और सियादतखां पेशवाई को जाकर **हरमसरा**[2] में लाये ।

---

१ कलकत्ते की प्रति में कामगारखां और सियादतखां । २ जनानखाना, रावला, अन्तःपुर ।

२८ शाबान (द्वि०सावनबदि ९ । २९ जोलाई) को आजमशाह के महल में सुलतानवालाजाह की मां से लड़का पैदाहोने की ९ मी मोहरें बाद-शाहको नजरहुई दरबारी आदाब बजा लाये सुलतान वालाशान नाम रखागया ।

२९ (श्रावणसुदि २ । २ अगस्त) को अर्ज हुई कि मिरजा मोहम्मद और बिहारीदास जोहरीको जो कुतुबुलमुल्क के पास गये थे उसने १० हजार रुपया हाथी और उरबसी मिरजामोहम्मद को ८ हजार रुपया और हाथी बिहारीदास को दिया था मगर यह डयोढीदार के पास छोड़आये हैं हुक्महुआ कि लौटादेवें ।

संभा की २ औरतों २ लडकियां ३ लौंडियों की रसीद बहादुरगढ के किलेदार अबदुलरहमान की मोहर से हजूर में पहुंची ।

खानजहांबहादुर जफरजंग कोकल्ताश दिलेरखां गाजीउद्दीनखां बहा-दुर और दूसरे बड़े अमीरों और बहादुरों ने अब तक जो किले और मुल्क गनीम से छीनकर बादशाही अमलदारी के शामिल किये थे उनकी तफसील लिखने को १ दफतर चाहिये इसलिये इतनाही लिखना बहुत समझागया ।

२८ वां आलमगीरी सन् ।

१ रमजान (श्रावणसुदि ३।३ अगस्त) को २८ वां जलूसीवर्ष लगा बाद-शाह महीने भरतक मसजिदके कोने में अकेले बैठे इबादत करते रहे ।

२ (श्रावणसुदि ४।४ अगस्त) को खानजमां के मरजाने से मुगलखां मालवे का सूबेदार हुआ खिलअत और जुलफिकारखां नाम हाथी और साढे ३ हजारी ३ हजार का मनसब असल और इजाफेसे इनायतहुआ उसकी जगह ६ (श्रावणसुदि ७।७ अगस्त) को सियादतखां मोअज्जमखां का खिताब पाकर **कौसबेगी** हो गया ।

इलहाबाद का नाजिम सैफखां मरगया था इसलिये महोतशमखां आगरे से उसकी जगह गया और आगरे का सूबेदार औरंगाबाद का नाजिम सफीखां हुआ और उसकी जगह शफीअखां औरंगाबाद का सूबेदार हो गया ।

अहमदाबादके सूबेदार मुखतारखां के मरने से दाराबखां के बेटे मोहम्मद सकी मुत्तलबखां और दूसरे उसके भाई बंदों को मात्मीके खिलअत मिले मुखतारखां बनी मुखतार नाम के घरानेमें से था जिस घराने में बहुत अच्छे लोग होते हैं तो भी मुखतारखां उन सबसे सब बातों में अच्छा था।

१८ रमजान (भाद्रपदबदि ९। २० अगस्त) बुधवार को तीसरे पहर पीछे शाहजादे मोअज्जुद्दीन का निकाह मुकर्रमखां सफवी के बेटे मिरजारुस्तम की बेटी सैयदुलनिसा बेगम से काजी अबूसईद ने हजरत और शाहआलम-बहादुर की मोजूदगी में पढा १ हजार रुपया और खिलअत शाहआलम की तर्फ से काजी को मिला।

बादशाह से अर्जहुई कि किफायतखां जाफिर सब २२ रमजान (भाद्रपद सुदि ८। २४ अगस्त) को दिल्ली में और इलाहाबाद का सूबेदार सैफखां २५ (भादोंसुदि १२। २७ अगस्त) को मरगया।

चांदरात (भाद्रपदसुदि १ ३१ अगस्त) को ईद की तोपें चलीं

१ शव्वाल (भाद्रपदसुदि २। १ सितम्बर) को बादशाह घोडे पर सवार होकर ईदगाह में निमाज पढनेको गये।

४ (भाद्रपदसुदि ६। ४ सितम्बर) को कारतलबखां मोहम्मदबेग के बदले जाने से सलाबतखां बंदरसूरत का मुत्सद्दी हुआ और कारतलबखां अहमदाबाद की फौजदारी पर गया सलाबतखां की जगह हिम्मतखां के बेटे खानजादखां ने अरदली के बंदों की दरोगाई पाई।

खानआजम कोका का बेटा सालहखां बरेली का दीवान और फौजदार हुआ उसका बेटा नूरुद्दीन उसके साथ गया उसके जाने से कामयाब तीरंदाजों का बखशी हुआ

यलंगतोशखां बहादुर जो सालाना पानेलगा था २ शव्वाल (भाद्रपदसुदि ३। २ सितम्बर) को फिर मनसबदार होगया।

जाफरखां का भाई और बहरेमंदखां का बाप बहराम कबर में गया जुम्दतुलमुल्क असदखां उसका भानजा था इसलिये बादशाह ने चिकन की नीमा-

अस्तीन जो पहिनेहुए थे उतारकर उसको इनायत की और बहरमंदखां को बखशीउलमुल्क अशरफखां मानमसे उठाकर हजूर में लाया।

२० शव्वाल (आश्विनवदि ६ । २० सितम्बर) को शाहजादे मोअज्जुद्दीन की शादी की मजलिस हुई खिलअत बालाबंदसमेत, डेढलाख का जवाहर, सोने की जीन का घोडा, चांदी के साज का हाथी, शाहजादे को और ६७ हजार का जवाहर सैयदुलनिसाबेगम को इनायत हुआ।

शाम को शाहआलमबहादुर और दूसरे शाहजादे मोअज्जुद्दीन को दूल्हा बनाकर चरागों की रोशनी में जो रस्ते के दोनों तर्फ होरही थी अपने घर से बादशाही दौलतखाने में लाये, हजरत ने अपने हाथ से २ मोतियों का सिहरा उसके शिर पर बांधा यह शादी जेबुलनिसाबेगम के इन्तजाम से हुई, आधी रात को अमल में दुलहन का डोला दुल्हा के घर पहुंचा।

२१ (आश्विनवदि ७ । २१ सितम्बर) को गाजीउद्दीनखां बहादुर खिलअत खासा और ९ घोडों की इनायत पाकर राहेरी का किला फतह करने को रुखसत हुआ उसके बेटे कमरुद्दीनखां को तलवार और दूसरे तइनातियों को खिलअत इनायत हुवे।

९ जीकाद (आश्विनसुदि ११।९ अकतूबर) को सौ तुरकी और पहाडी घोडे मदद के तौर पर आजमशाह के पास भेजे गये।

फखरुद्दीन को सोयेका थानेदार अबदुलहादीखां को चाकने का और नामदारखां के बेटे मरहमतखां को गरवे का थानेदार बनाकर बादशाहने भेजा।

२६ (कार्तिकवदि १३।२६ अकतूबर) को बखशीउलमुल्क रुहुल्लाहखां खिलअत जमधर और घोडा पाकर फसादियोंको सजादेने के लिये गया, कासमखां, मोहम्मदबदीअबलखी इलहामुल्लाहखां शाहआलमका नोकर अबदुलरहमान १ हजार सराह से हयातअबदाली जो कंधार से हजूर में पहुंचा था

---

१ कलकत्ते की प्रति में २ (भादों सुद १०।८ सितम्बर) । २ कलकत्ते की प्रति में जीनतुल निसाबेगम । ३ कलकत्ते की प्रति में सोया । ४ कलकत्ते की प्रति में गरहानमूना ।

और दूसरे लोग जो उसके साथ तइनात हुवे थे उन सब को इजाफे खिल-अत हाथी घोडे तलवार और जीगे इनाम में मिले, बदाजी अंगूजी मल्हारराव और सुजानचंद को भी जिन्हें गाजीउद्दीनखां बहादुर ने भेजा था खिलअत इनायत हुवे।

शाहजादे दौलतअफजा का शिर लालके शिरपेच और मोतियों के लटकन से सजाया गया।

किफायतखां कायमबेग[1] दक्खन के सूबों की दीवानी पर भेजागया, जवाह-रखाने और खिलअतखाने के मुशरफ इनायततुल्लाह को वकायेनिगारी और रोजीनापानेवालों के दफतर की दरोगाई इनायत हुई।

४ जिलहज्ज (कार्तिकसुदि ६। २ नवम्बर) को शाहजादे मोहम्मद कामबखश का बेटा उमेदबखश मरगया बादशाह ने जाकर उसको तसल्ली दी।

बादशाह से अर्ज हुई कि चांदा के जमीदार रामसिंह को बादशाही फौज ने ऐसा दबाया कि वह ४ जिलहज (कार्तिक सुदि ६ । २ नवम्बर) को बालबच्चे छोडकर २०० सवारों से पहाड की तर्फ भागगया, एतकादखां हम-जाखां और किशनसिंह चांदा में दाखिल हुवे उसने अपनी हवेली में आना चाहा किशनसिंह का नोकर मुरादबेग जो दरवाजे का रखवाला था रोकने लगा रामसिंह ने उसको जमधर का कारी जखम लगाया दूसरे आदमी टूटपडे उसको भी मारलिया मुरादबेग दूसरे दिन मरगया।

सन् १०९६ हि० संवत् १७४१ सन् १६८४ ई०

६ मोहर्रम (मार्गशीर्षसुदि[2] ८ । ४ दिसम्बर) को बादशाहने खिलअत फरमान और हाथी किसनसिंह को भेजा गढे के जमीदार हरीसिंह को भी खिलअत भेजागया।

कुलीचखां के भानजे मालतून[3]बेग ने बुखारा से पहुंचकर तलवार, सोने के साज का खंजर, दो हजार रुपया और ६ सदी २०० सवार का मनसब पाया।

---

१ कलकत्ते की प्रति में हातमबेग। २ कलकत्ते की प्रति में २१ (मगसरबद ७। १९ नवम्बर) ३ कलकत्ते की प्रति में बालतून।

मुखलिसखां का जमाई अवदुल्कादिर जिसने कंदाने का किला गनीम से छीनकर अवदुलकरीम के हवाले करदिया था १७ मोहर्रम (पौपवदि ४।१९ दिसम्बर) को हजूर में पहुंचा पांच सदी १०० सवार से ६ सदी १५० सवार का मनसबदार होगया ।

अहमतसामखां सरदारवेगने सैफुल्लाहखां के बदलेजाने से तिवाड़े की दरोगाई पाई ।

सैयद मुजफ्फर हैदरावादी की बेटी से निकाह करने का खिलअत कामगारखां को मिला ।

एतकादखां चांदा से हजूर में पहुंचकर यलंगतोशखां के बदले जाने से फौरवेगी हुआ खिलअत हाथी और पांच सदी[1] ५० सवार का इजाफा मिला जिससे उसका मनसब २ हजारी ४०० सवार का होगया ।

अवदुलकरीम के बदलेजाने से हयातखां सातों चौकी का **अमीन** हुआ ।

खिदमतगुजारखां मरगया उसके बेटे मोहम्मदकुली ने मातमी का खिलअत पहिना, उसके मरने से चेलों और उतारे की मंजिलों की दरोगाई फतहमोहम्मददेवअफगानाको इनायत हुई ।

काजी हैदरमुनशी को खां का खिताव मिला ।

मुनशी और सदर शेखमखदूम को फाजिलखां का खिताव इनायतहुआ ।

हाजी इसमाईल खुशनवीस ने जो अपने मोतियों जैसे हरफों से वादशाही फरमान लिखाकरता था रोशनरकम का खिताव पाया ।

१ सफर (पौषसुदि ३ । २८ दिसम्बर) को काजी शेखुल इसलाम को मक्के जाने की रुखसत मिली परम, नरम, दुशाला, और आदावजियारत का रिसाला (ग्रंथ) इनायत हुआ और १ संदूकचा उसको देकर उसको कहागया कि मदीने में पहुंचकर इसको खोले और अंदर से अरजी निकालकर पैगम्वरके कठेरे में डालदे ।

रादअंदाजखां के बेटे महरावखां[1] को हुक्म हुआ कि एक तोप १ मन गोले

---

१ कलकत्ते की प्रति में डेढ़ सौ सवार । १ कलकत्ते की प्रति में सुहरावखां ।

की और २०।२० सेर के गोलों की ३ तोपें बीजापुर में बखशी उलमुल्क-रुहुल्लाहखां के पास पहुंचाआवे ।

एतकादखां वाजेवर और संगमनेर की तर्फ गनीम को सजा देने के लिये रुखसत हुआ ।

खालसे के दफतर का पेशदस्त रशीदखां जहांजत री का झगडा निवेड ने के लिये इंदोर को गया ।

खानजमां के बेटे बाप के मरेपीछे बुरहानपुर से हजूरमें पहुंचे उनको मातमी के खिलअत मिले ।

आतिशखां बहुतसी फौज और बादशाहजादे कामबखश के ९०० सवारों से नोलखे की तर्फ रुखसत हुआ ।

अहतमामखां का बेटा हमीदुद्दीन अपने बापके बदलेजाने से खातमबंद-खाने का दरोगा हुआ ।

सन् १०९६ हि० संवत् १७४१ सन् १६८५ ई०

२६ सफर (माघवदि १३ । २२ जनवरी) को बादशाह से अर्जहुई कि गाजीउद्दीनखानबहादुर ने राहेरी का किला आगलगाकर लेलिया काफरों को मारा लूटा बंदी पकडे और मवेशी घेरी यह खुशखबरी सैयद औगलान लाया था उसको हाथी मिला और गाजीउद्दीनखां के चोबदार ने भी जो भेष बदलकर उसके पास से आया था खिलअत और २ सौ रुपया पाया था गाजीउद्दीनखां को फीरोजजंग का खिताब और नक्कारा इनायत हुआ और १९० से जियादा खिलअत उसके तइनातियों के वास्ते भेजेगये ।

४ रबीउलअव्वल (माघसुदि ६।३० जनवरी) को खानेजादखां खास-परस्तार (लोंडी) उदेपुरीमहल के लाने को औरंगाबाद गया ।

१० (माघसुदि ११ । ९ फरवरी) को हजूर और सूबों के सब बंदों को जडावल के खिलअत इनायत हुए ।

१९ रबीउलअव्वल (फाल्गुनवदि १।१० फरवरी) को खवासों का दरोगा बखतावरखां मरगया ३० वर्ष से बादशाह का मुसाहिब रहा था बहुत अकल-

---

१ कलकत्ते की प्रति में पाजनेर । २ कलकत्ते की प्रति में अनारेजी ।
३ कलकत्ते की प्रति में नवलकुंडा ।

मंद और हुशयार था बादशाह को बहुत रंज हुआ हुक्म से जब उसका जनाजा अदालत की तरफ आया तो आपने आगेहोकर नमाज पढाई और कई कदम उसके पीछे गये दरुद फातिहा खेरात और लाशको दिल्लीमें पहुंचाने से जहां उसने पहले ही अपनी कबर बना रक्खी थी उसकी रूहको खुश किया।

बख्तावरखां बहुत भला आदमी और दुनियां को फायदा पहुंचाने में एक ही था इलमवालों और शायरों की बडी कदर करता था इबारत लिखने और तवारीख जानने में बहुत नामी था उसकी बनाई हुई किताब (मिरआतुल आलम) मशहूर है—उसके मरने से यलंगतोशखां बहादुर खवासां का हकीम मोहसनखां जवाहर खाने का और मीरहिदायततुल्लाह सोने की चीजों का दरोगा हुआ।

इस किताब का लिखनेवाला मोहम्मदसाकी दीवान और मुनशी बखताव-रखां का था और उसके लिखेहुए पोशीदा हुक्मों के मसौदे बादशाह को दि-खाकर दुरुस्त कराया करता था इसलिये बादशाह ने उस को उसी दिन याद करके महरबानी से जुमेरात के दिन को वाकिआ निगारी (अखबार लिखने) पर मुकर्रर करदिया।

२ रबीउलअव्वल[1] (माघसुदि ४ । २८ जनवरी) को महलका नाजिरदर-बारखां मरगया बादशाहका पुराना बंदा था उसी तरह उसके जनाजे को मंगा-कर नमाज पढी और लाश दिल्ली को भेजी नाजिर का काम भी अरजियों और दवाईखाने के दरोगा शेखअबदुल्लाह शेखनिजाम के बेटे को सोंपा।

१८ रबीउलआखिर (चैतबदि ४ । १४ मार्च) को शुजाअतखां हैद-राबादी मरगया उसके बेटे मलिकमीरान ने खिलअत और मनसब पाया।

२० (चैतबदि ६ । १६ मार्च) को रूहुल्लाखां खासा खिलअत जडाऊ कलगी और चांदी का नक्कारा पाकर बीजापुर के जिले में बागियों पर बिदा हुआ उसके साथ ढाई लाख रुपये, हीरों में लगेहुवे परों का जीगा और

---

१ कलकत्ते की प्रति में २ रबीउलसानी (फागणसुदि ३ । २६ फरवरी) और यही सही भी है।

रों का सरपेच आजमशाह के लिये मोतियों का दुलडा नवाब जहांजेब बानूबेगम के जडाऊ मुत्तका शाहजादे बेदारबखत के सुमरनी वालाजाहके मोतियों की दुलडी जीजाह और जी शान के और [२] १० खिलअत सरफराजखां फतहजंगखां कानूजी और यशवंतराव वगेरा के वास्ते भेजेगये ।

२९ (चैतवदि १२ । २१ मार्च) को सईदखां बहादुर का पोता बफादारखां जबरदस्तखां का खिताब खिलअत जमधरजडाऊ साज की तलवार[३] जीगा तरकश कमान घोडा हाथी १० हजार रुपया पांचसदी १०० सवारों का इजाफा पाखर बलख की वकालत पर गया[४] ११ हजार रुपये का १ हाथी और दूसरे तुहफे उसके साथ बलख के खान सुबहानकुलीखांके वास्ते भेजेगये ।

शफकतुल्लाह को जिसका खिताब सजावारखां था कसूरों की माफी होकर दोयम मीरतुजुक का औहदा मिला ।

२७ रबीउलआखिर (चैतवदि १४ । २३ मार्च) को शाहजादा खुजस्ता-अखतर ने औरंगाबाद से आकर मुलाजिमत की खिलअत और जडाऊ बाजूबंद इनायतहुआ ।

ख्वाजा अबदुलरहीम ने बुरहानपुर से पहुँचकर खिलअत हाथी और ५ हजार रुपया पाया ।

जानमाजखांने के दरोगा मीरअबदुलकरीम को नक्काशखाने[६] की दरोगाई भी मिली और उस कारखाने की मुशरफी इस किताब के लिखने वाले (मोहम्मदसाकी) को इनायतहुई ।

सन् १०९६ हि० संवत् १७४२ सन् १६८५ ई०

१ जमादिउलअव्वल (चैतसुदि ३ । २७ मार्च) को खानफीरोज जंगने आकर मुलाजमतकी खिलअत खासाजडाऊखंजर ५ घोडे और ७ तोले अतर गुलाब का इनायतहुआ ।

---

१ कलकत्ते की प्रति में जीजाह और वालाशान । २ कलकत्ते की प्रति में ३२ । ३ कलकत्ते की प्रति में तलवार, ढाल और जडाऊ जीगा । ४ कलकत्ते की प्रति में १८ हजार का । ५ कलकत्ते की प्रति में बीजापुर की वकालत (और यही सही है) । ६ चित्रशाला ।

दरगाह में अर्जहुई कि २ जमादिउलअव्वल (चैतसुदि ३ । २८ मार्च) से बीजापुर के घेरने का काम शुरू होगया है । खानजहांबहादुर जफरजंग ने जुहरापुर की तर्फ से आधकोस और कासिमखाने पावकोस से मोरचे दौडादिये हैं ।

हरकारों की जवानी अर्ज हुई कि ८ जमीदिउलअव्वल (चैतसुदि ९ । ३ अप्रेल) को राठोडों ने सिवाने का किला लेलिया और फीरोजजंगखां मेवाती का वेटा पुरदिल बहुतसे आदमियों से काम आया तुंगभद्रानदी पर शिरजा-बीजापुरी मोहम्मद आजमशाह के लशकर पर वढा और १ सख्त लडाई के पीछे वहुतसे लोगों को कतल कराकर भागगया ।

१८ (वैसाखवदि ५ । १३ अप्रेल) को मोहम्मदअकवर के पास से १ चेला २ घोडे नजर के वास्ते लाया मगर दरवार में नहीं आने पाया वादशाह के हुक्म से जनानी डयोढी पर गया ।

२९ (वैसाखसुदि १ । २४ अप्रेल) को ख्वाजा याकूबसरबुलंदखां मरगया ।

अहमदनगर के किले और शहर का हाल.

अहमदनगर का किला जमीन पर बना है उसकी नीव मजबूती के वास्ते पाताल में चलीगई है जो यह कहें कि भोंचाल रोकनेके लिये १ खूंटी जमीन में ठोंकीगई है तो वेजा नहीं है किले में वडी २ इमारतें हैं और १

---

१ कलकत्ते की प्रति में २० (वैसाखवदि ७ । १५ अप्रेल) । २ जोधपुरकी ख्यातमें लिखा है कि राठोडोंने संवत् १७४२ में महाराजा रूपजीतसिंह को गुप्तस्थानसे बाहर निकाल कर बडा भारी लशकर लडनेको जमा किया जोधपुर के हाकिम इनायत रंगने घबराकर कहलाया कि सिवानेका किला तो बैठनेको और तमाम मुल्ककी चोथ खर्चके वास्ते लो दंगा फसाद मत करो । महाराज देशकाल देखकर इसीपर राजी होगये और सिवानेके किलेमें दाखिल होकर चोथका रुपया वादशाही औहदेदारों से लेने लगे । ३ कलकत्ते की प्रति में लिखा है कि किले के हर तर्फ मैदान है ।

हराभरा बाग जो तहखाने में लगायागया है बहुतही अनोखा है किले के गिर्द १ गहरी खाई है जिसमें हमेशा पानी भरारहता है २ नहरें बाहर से अंदर आती हैं।

शहर किले से पाव कोसपर बैस्ता है पहिले पानी जियादा होने से नहरों का पानी घरमें था और मालदारी में भी यह शहर एकही था दानिशमंदखां जो सौदागरी की हालत में १ मुद्दत तक यहां रहा था कहता था कि अहमद-नगर कशमीर से वढाहुआ था।

शहर के बाहर बाग फरहबखश और बहिश्तबाग अजब रमणीक स्थान है फरहबखश २ हजार गज लंबा चौडा २७८ बीगह में है उसमें १ हौज है जिसकी लंबाई चौडाई ५२८ गज की है जिसके १९ बीघे होते हैं पहाड के नीचे से उसमें ढकीहुई नहर लाये हैं हौज के बीच में १ अनूठी इमारत १६० दुहरे कमरोंकी है उस पर १ बहुत ऊंचा गुंबज है जिस पर तीरंदाज लोग इमतिहान के वास्ते तीर फेंकाकरते हैं।

बहिश्तबाग की लंबाई चौडाई ६१२ गजकी है जो १०० बीघे में होगा उसमें भी १ हौज ५२८ गज का है जिसकी जमीन भी वही १९ बीघे होती है यह अठपहलू है नहर का पानी आता है बीच में भी इमारत है पर अब निकम्मी होगई है हौजके किनारेकी इमारतें अच्छी और साफ, हम्माम अच्छे लोगों के उतरने लाइक हैं।

किले से ५ कोसपर १ जगह है जिसको मंजरसिया वा सीता की मंजिल कहतेहैं वहां पहाडमें वडी इमारतें बनीहैं और १ फव्वारा १०० गजसे जियादा ऊंचा आपही आप पानीके जोरसे हमेशा छूटता रहता है जो पहाड से आताहै।

---

१ कलकत्ते की प्रति में (उसका) कोट नहीं है। २ कलकत्ते की प्रति में जो सलाबतखां ने मुरतिजा निजाम उलमुल्क के बावले होजाने के पीछे उसके नाम से बनाये थे। ३ कलकत्ते की प्रति में मंजरसंबा या मंजिल सत्रा कहते हैं।

बादशाह इसके देखनेको गये थे टूटे फूटे मकानोंकी मरम्मत का हुक्म देआये।

अहमदनगर से शोलापुर जाना.

२ जमादिउलआखिर (वैसाखसुदि ४।२७ अप्रेल) को बादशाही पेशखेमा १ अच्छी घड़ीमें अहमदनगरसे निकालकर फरहबखश बागके पास लगाया गया।

५ (वैसाखसुदि ७ । ३० अप्रेल) को बादशाह की सवारी बाग फरह-बखशमें उतरी.

६ (वैसाखसुदि ८ । १ मई) को सैयद औगलान को सियादतखांका खिताब मिला यह खान फिरोजजंगका उस्ताद था उसके साथ हिंदुस्तानमें जो गरीबों को आराम मिलने की जगह-है आया था बादशाह की परवरिशसे अमीर होगया.

काजी अबूसईदने बीमारी से काम छोडदिया मोहम्मद शरीफ का बेटा ख्वाजाअबदुल्लाह जो जिद्रस से पहिले लशकर काजी था हजूरी काजी हुआ.

संभाके चचेरे भाई अरजूजी ने २ हजारी १ हजार का मनसब खिलअत और घोडा पाया।

इज्जतुल्लाहखां को अहमदनगर के किलेदार होने की इज्जत मिली।

७ (वैसाखसुदि ९।२ मई) को बहादुर फीरोजजंग अहमदनगर में रहने के लिये रुखसत हुआ कुरान की **हेकल** (गलेमें लटकानेकी) खिलअतखासा और २० हजार रुपये मिले और उसके साथियों को खिलअत और खंजर इनायत हुवे।

२९ (जेठसुदि १।२४) मई को कमरुद्दीनखां वनीमुखतार को मुखतारखां का और फीरोजजंग के बेटे कमरुद्दीनको खां का खिताब मिला।

१ रजब (जेठसुदि २।२५ मई) को बादशाह शोलापुर में दाखिल हुवे।

---

१ कलकत्ते की प्रति में इतना और लिखा है कि सलाबतखां का मकबरा भी जो पहाड के ऊपर बना है अनोखी इमारतों में से है इन तर्फो की हवा जियादा गर्म नहीं है रातों को रजाई ओढना पडता है।

एतकादखां खासा खिलअत खासा तरकश और कमान पाकर जफरावाद को रुखसत हुआ उसके साथवालों को भी खिलअत तलवार और घोडे मिले[1]।

७ रजव (जेठसुदि ८।३१ मई) को शाहआलम घोडे पर चढाहुआ दरवार में आता था १ आदमी तलवार निकालकर उसकी तर्फ दौडा मगर पकडागया और बादशाह के हुक्म से कोतवाल के हवाले हुआ।

शाहआलम बहादुर का अबुलहसनपर जाना.

हैदरावाद के नोकर मोहम्मदमासूम और मोहम्मदजाफिर के लिये जो वादशाही लशकरमें वकील के तौर पर थे यह हुक्म हुआ था कि अहतमामखां कोटवाल की मिसल में उतरें और हैदरावाद को जो कुछ लिखें या वहांसे उनके पास कुछ लिखा आवे तो पहिले कोटवालको दिखादें और जो कोई वात हजूरमें अर्ज करने के काविल समझें तो करते रहें।

जासूसों को भी खवर रखनेकी वडी ताकीद थी मगर हैदरावादी[2] के विगडने के दिन आगये थे इसलिये उसने अपने नौकरों को लिखा कि वे[3] वडेहैं अबतक तो हम उनका वडप्पन रखते थे मगर अव जो उन्होंने सिकंदर[4] को यतीम (वगैर वापका वालक) और कमजोर जानकर वीजापुर को घेरा और तंग कियाहै तो वाजिवहै कि वीजापुर की बहुत सी जमईयत के सिवाय १ तर्फसे तो राजा संभा भारी लशकर से उस विचारे की मदद को कमर वांधे और इधर से हम ४० हजार सवार खलीलुल्लाहखां की सरदारी में भेजें देखें वे किधर २ धावा और मुकाविला करेंगे तुम को जो कोटवाली चवूतरे के आगे उतारा है तो इससे तुम घवराना मत जल्दी बदला लिया जावेगा।

---

१ कलकत्ते की प्रति में इसके आगे यह लिखा है कि वाहरमेंदखां हैदरावादकी तर्फ गया। २ अर्थात् अबुलहसन कुतुलमुल्क। ३ वे कौन ? बादशाह। ४ बीजापुर का वादशाह सिकंदर आदिलशाह।

कोटवाल ने जब यह कागज बादशाह को दिखाया तो फरमाया कि हमने इस चीनीफरोशमदारी को सजा देना किसी दूसरे वक्त पर रखछोडा था अब जो मुरगी बांग देनेलगी तो देर करने की जगह नहीं रही।

४ यहांसे आगे ६ शाबान तक जो कुछ लिखागया है वह कलकत्ते की प्रति में २९ वें जिलूसी साल के शुरू होने से बेमौका लिखा है।

बीजापुर के लेने में देर और मुशकिल पडरही थी तो भी शाहआलमबहादुर को हुक्म हुआ कि जाकर उस कमबखत की जड उखाडदे और खान फीरोजजंग को जो ईंदी के थानेमें आजमशाह के लशकर की रसद पहुंचाने के लिये बैठा था हुक्म लिखागया कि बादशाहजादे के साथ रहकर पूरी कोशिश इस बंदगी के बजा लाने की करें।

६ शाबान (असाढसुदि ८।२९ जून) को **शाहजादा** हैदराबाद पर चढा खिलअत खासा जडाऊ खंजर मुत्तका और २३ घोडे इनायत हुवे शाहजादों सुलतानों और बडे २ अमीरों को जो उसके साथ तइनात हुवे थे इनाम खिलअत जवाहर घोडे हाथी और इजाफे मिले।

२३ (सावनवदि १०।१६ जोलाई) को रुहुल्लाहखां बीजापुर से आकर बहादुर फीरोजजंग की जगह अहमदनगर को गया खानजादखां के बदलेजाने से कामगारखां जिलोंका और उसकी जगह मुखतारखां तबेला का दरोगा हुआ २७ शाबान (सावनवदि ४।२० जोलाई) को उसे हुक्म मिला कि यशम के दस्ते का खंजर मोती लडी और फूलकटारे समेत आजमशाह के लिये और मोतियों की सुमरनी पहुंची और बरसाती फरगुल शाहजादा बेदार बखत के वास्ते लेजावे।

मालवे का **नाजिम** मुगलखां २२ (सावनवदि १०।१५ जोलाई) को और जौनपुर का फोजदार तरबियतखां २७ (सावनवदि १४।२० जोलाई को) मरगया।

मीर अबदुलकरीम १ कसूर में जानमाजखांने की दरोगाई से निकाला गया और मोहम्मदशरीफ खवास उसकी जगह पर भरती हुआ।

२९ वां आलमगीरीसन.

१ रमजान (सावनसुदि ३।२४ जोलाई) को २९ वां जलूसी वर्ष लगा बादशाह महीने भरतक मसजिद में नमाज पढते और इबादत करते रहे।

सिकदरखेने विलायत से दरगाह में पहुंचकर जमीन चूमी खिलअत जडाऊ खंजर और १० हजार रुपया पाया।

अल्लावरदीखां का बेटा अमानुल्लाह खां और दिलेरखांका बेटा फतहमामूरखां और फतह जंग मयाना तीनों बीजापुरके मोरचों में जखमी होकर मरे अमानुल्लाहखां की मात्मी का खिलअत हसनअलीखां वहादुर आलमगीरशाही को मिला.

आजमशाह की फौज के बारूतखाने में आग लगकर ९०० भीलिये और बंदूकची उडगये.

२३ (भादोंबदी ११।१९ अगस्त) को एरजखां सूबेदार बराड और सैयद शेरखां जो आजमशाह की फौज में तइनात थे मरगये।

बहादुर फीरोजजंग ने अहमदनगर से आकर मुलाजिमत की बादशाह ने शीरमाही के दस्ते का खंजर अपनी कमर से निकाल कर इनायत किया और उस ने जो नजर की वह अपने हाथ से उठा ली।

आजमशाह की सरकार का दीवान मीरखां बुरहानपुर की नायब सूबेदारी पर गया।

४ शव्वाल (भादोंसुदि ६ । २९ अगस्त) को सिकंदर बनेखां का खिताब और ३ हजारी हजार सवार का मनसब पाया।

एरजखां के मरजाने से हसनअलीखां बराड का सूबेदार और रजीउद्दीनखां नायब हुआ लुतफुल्लाहखां वाजे हुक्मों के पहुंचाने के लिये शाहआलम बहादुर के पास गया और सियादतखां उसकी जगह अर्ज मुकर्रर का दरोगा हुआ।

---

१ कलकत्ते की प्रति में इन तीनों के सिवाय दिलेरखांके बेटे कमालुद्दीनखां का भी नाम है पेज २६२।

२ कलकत्ते की प्रति में हुसेनअलीखां।

कुलीचखां का वेटा ख्वाजाहामिद खां का खिताब और हथनी पाकर आजम-शाह के लशकर का खजाना लेगया ॥

१३ जीकाद (आसोजसुदि १९ । २० अकतूवर) को कुलीचखां खिलअत बक्तर और हाथी पाकर जफरावाद की सूवेदारी पर रुखसत हुआ इकरामखां नासिरखां सैयद हसनखां और सैयद मुजफ्फर हैदरावादीके वेटे असालतखां और निजावतखां उसके साथ तइनात होकर गये ।

सन १०९६ हि०। संवत १७४२ । सन १६८५ ई०

आजमशाहके लशकरमें काल.

जव वादशाह के कानमें यह वात पहुंची, कि आजमशाह के लशकर में गेहूँ और चने न मिलने से वडा काल पडाहुआ है, हररोज मोरचोंमें तोप वंदूक चलती रहती है आसपास की फौजों में सखत लडाई होती है खाना और सोना जो जिंदगी के लिये जरूरी है विलकुल नहीं मिलता मौत का वाजार गर्म है, रसद कहीं से[1] नहीं आती ।

वादशाह ने शाहजादे को हुक्म लिखाया कि जव यह हाल है. तो फौजों को लेकर दरगाह में आजाओ शाहजादेने दरवार करके सव से पहिले हसन-अलीखां आलमगीरशांही से, कहा कि कोई काम वादशाही वंदों के मेल वगैर पूरा नहीं होता है,वादशाह का ऐसा हुक्म आया है, अव लडाई और सुलह के वारेमें तुम्हारी क्या सलाह है तुमने वहुतसी तकलीफें देखीं सही और सुनी हैं इस मामलेमें क्या सोचा है उसने जवाव दिया कि लशकर की वेहतरी और सव लोगों की भलाई के लिये उठ चलनाही अच्छा है जव वलख की लडाई में ऐसीही तकलीफों से ठहरने की ताकत नहीं रही थी, तो साहजादा मुरादवखश आलाहजरत के हुक्म वगैरही लडाई और घेरा छोडकर हजूर में चला आया था । यहां जो कुछ गुजर रहा है वह जाहिर है और हजरत तक पहुंचभी चुका और हुक्म आचुका है ।

---

१ नियामतखान आली ने अपने अखवारों में इस काल का हाल वडे मसखरेपन से लिखा है ये अखवार "विकाये नियामतखान आली" के नाम से छपगये हैं ।

शाहजादे ने फिर औरों से भी पूछा। सब ने वही कहा, जो हसन-अलीखां ने कहा था। तब शाहजादा बोला, कि तुम तो कहचुके, अब मेरी सुनो। "महम्मदआजम" २ बेटे और बेगम जबतक जिंदा हैं, इस मौत की जगह से नहीं उठेंगे। फिर हजरत आवेंगे और लाशोंको गाडेंगे तुम लोग चाहे रहो चाहे जाओ।

शाहजादे को जब इस तरह पक्का देखा तो सबने मिलकर कहा, कि आप की इस हिम्मत पर हजारजाने कुरबानहों। अब जो आपकी सलाह है वही हमारी भी है।

बादशाह ने भी यह सुनकर १६ जीकाद कातिक बदि ३।९ अकतूबर को बहुतसी फौज और रसद बहादुर फीरोजजंग के साथ भेजी और यह हुक्म दिया, कि इस मुहिम में जो मनसबदार एक सदी से ४ सदी तक तइनात हैं, उनके तीसरे और चौथे घोडों का दाग इस मुहिम में रहने तक माफ रक्खें, और हजूरी अहलकार घोडों को दाग से निकालकर सरकार में खरीदलें और शाहजादे के पास भेजदें, कि जिन २ के घोडे तलफ होगयेहों उनको इनाम में देदेवें।

फीरोजजंग को रुखसत होते वक्त इतनी इनायत और इज्जत मिली,—

१ खिलअत।
२ माही।
३ हाथीमाहीके वास्ते।
४ झंडे ४।
५ ऊंटनियां झंडे उठानेवाली ४।
६ कदमचूमने की इजाजत।
७ बादशाह का हाथ से पीठ ठोकना।

उसके साथ जानेवालोंको भी खिलअत हाथी घोडे और इजाफे इनायत हुए।

फीरोजजंग बहुतही जलदी शाहजादे के पास पहुंचा उसके पहुंचने से अनाज की महगी मिट गई। शाहजादेने इस ताजे लशकर को गनीम की

फौजपर तइनात करदिया, जो किले से बाहर लडने को आया करती थी। फीरोजजंग बीजापुर के बाहर रसूलपुर में ठहराहुआ था। बंदीनायक[1] के भेजेहुए ६ हजार जंगी प्यादे रसद की पोटों के साथ बीजापुर की मदद पर चोरी से रस्ता चलतेहुए रातको वहाँ आ निकले और यह समझकर कि बीजापुर की फौज पडी है आधी रात को उतरपडे हरकारों ने फौरन फीरोजजंग को यह खबर दी। वह उसी दम चढगया। दिन निकलने के पहले २ तलवार से कोई नहीं बचा। गनीम की बडी हारहुई।

बादशाह ने ६२ मनसबदारों को जो दुशमनों के सिर लाये थे २ हजार रुपये इनायतकिये और हजार मुहरों की ? मुहर खानफीरोजजंग के वास्ते भेजी।

२२ जीकाद (कार्तिकवदि ९। ११ अकतूबर) को ईंदी की थानेदारी भीमडा नदी तक एतकादखां को इनायत हुई। जाते वक्त खिलअत मिला। उसके साथियों में सैयदनूरुल्लाहबारहे[2] को सैफखां का खिताब मिला और दूसरे लोग खिलअत घोडे और हाथी पाकर रुखसत हुए।

मरहमतखां हैदराबाद और जफराबाद के बीच में मुदगल की थानेदारी पर भेजागया। उसके साथियों को भी खिलअत घोडे हाथी और नकद रुपये मिले।

भारसिंह गोड कमनसीबी और मौत आजाने से उज्जैन के इलाके में फसाद करनेलगा था। शाहआलीजाह (माहम्मदआजम) के नायब और नौकर तिलोकचंद[3] ने उस पर चढाई की। वह बहुतसी जमइयतके से लडने को आया और १ सख्त लडाई लडकर तीर लगने से मारागया। जब इस मामले की अरजी बादशाह की नजर से गुजरी दरबारी मुबारकबाद बजालाये। फजायलखां जिसने पहिले खुफियानवीस के लिखने से इस मुकदमे की अर्ज की थी, इनायतुल्लाह वकील जिसने तिलोकचंद की अरजी गुजरानी थी और शाहजादे का नौकर अबदुलहकीम जो उसका सिर हजूर में

---

१ कलकत्ते की प्रति में-पेंगनायक। २ कलकत्ते की प्रति में-नूरुलबहर। ३ कलकत्ते की प्रति में-मलूकचंद।

लाया था, इन तीनों को खिलअत मिले सिर को बादशाहजादे के पास लेजाने का हुक्म हुआ । तिलोकचंद को रायराया का खिताब खिलअत और २ सदी इजाफा इनायतहुआ, जिससे वह ७ सदी होगया ।

शाहआलमका हैदराबाद फतह करना.

सलेख जीकाद (कार्तिकसुदि २ । १९ अकतूबर शाहआलमबहादुर और खानजहां की अरजियां शाहजादे का नौकर मीरहाशम हजूर में लाया. जिनमें लिखा था कि हैदराबाद फतह होगया. अबुलहसन गोलकुंडे में घिरगया, खलीनुल्लाहखां का सरलैंशकर इबराहीम महम्मदतकी दाउद २ और अबुल-हसन का बहनोई शरीफुलमुल्क और दूसरे लोग शाहजादे की खिदमत में हाजिर आगये जिन के वास्ते शाहजादे ने मनसब तजवीज होने की अर्ज की थी और अबुलहसन की अरजी भी शाहजादे के नौकर मीरहाशम के हाथ आजजी और लाचारी की पहुंची । दरबारियों ने इस फतह की मुबारक बाद दी । खुशी की नौबत झडने लगी । अबुलहसनको खिलअत भेजागया । शाहजादे का मन-सब २ हजारी बढकर ४० हजारी ३० हजार सवार का होगया । जान-माजखाने के उतरेहुए दरोगा मीर अबदुलकरीम को हुक्म हुआ कि बादशाह-जादों, सुलतानों, खानजहां इबराहीम सरलशकर और दूसरे तइनाती अमी-रोंके लिये खिलअत और जवाहरात लेजावे ।

ड्योढी का मुशरफ मोहम्मद शफीअ किरावलों का मुशरफ अल-हयार शाहजादे का नौकर मीरहाशम मनव्वरखां का बेटा सैयद अबूमहम्मद हीरा सिलावट का बेटा कल्यान जो हुक्मसे अपने २ काम के वास्ते मीरके साथ जाते थे जब हैदराबाद से ४ कोस महकाल में पहुंचे तो शेख निजामि हैद-राबादी जियादा जमइयत के साथ एक तरफ से उन पर चढआया । उनके

१ रुक्के आत आलमगीरी में भी १ रुक्का इसी बखशिश के मजमून का आजमशाह के नाम है । २ चांदरात । ३ सेनापति । ४ कलकत्ते की प्रति में—मंगकाल ।

पास जमइयत न थी तो भी इन्होंने मर्दों की तरह से हाथ पांव मारे मगर क्या करसकते थे। मीर अबदुलकरीम के सिवाय, जो जखमी होकर गिरा और पकड़ा गया, सब मारेगये। सैयदमुजफर के बेटे निजबतखां और असालतखां जिन्हें कुलीचखाने जफराबाद से इनके साथ भेजा था दुशमनसे अगली जान-पहिचान होनेपर बगैर लडे भिडेही भागकर शेख निजाम से जा मिले। बहुतसे आदमी जो **काफिले** के तौर से साथ होगये थे नाहक मारेगये। जवाहर और खिलअत जो भेजे गए थे और दूसरे भी **मालअसबाब** सौदागरों और मुसाफिरों को लूटगये।

४ दिन पीछे मीरअबदुलकरीम को अबुलहसनके आदमी गोलकुंडेसे हैदराबाद की सरहदमें बादशाहजादे की छावनीके पास छोडगये। मोहम्मद-मुरादखां **हाजिब** खबर पाकर अपने घर उठालेगया। कई दिन में उसके जखम भरगये तब बादशाहजादे की खिदमत में गया और जो जबानी बातें बादशाह ने कहलाई थीं वह उससे कहीं और रुखसत होकर खानजहां बहादुर के साथ जो हजूर में बुलाया था दरगाह में पहुंचा।

१६ जिलहैज्ज (मगसरसुदि ३।४ नवम्बर) को शाहजादे की तजवीज से ६ हजारी मनसब और महाबतखां का खिताब तो इबराहीम सरलशकर को मिला, ३ हजारी ३०० सवार का शरीफुलमुल्क को दो हजारी तीन्सौ सवार का मोहमादतकी को और इतनाही मनसब और एतबारखां का खिताब दाऊद को, इनायत हुआ।

१९ जिलहज्ज (मगसर वदी २। ३ नवम्बर) सजावरखां मरगया। उसके बेटे रहमतुल्लाह ने मातमीका खिलअत पाया।

फीरोजजंग की अरजी बीजापुर का **दमदमा** फतह होजाने के बारे में बादशाहकी नजर से गुजरी। पन्ने की अंगूठी उसके पास भेजदेने के लिये सियादतखां को दीगई।

---

१ कलकत्ते की प्रति में ११ जिलहिज्ज (कातिकसुद १४ । ३० अकतूबर) और (यही सही है)

सन १०९७ हि० । संवत् १७४२ । सन् १६८५ ।

२२ मोहर्रम (पौषसुदि ८ । ९ दिसम्बर) को मा की मात्मी का खिलअत, जो दिल्ली में मरी थी, जुब्द तुलमुल्क असदखां को इनायत हुआ.

रहीमबे ने तूरान से और सफशिकनखां के जमाई हाजी मोहम्मदरफीअ ने ईरान से पहुंचकर खिलअत पाये ।

हाजी मोहम्मद कासम का बेटा मिरजा मोहम्मद, जो कुरान लिखने के लिये सूंगीपाटन में गया था, लिखकर हजूर में लाया । १ हजार रुपया इनाम का मिला ।

बहरेमंदखां पट्टन की तर्फ रुखसत हुआ । सिकंदरखां और दूसरे आदमी उसके साथ गये ।

अर्जमुकर्रर के दरोगा सियादतखां और फाजिलखां सदर को संगयशम की दावातें इनायत हुई ।

मुखतारखां तरकश और कमान पाकर पीलसंगी के थाने पर रुखसत हुआ

७ सफर (पौषसुदि ९ । २४ दिसम्बर) को खानजहां ने हैदराबाद से आकर चौखट चूमी और खिलअत पाया वह सुजानजी और दूसरे ९ दखनियों को लाया था जिनको खिलअत मिले ।

१४ (माघवदि १ । ३१ दिसम्बर) को रशीदखां बाजे परगनों का बंदोबस्त करने के लिये हिंदुस्तान को रुखसत हुआ ।

सन् १०९७ । हि० संवत् १७४२ । सन् १६८६ ई०

बखतावरखां की हवेली जो दिल्ली में थी सियादतखां को इनायत हुई ।

काबुल के सूबेदार अमीरखां को खासा खिलअत और हजारी जात के इजाफे का फरमान भेजागया ।

हातम जो पहिले राना का नौकर था टोडे भीम की फौजदारी पर मुकर्रर हुआ ।

ब्रजभूखन कब्रामुद्दीनखांनी जिसने मुसलमान होकर **दीनदार** नाम पाया

था, इखलास के शके बदले जाने से जानमाजखाने का मुशरफ, और इखलास केशर रोशन रकम के बदले जाने से अरजियों का मुशरफ हुआ।

कमरुद्दीनखां जो हजूर में आया था हाथी पाकर अपने बाप के पास गया उसके हाथ उसके बाप के लिये भी खिलअत तलवार समेत भेजागया।

मक्के के शरीफ के एलची अहमदआका ने हजूर में आकर खिलअत और दो हजार रुपया पाया।

१६ रबीउलअव्वल (फागुनवदि २।३१ जनवरी) को महावतखां और शरीफुलमुल्क दरगाहमें हाजिर हुए। महावतखां को खासा, खिलअत, सोने की साज की तलवार ४१ घोडे हाथी, ९० हजार रुपये, ९ तोला अतर और शरीफुलमुल्क को खिलअत, बिल्लोर के दस्ते का खंजर, १० हजार रुपये और ७ तोला अतर इनायत हुआ। उसके बेटे हिदायतुल्लाह और इनायतुल्लाह को भी खिलअत मिले।

अबदुलकादिर दखनी को २ हजारी १ हजार सवार का मनसब और हाथी इनायत हुआ।

सेवा के जमाई अचलाजी ने ५ हजारी २ हजार सवार का मनसब और मुलाजिमत के दिन नक्कारा झंडा जडाऊ पहुंची और हाथी पाया।

तोपखाने का दरोगा सफशिकनखां जो बीजापुर से आयाथा खंजर हाथी पाकर उसी वक्त लौटा गया।

यलंगतोशखां बहादुर की नालायकी से मनसब और ओहदा मौकूफ होगया। उसकी जगह वजीरखां शाहजहानी का बेटा सलाहखां अनवरखां का खिताब पाकर खवासों का दारोगा हुआ और बादशाह के पास रहनेलगा।

सलाहखां की बदली होजाने से सुहराबखां मीरतुजुक हुआ।

सन् १०९७ हि० । संवत् १७४३ सन् १६८६ ई० ।

२० रबीउलआखिर (चैतवदि ७।६ मार्च) को खानजहांबहादुर खास लौंडी औरंगाबादी महल के लाने को बुरहानपुर गया। बादशाह ने जडाऊ

खंजर फूल कटारा और मोती लडी समेत उसको अपने हाथसे दिया औरंगाबादी के लिये पन्ने की सुमिरनी भी उसके हाथ भेजी ।

खानजहां के बेटे और नूरुल्लाहखां ने आपस में सिर पर हाथ रखे हुक्म हुआ कि फिर कोई हजूर में एक दूसरे के वास्ते सिर पर हाथ न रखो । जो इस हुक्म से फिरे वह गुसलखाने में पांव न धरे ।

बुखारा का खान अबदुल अजीजखां जो मक्के को गया था बादशाह के पास आना चाहता था, मगर वहीं मरगया । उसके नौकरों में से मीर जलालुद्दीन ने दरगाह में हाजिर आकर खिलअत सोने की मूठ का ख़ंजर और १ हजार रुपया पाया ।

तर्बीयतखां का बेटा हिदायतुल्लाह बाप के मरे पीछे हजूर में आया । मातमी का खिलअत इनायत हुआ ।

१ जमादिउलअव्वल (चैतसुदि २।१६ मार्च) को अबदुलहसन के माईबंदोंमें से जेनुल आबदीन ने आकर चौखट चूमी खिलअत इनायत हुआ. अबुलहसन ने ताबेदारी दिखाने के लिये फसादी ब्राह्मण मांधा का सिर काटकर शाहआलमबहादुर के पास भेजा था । वह उसने बहादुलअलीखां के हाथ हजूर में भेजदिया।[१]

पट्टन का फौजदार हमीदुद्दीनखां कंधारका किलेदार हुआ और उतरा हुआ किलेदार रुस्तमबेग हजूर में आया ।

हाफिज मोहम्मद अमीनखां की हवेली जो दिल्ली में थी महावतखां को मिली ।

सैयद अनवरखां के मरने से सैयद जेनुलआबदीन फौजदार और किलेदार शोलापुर का हुआ ।

मुखतारखां जडाऊ खंजर पाकर बीजापुरको गया ।

बखत बुलंद ने खिलअत घोडा उरबसी देवगढ और इसलामाबाद की जमींदारी पाई ।

---

१ कलकत्ते की प्रति में–मादना ।

रायरायां तिलोकचंद के भेजेहुए भावसिंह गोडके बेटों के सिर आजमशाह का नौकर बलंदपठान दरगाह में लाया। हुक्म हुआ कि आजमशाह के पास लेजावे।

इमाजी फुकेती जी को, जिन्हें फजायलखाने भेजा था, खिलअत, और हाथी इनायत हुए।

रायरायां तिलोकचंद मरगया।

औरंगाबादी महल ७ जमादिउल आखिर (वैसाख सुदि ८। २१ अप्रेल) को दिल्ली से हरमसरा में दाखिल हुई। शाहजादा कामबखश किले के दरवाजे तक, जो डयोढी की तर्फ था, पेशवाई करके लाया।

खानजहां बहादुर ने मुलाजिमत की ! उसको और उसके बेटे और सैयद मनवरखां को जो उसके पास तइनात था खिलअत इनायत हुए।

खानजहांका बडा बेटा हिम्मतखां खिलअत तलवार और हाथी पाकर बीजापुर को रुखसत हुआ।

जसवंत सिंह बुंदेला खिलअत हाथी नक्कारा और बादशाहकुलीखां बागी का भाई फाजिलबेग तहव्वरखां का खिताब पाकर हिम्मतखां के साथ गया।
दौलताबादके किलेदार सैयद मोहम्मदखां को मुरतिजाखां का खिताब मिला।

मरहमतखां को बीजापुर में खजाना पहुंचाने का हुक्म हुआ।

फाजिलखां अलाउलमुल्क के मुंशी रामराय के भाई लहचल के २ बेटों को ख़्वाज़ा अबदुलरहीमखां आधी रातके वक्त हजूर में लाया दोनों मुसलमान किये गये सआदुतुल्लाह और शादुल्लाह नाम हुआ।

१९ (जेठबदि ६।३ मई) को खानजहां बहादुर खिलअत खासा जडाऊ तलवार सोने के साजका घोडा, हाथी और २ करोड दाम, इनाम

१ कलकत्ते की प्रति में–पहाडसिंह। २ कलकत्ते की प्रति में नको जी। ३ कलकत्ते की प्रति में मूलकचंद पृष्ठ २६३। ४ कलकत्ते की प्रति में इतना और लिखा है कि दूसरे दिन शामको ख्वाजा अबदुलरहीम ने बादशाह के हुक्म से मुसलमानी मजहब का ठाट दिखलाने के लिये दोनों को हाथी पर चढाकर शहर में फिराया आगे २ झंडे और बाजे बजाते हुवे जाते थे।

पाकर हिंदुस्थान के फसादियों को सजा देने के लिये आगरे की तरफ रुखसत हुआ। हिम्मतखां के सिवाय उसके दूसरे बेटों और मनव्वर को खिलअत मिले, जो उसके साथ साथ गये।

जुनेर का किलेदार अबदुल अजीजखां मरगया उसका बेटा अबलखैरखां उसकी जगह बैठा।

जफराबाद का फौजदार जांसुपारखां, जो हजूर में आयाहुआ था, रुख-सत हुआ।

रुहुल्लाहखां के बेटे मीरहसन को अमीरखां की लडकीसे शादी करने का खिलअत, सोनेके साजका घोडा, और खानेजादखां का खिताब मिला।

हरमसरा की देखभाल का काम खिदमतखां से उतर कर अहतमामखां को इनायत हुआ।

उसके जाने से अरजियों की दरोगाई भी फाजिलखां मुनूशी और सदर के जिम्मे हो गई।

बहरेमंदखां ईंदी के थाने पर गया। उसका नायब मोहम्मद मुत्तलब हजूरी खिदमत में रहा।

२९ रजब (आसाढवदि १२।७ जून) को शाहआलम बहादुर मुला-जिमत में आया खिलअत गोशपेच[1] समेत और जडाऊ पहुंची इनायत हुई सब शाहजादों सुलतानों और अमीरों ने जो उसके साथ तइनात थे खिल-अत पाये।

३० रजब (आषाढ सुदि २।१२ जून) को शाहआदम की सालग्रह थी बादशाह ने ४० हजार रुपये के लालों की उरबसी इनायत की।

शाहआलम का नौकर मोमिनखां १०० हाथी अबुलहसन के हजूर में लाया। अबुलहसन के ड्योढीदार मोहम्मदमासूम ने मुलाजिमत की। कुली-चखां जफराबाद से हाजिर आया।

सैफुल्लाहखां के मरने से मोहम्मदमुत्तलब मीरतुजुक हुआ।

---

१ कानों पर लपेटने का कपडा।

शोलापुरसे बीजापुरको जाना ।

दक्खन का दुनियादार सिकंदर रयासत करने के लायक न था, तो भी सैयदी मसऊद अबदुलरऊफ और शिरजा वगैरा जो उसके राज्य में शरीक होरहे थे उसे सरदार बनाकर आप हकूमत करते थे और उसको कुछ माल नहीं समझते थे । इधर इन में भी फूट पडीहुई थी । उधर वह भी शहर से बाहर नहीं निकलता था । शहरवालों को ही सताता रहता था वह कमबखत संभा से दबाहुआ था उससे जो नुकसान मुसल्मानों को पहुचता था उसमें यह भी शरीक था और बीजापुर के किले को अपने बुरे दिन का ठिकाना समझता था । यह नहीं जानता था कि किसमत से कोई नहीं लड सकता जो लडता है हार जाता है । इसी लिये बादशाह ने उस मजबूत किले के लेने का इरादा किया एक दिन शेखमोहम्मद नकशबंदी सहरंदी मुलाकात को आया बातों बातों में उसने बादशाह से पूछा कि क्या बीजापूर लेने का इरादा है ? फरमाया, कि हम बादशाह लोग दुनिया से जो फायदा चाहते हैं, वह नाम पैदा करनाही है मैने चाहा था, कि लडकोंमें से कोई यह नाम हासिल करें । मगर न करसका । मैं चाहता हूं कि खुद जाऊं और देखूं कि यह दीवार कैसी है, जो आगे से नहीं हटती ।

२ शाबान (असाढसुदि ३ । १४ जून) को शोलापुर से कूच हुआ ।

१४ (सावनवदि १ । २६ जून) को मोहम्मदआजम और बेदारबखत-ने खिदमत में हाजिर होकर खिलत पाये । बहादुरखां और रावकरन के बेटे राव-अनूपसिंहने मुलाजिमत की ।

२१ (सावनवदि ८।३ जोलाई) को बीजापुर से २ कोस रसूलपुर में बादशाह के पहुंचने पर बहादुर फीरोजजंग ने आकर सलाम किया । ३० हजार रुपया इनाम (हैजार रुपये के १० घोडे दुशमन को बनामक हाथी सोने के साज से और खासा खिलअत इनायत होकर बेदारबखत की जगहे

---

१ कलकत्ते की प्रति में १५००१

जाने का हुक्म हुआ। उसके बेटे कमरुद्दीनखां को जडाऊ खंजर मोतियों की लडीका मिला।

२२ (सावनवदि ९ । ४ जोलाई) को मोरचे चढाने, तोपों से बुरजोंको उडाने और खाई पाटने का हुक्म हुआ।

३० वां आलमगीरी सन्.

१ रमजान (सावनसुदि ३ । १३ जोलाई) से ३० वां जलूसी वर्ष लगा नवाजिशखां मंदसोर की फौजदारी और किलेदारी का खिलअत पाकर गया। सुहराबखां को जीगा मिला सरफराजखां और दाऊदखां ने मुलाजिमत करके खिलअत पाये।

शेखनिजाम के बेटे अबुलखैरखां के बदलेजाने से मोहम्मदशरीफ जानमाजखाने का दारोगा हुआ और मुशरफी दीनदार के बदलेजाने से मुझ को मिली.

रजी उद्दीनखांके मरने से जो बराड के सूबे में हसन अलीखां का नायब था और फौज के साथ तकरार होजाने से दूसरी दुनिया में चलागया था एरजखां का जमाई मोहम्मदमूसा बराड़ का नायब सूबा हुआ।

१९ शव्वाल (आसोजवदि २।२९ अगस्त) को कुलीचखां तरकश, और कमान, पाकर मोरचों में तइनात हुआ। दिलेरखां के बेटे कमालुद्दीनखां के जख्म भरगये। खिलअत तलवार और यशम के साज की छडी इनायत हुई।

ऐतकादखां अहमदनगर से आकर हाजिर हुआ राजा भीम अजमेर से बुलाया हुआ आया।

२९ (आसोजवदि १२ । ४ सितम्बर) को बादशाह घोडे पर सवार होकर दमदमे को देखने गये जो किलेके कंगूरों के बराबर तक जापहुंचा था और किला अभी फतह न हुआ था।

सवारी की धूमधाम और किले की तरफ से बान और बंदूकों के जोर

---

१ कलकत्ते की प्रति में मोहम्मद मोमन। २ कलकत्ते प्रति में ११ शव्वाल (भादौं सुदि १३ । २१ अगस्त)

शोर की अजब कैफयत थी। तोपों के गोले बादशाह के सिर पर से जाते थे। मीर अबदुलकरीम ने कागज के एक परचे पर सीसे की कलम से यह लिखकर कि बीजापुर जल्दी फतह होता है, आगे किया। बादशाह ने अच्छा शकुन समझ कर लेलिया और कहा कि खुदा ऐसा ही करे। उसी हफते में किला फतह होगया।

जलाल चेले ने मोरचों के बनाने में अच्छा काम किया था इसलिये बादशाहने ३ जीकाद (आसोजसुदि ५।१२ सितम्बर) को उसे सरबराहखां का खिताब दिया।

बीजापुरका फतह होना।

जब २ महीने १२ दिन तक तोपों और बंदूकों की मार से बहुत आदमी मारेगये और किला तोडने का सारासामान तैयार होगया, तो सिकंदर और उसके साथियों ने अपने को मौत के मुंह में देखकर पनाह मांगी। ४ जीकाद (आसोजसुदि ६।१३ सितम्बर) को बादशाह का दखल बीजापुर में होगया[1] मुसलमानी मत जो वहां कमजोर होरहा था फिर जोर पकडगया। बादशाहने सिकंदर के कसूर माफ करदिये और उसको दरबार आम में बुलाकर लायक जगह पर खडाकिया। खासा खिलअत मोती छडी समेत, जडाऊ खंजर, १ हजार रुपये का फूल कटारा, १३ हजार रुपये की मोतियों की माला हीरे के लटकन की, जडाऊ कलँगी और जडाऊ छडी इनायत करके सिकंदरखां का खिताब बखशा, और १ लाख रुपया सालाना मुकर्रर करके गुलालबाड में उसके वास्ते डेरा लगवाया, जिसका सब सामान सरकार से दियागया।

सिकंदरखे का खिताब जो सिकंदरखां था, इसकदर रखागया।

फिर अबदुल रऊफ और शिरजा भी लजाते और पछताते हुवे हजूर में आये। अबदुलरऊफ को खिलअत तलवार जडाऊ खंजर मोती छडी का सोने के साज से घोडा चांदी के साज से हाथी ६ हजारी ६ हजार सवार

---

१ बीजापुर की बादशाही खतम होगई।

का मनसब और दिलेरखां का खिताब मिला। शिरजा को भी उतनाही लवाजमा मनसब और रुस्तमखां का खिताब इनायत हुवा।

महावतखां शरीफुलमुल्क मुखतारखां सरफराजखां को हाथी, कुलीचखां को खंजर घोडा, लुतफुल्लाहखां और गजनफरखां को आलमतोग सफशिखनखां को नक्कारा, हिम्मतखां को जडाऊ साजकी तलवार और कमरुद्दीनखां को जडाऊ खंजर इनायत हुआ।

सैयदी मसऊद के बेटे सैयदी मोहम्मद और सरफराजखां के भानजे अबदुलनबी ने भी मुलाजिमत के दिन हाथी पाये।

हुसेनअलीखां[1] बहादुर आलमगीरशाही बीमारी से मरगया। बहादुरी और सिपहसालारी अपने बराबरवालों में से लेगया। सच बोलने ठीक काम करने और दुनिया का भला चाहने में मशहूर था। उसके बेटे मोहम्मद मुकीम और खैरुल्लाह को मातमी के खिलअत मिले।

हुसेनअलीखां के मरने से महावतखां को बराड की सूबेदारी खिलअत टोप बकतर एक शिलवार और दुबलगा इनायत हुआ। मोहम्मदसादिक ने उसकी नायबी का खिलअत पहिना।

बादशाहने जुम्दैतुलमुल्क[2] को बडी मेहरबानी और खाविंदी से गद्दी पर बैठाया। सुखसेजखाने के दरोगा ख्वाजा बफादारने, जो उसके लिये जरी की गद्दी तकिया और सोनेकी सिलीहुई सोजनी लेगया था, हजार रुपया और खिलअत पाया था सो माफ हुआ।

११ (आसोजसुदि १४।२० सितम्बर) को दौलतखाना रसूलपुर से चलकर किले के दरवाजे से आधकोस अलीपुर के आगे तलाव के पास लगा। बादशाह ने उसी दिन की सवारी में जाकर किले शहर पनाह के कोट और मकानों को देखा।

९ जीकाद (आसोजसुदि ११।१२।१८ सितम्बर) को अशरफखां

---

१ कलकत्ते की प्रति में हसनअलीखां। २ असदखां वजीर।

मीरबखशी मरगया। अच्छा समझनेवाला और लिखनेवाला था। उसकी जगह रुहुल्लाहखां दूसरा बखशी हुआ।

बहरे मंदखां के बदले जाने से कामगारखां गुसलखाने का दरोगा और उसकी जगह कासमखां अव्वलमीरतुजक हुआ।

अशरफखां के भतीजे मोहम्मदहुसेन और मोहम्मदबाकर को मातमी के खिलअत मिले।

१७ (कार्तिकवदि ५।१६ सितम्बर) की रात को बादशाह ने सिकंदर को हजूर में बुलाकर मेहरबानी से बैठने का हुक्म फरमाया हीरों का सरपेच और ३ बीडे पानके इनायत किये। उसने आदाब बजाकर शुक्रिया अदा किया।

बीजापुर का नाम दारुलजफर रखागया और रुहुल्लाहखां वहां की सूबेदारी पर भेजागया। उसका मनसब हजारी हजार सवार के इजाफे से ५ हजारी ३ हजार सवार का होगया।

अजीजुल्लाहखां किलेदार मोहम्मदरफी दीवान सआदतखां बखशी बिकाये निगार सैयद इबराहीम कोतवाल फौजदार और हाजी मुकीम तोपखाने का दारोगा जैनुलआबदीन और मोहम्मद जाफिर दाग और तसहीहा के अमीन और दारोगा अबुलबरकात काजी और मोहम्मद अफजल मोहतसिब मुकर्रर हुए।

६ जिलहज्ज (कार्तिकसुदि ८। १४ अकतूबर) को सिकन्दरखां को १० हजार रुपये इनायत हुए।

खानेजादखां मिरज की तरफ गया।

खानजहां बहादुर के बेटे हिम्मतखां ने इलाहाबाद का सूबा और ८० लाख दाम इनाम पाया ढाई हजारी २०० सवारोंका मनसबदार था।

किफायतखां हाथी पाकर नये मुलक के बन्दोबस्त पर सक्खर की तर्फ गया। उसका जमाई जाफर वहां का दीवान हुआ।

---

१ कलकत्ते की प्रति में यों लिखा है कि रुहुल्लाहखां अव्वलबखशी और उस की जगह बहरेमंदखां दो यम बखशी हुआ। २ कलकत्ते की प्रति में २ हजारी २० सवार था २॥ हजारी हुआ।

यारअली बेगके बदले जाने से इखलास केश मीरबखशी का पेशदस्त और दोयम बखशी का पेशदस्त यारअली हुआ।

राजा अनूपसिंह सक्खर की फौजदारी और किलेदारी पर गया।

अबदुलवाहिदखां नये मुल्क की तरफ कादिरदादखां मिरज की किलेदारी, कासमखां विसवापट्टन की तरफ और शेखचांद वहां की किलेदारी पर रुखसत हुआ।

११ जिलहज्ज (कार्तिक सुदि १३ । १९ अकतूबर) को सिकन्दरखां के घराने के १६ आदमियों को जिन के बायें हाथ की उंगलियां उस के बाप-दादों के कायदे से कटीहुई थीं और जो मीरास (बाप के माल) से महरूम थे, बादशाह ने १५० मुहरें इनायत कीं और बालबच्चों समेत शोलापुर में रहने का हुक्म किया हरेक के वास्ते वजीफा (महीना) मुकर्रर कर दिया।

खानजहां का बेटा सिपहदारखां आगरे का सूबेदार हुआ।

एतकादखां संभा हरबी की फौज को सजा देने के लिये भेजागया, जो मंगलें पंडिये की तरफ फसाद कररही थी। उसे कुलंग के परों की जडाऊ कलँगी इनायत हुई।

बीजापुर से लौटकर शोलापुर में पहुंचना।

बादशाह २२ जिलहज्ज (बदि ९ । ३० अकतूबर) को बादशाह फतह और खुशी के साथ बीजापुर से कूच करके शोलापुर में पहुंचे। हुक्म हुआ कि सिकन्दरखां को बेगमों की सवारी के साथ लायाकरें और रियासत के असबाब **माहीमरातब** और छत्र वगैरा को बादशाही कारखानेमें सौंप दें।

---

१ कलकत्ते की प्रति में ७५ (बदि २ । २३ अकतूबर)। २ कलकत्ते की प्रति में लाहोरका सूबेदार मुकर्रमखां के बदले जानेसे। ३ हरबी के माने लडनेवाले के हैं जो हिंदूमुसलमानों के ताबेदार न हों और उनसे लडें, उनको मुसलमानी शरीअतमें हरबी लिखते हैं, और जो ताबेदार हो जावें और जजियादें उनका नाम जिम्मी है। सेवाजी और संभाजी औरंगजेब की ताबेदारी नहीं करते थे और जजियां भी नहीं देते थे इसलिये तवारीख में उन्हें काफिर और हरबी लिखा है। ४ कलकत्ते की प्रति में मंगलवेडा।

उसी दिन खानफिरोजजंग इबराहीमगढ फतह करनेके लिये रुखसत हुआ, जो हैदराबाद के इलाके में था खासा खिलअत और हाथी मिला। दिलेरखां शिरजाखां जमशेदखां बाल्जी घुडपया, कमालुद्दीनखां, रावदलपत, सफ-शिकनखां, किशोरसिंह, शुजाअतखां, आकाअलीखां, अब्दुलकादिरखां जहांगीर कुलीखां, सूफीखां, उदितसिंह भदोरिया, सरबराहखां चेला, और भीकम-तथा जियादा मनसबवाले उसके साथ तईनात हुए और उन सब को खिलअत जवाहर हाथी घोडे इजाफे और खिताब मिले।

२९ जिल्हज्ज (मार्गशिर्षसुदि १ । ६ नवम्बर) को बादशाह शोलापुर का किला देखनेके लिये गये।

सन १००८ हि० । संवत् १७४३ । सन १६८६ ई० ।

शाहजादे बेदारबखतकी शादी।

११ मोहर्रम (सुदि १४ । १८ नवम्बर) को शाहजादे बेदारबखत की शादी मुखतारखां की लडकी से हुई। काजी अबदुल्लाहने निकाह पढा। २ लाखका मिहर बांधा। दादा ने पोतेको खिलअत, लालों का सरपेच, उर-बसी मोतियोंकी माला, तिलडी ८ अंगूठियां १ लाख रुपये २ घोडे और हाथी दिये। दुलहन को अंगूठी मोतियों की माला और जडाऊ अनवट इनायत किये।

१६ (पौषवदि ३ । २३ नवम्बर) को शरीफेमक्का का सफीर अलीआका खिलअत खंजर घोडा हाथी और ३ हजार रुपया पाकर रुखसत हुआ।

सिकन्दरखां की बेटी आयशाबानूबेगम को मोतियों की सिलीहुई टोपी इनायत हुई।

मीरअबदुल्करीम फिर सातों चौकियों का अमीन हुआ।

---

१ कलकत्ते की प्रति में माल्जी और गोपालदास पृष्ठ ८४ और इसके हाशिये में माल्जी घोडपडा किशोरसिंह हाडा शिवसिंह और सुजानखां। २ कलकत्ते की प्रति में १५ मोहर्रम (पोसबदि ३ । २२ नवम्बर) ३ कलकत्ते की प्रति में मोतियों की माला झलकडी। ४ वही बीजापुर का बादशाह सिकंदर आदिलशाह।

शोलापुर से हैदराबाद को कूच ।

हैदराबाद का दुनियादार अबुलहसन कमबखती का मारा अपनी अखीरी हालतसे आंखें मूँदकर हिंदुओंको काम देकर उन कमबखतोंकी **रसमों** को फैलाता था और ईरान के जंगली लोग भी उसकी मदद से तरह २ की बुराइयां करते थे। मुसलमानों और मुसलमानी मत की कुछ इज्जत नहीं करते थे मसजिदें सूनीपडी थीं। मंदिर आबाद थे। शरीअत की बातें बंद थीं। **बदमजहबी**[१] के दरवाजे खुले थे। वह खुद गफलत में पडा था। रात दिन की कुछ खबर नहीं थी। बुरी सुहबतमें रहनेसे मुसलमानी और गैर मुसलमानी की पहिचान उसको बिलकुल न थी। दोजखी संभा से मुसलमानों को तरह २ की तकलीफें पहुंचती थीं, तो भी मदद करता था। उसका जरासा इशारा होनेपर भी बहुत सा माल भेज देता था और इसतरह उसकी लूट मार से बचना चाहता था। बादशाह नहीं चाहते थे कि उसके हाथ से मुसलमानों की बेइज्जती हो और मुसलमानों को खराबी पहुंचे। उन्हों ने तलवार के पानी से जालिमों के खून की गंदगी जमीन के चहरे पर से धोडाली थी और खांडे की धार से इतने किले खोललिये थे कि उतनी कलियां भी बसंत की हवा बाग में नहीं खोलसकती। उनके हाथ में दुनिया को फतह करनेवाली तलवार थी तो भी उन्होंने नसीहत की उंगली से कान की रूई निकालनी चाही, और मुसलमानी के मत रूपी शहर से आजाने के लिये कईबार नसीहत के दरवाजे उसके वास्ते खोलकर हुक्म लिखा कि काफरों की सुहबत में बैठना ब्राह्मणों को काम देना और हरबी काफिर (संभा) को मदद पहुंचाना छोडदें जिससे बेगुनाह रैयत लशकरों के पावों में न रौंदीजावें और आदमी भी खराब होने से बच रहें। लेकिन उसकी किसमत लौटगई थी। कुछ नहीं माना बादशाहजादे मोहम्मदमोअज्जम के सिपाही जो

---

१ अर्थात् शीआ मतके मुसलमान, क्योंकि ईरान में यही धर्म चलता है और हिंदुस्तानके बादशाह सुन्नी मत के मुसलमान थे अबुलहसन शीया धर्म को मानता था इसी मत विरोधके बहानेसे उस का राज छीन लियागया। २ पाखंड।

उसे समझाने के लियेगये थे उनको अपना घर लुटाकर दगा फरेब और झूठे इकरारों से अपने को बचाया। माल और सिपाह के जियादा होने से और किले की मजबूती पर भूलकर माफी मांगने के वास्ते अपने मुंह में ताला लगा लिया। गधे जब रस्ता छोडकर चलने लगते हैं तो उनके सिर का सन्मान लाठी से कियाजाता है, इसलिये बादशाह २९ मोहर्रम (पौससुदि ११६ दिसम्बर) को सैयद मोहम्मदगेसूदराज की जियारत करने के लिये गुलबर्गे को गये और २० हजार रुपये वहांके मुजाविरों और गरीबों को देकर १ हफ्ते बाद जफराबादबिदुर को रवाना हुए। वहां २० दिन इस इन्तजार में ठहरे रहे कि शायद वह कमबखत (अबुल हसन) होश में आजावे। मगर जब उसको रस्ते पर आता न देखा तो १० सफर (पौससुदि १२।१६ दिसम्बर) को उसपर चढाई की। उसके २०० वर्ष के बनेहुए घर के खराब होने का वक्त आगया था तो भी बादशाही लशकर के धक्के से बचने के लिये किले में घिरकर बैठ रहने के सिवाय और कोई बात उसके समझ में नहीं आई और तसवीर की तरह दीवारसे पीठ लगाकर बैठगया ओठ हंसी से खाली, आंखें आंसू से भरी, और जबान बोलने से बेकार थी। जब बिगडने के दिन बहुतही पास आगये तो ताबेदारी करना और नजराने भेजना चाहा, मगर क्या फायदा जब कि तीर चुटकी से निकल गया था और कजा आचुकी थी बादशाह ने उसकी कोई अर्ज कबूल नहीं की क्योंकि उस मौत के मारेहुए का जवाब तलवार से देना था। जब बादशाही लशकर हैदराबादसे २ मंजिल पर पहुंचा तो बहादुर फीरोजजंग की अरजी जो बीजापुर से इबराहीमगढ का किला फतह करने को भेजागया था हजूर में आई, जिसमें वहां पहुंचने, उस जगह को फतह करलेने और दरगाह में हाजिर होने का हाल लिखा था। इससे बादशाही बंदों के दिल बढे और दुशमनों के घर उजड गये। बादशाहके इकबाल और लशकर की धाक ऐसी बैठगई थी कि गर्नाम के पास फौज और खजाना जियादा होने पर भी रस्ते में क्या तो बादशाह की सवारी और क्या फीरोजजंग की तरफ किले (गोलकुंडे) के सिवाय कहीं किसी आदमी की सूरत नजर नहीं आई।

सन् १०९८ हि० संवत् १७४३ सन १६८७ ई० ।

२४ रबीउलअव्वल (फाल्गुनवदि ११ । २९ जनवरी) को किले से १ कोस पर बादशाह के डेरे लगे और फौज को हुक्म हुआ कि दुश्मन के आदमियों को जो मुरदे पर चींटियों और गुड पर मक्खियों की तरह से बैठे हैं मारकर हटादें । फौज ने हुक्म पातेही बहुतसी कोशिश की और जैसे हवा के आतेही मच्छर उडजाते हैं वे सब बालबच्चों को कैद में छोडकर उठगये । इस घमसान लडाई में कुलीचखां बरसती आग में दौडताहुआ किले के दरवाजे तक जा पहुंचा और चाहता था कि उसी दम अंदर पहुंचकर फतह करले, मगर खुदाको यह मंजूर था कि कुछ दिन और भी यह काम ढील में पडा रहे । और अपना वक्त आने पर बने इसलिये जंबूरक का १ गोला आकर उसके कन्धे में लगा और लुतफुल्लाहखां के सिवाय कि जो उसके साथ था और कोई उसकी मदद को नहीं पहुंचा इस सबबसे वह मजबूत दरवाजा न टूटसका और कुलीचखां घोडे पर सवार होकर वहां से अपने डेरेमें चला आया असदखां बादशाह के हुक्म से उसके देखने को गया जर्राह उसके कंधे में से टूटीहुई हड्डियां चुनरहे थे और वह बैठाहुआ लोगों से बातें कररहा था दूसरे हाथ से कहवा पीताजाता था और कहता था कि टांके देनेवाला अच्छा मिलगया है ।

इलाज करनेवालों ने बादशाह के हुक्म से बहुतही तदबीरें कीं लेकिन कजा पर किसी का जोर नहीं चला । ३ दिन बाद मौत ने उस पर धावाबोलदिया और उसकी जान को बदन के किले से निकाल बाहर किया उसके मरने से बहादुर फीरोजजंग उसके बेटों और सयादतखांने मारे गम के कपडे फाडडाले बादशाहने उनके वास्ते मातमी के खिलअत भेजे ।

४ रबीउलआखिर (फागुनसुदि ६ । ७ फरवरी) को मोरचे बढाने का हुक्म हुआ । किले की बुर्जों और कंगूरों से रातदिन बराबर आग बरसती थी लेकिन बादशाही बहादुर जलने और मारेजाने की परवा न करके तोपके गोले को अपने सर का तुर्रा समझते थे । सफशिकनखां की सरदारी में १ महीने में

मोरचे खाईतक पहुंचे । जो काम साल भर में नहीं होने का था वह यों अजब तरह से होगया । दुशमनके बनामकी बडी तोप किले के सामने लगाईगई उसकी मार से किले की नीवें हिलगई तो भी दीवार नहीं गिरी सफशिकनखां ने कंगूरों के बराबर तक दमदमा बनाकर तोप चढाई मगर फिर फीरोजजंग की लाग से हाथ खैंचकर इस्तेफा देदिया । सलावतखां उसकी जगह मीरआतिश हुआ वह भी इस खिदमत को जैसी करनी चाहिये थी नहीं करसका और काम छोड बैठा । सरदारोंकी गफलत और आपाधापी से गनीम आधीरात को दमदमे पर आ गिरा और तोप को बेकार करके इज्जतखां और सरवराहखां चेले और बहुतसे आदमियों को पकड लेगया बादशाह ने खफा होकर सफशिकनखां को मनसब से मौकूफ किया और कैदकरदिया । सलावतखां फिर मीरआतिश हुआ लुतफल्लाहखां खास चौकी के बंदे और दूसरे बहादुर सिपाही **दमदमे** की रखवाली पर रखेगये । किले के नीचे १ नदी बहती है जिसमें लुतफुल्लाहखां ३ दिन तक मगर मच्छकी तरह से लडतारहा फिर दूसरी फौज पहुंचगई जिसने गनीमको हटाकर दमदमा फिर छीनलिया २ दिन पीछे अबुलहसन ने इज्जतखां और सरबराहखां वगैरा को खिलअत देकर छोडदिया वे दमदमे पर होकर आये । इस बेमौका ढीलहो जाने और बरसात के जोर से दमदमे का अकसर हिस्सा गिरगया । तब सफशिकनखां दूसरी तरफ से कंगूरे तक मोरचे पहुंचादेने का मुचलका लिखकर कैद से छूटा और जैसा उसने कहा था वह उसने कर दिखाया ।

हैदराबाद का काल ।

इन्हीं दिनों में बरसात जियादा होने से और माजरा नदी के चढजाने से रसद बंदहोगई । काल पडगया लोग मरनेलगे अनाज उर्दू बाजार में नहीं रहा हैदराबादियों में से कोई जीता न बचा । घर, दरिया, और जंगल मुरदों से पटगये । यही हालत लशकर की भी थी । रातों को बादशाही दौलत खाने के चारों तर्फ मुरदों के ढेर लगजाते थे जिन्हें तडके से शाम तक भंगी घसीट २ कर नदी के किनारों में डाल आते थे । फिर रात और दिन को वही हाल था ।

---

१ कलकत्ते की प्रति में इज्जतखां उसकी जगह काम करने लगा ३२६ ।

जो जिंदा थे, वे मरे हुऐ आदमियों और जानवरों के खाने से भी नहीं चुकते थे जहां तक नजर जाती, कोसों मुरदों के अडंग लगेहुए दिखाई देते थे। मेह के लगातार बरसने से उनके चमडे और मांस गलगये थे हवा के सडजाने से जिंदों की नाक में दम होगया कई महीने पीछे जब मेह थमा, तो हड्डियों के ढेर बरफ की पहाडियों की तरह दूर से नजर आते थे। फिर जो खुदा का फजल हुआ तो मेह के थमने से नदियां उतरीं रसद हर तर्फ से आने लगी। करोडागंज के दारोगा सरदारखां की जगह आलाहजरत के उस्ताद मीरसैयदमोहम्मद कन्नोजी का बेटा सैयदशरीफखां हुआ, जो ईमानदार आदमी था। बादशाह की नेकनीयती से महंगी मिटी और अनाज सस्ता होगया।

शाहआलम बहादुर शाहजादे मोहम्मद मुअज्जमका कैद किया जाना।

बुरी सुहबत में बैठने और हद के बाहर पांव रखने से अकल जाती रहती है और खराबी में फंसकर पछताना पडता है। शाहआलम इतना समझदार होकर भी बुरे पास रहनेवालों की संगत से बादशाह के दिलमें बदख्वाही का ख्याल पैदा किये बगैर नहीं रहा। उनको उससे नफरत तो होगई थी, मगर बडा हौसला होने से बहुत दिनों तक आनाकानी करतेरहे, क्योंकि वह नहीं चाहते थे, कि ऐसी बातें लोगों की जबानों तक पहुंचे। लेकिन बीजापुर की मुहिम का काम बिगाडने और सिकंदर को पोशीदा पैगाम भेजने की बातें एकदम खुलगईं। पैगाम लेजानेवाले पकडे और मारेगये। मोमनखां तोपरखने का दरोगा अजीजखां पठान मुलतिफितखां दोयम बखशी और चालाक बिंद्रावन जो उसके नौकर थे १८ शव्वाल सन् १०९७ (आसोजबदि ५।२८ अगस्त) को लशकर से निकालेगये। इस पर भी कमबखती से उसे कुछ नहीं सूझा और अब हैदराबाद की लडाई में भी अबुलहसन का भूत उसके आचिमट मोरचों और किले गोलकुंडे के खुफिया नवीसों की मारफत उसके कागज खानफीरोजजंगने पकडकर एक रात बाद-

शाह को दिखाये जिससे बादशाह को पूरा यकीन उसकी बेवफाई और उसके कुपूत होने का होगया। तब उन्होंने अहतमामखां के छोटे भाई हयातखां को जो शाहजादे के दीवानखाने का दारोगा था, बुलाकर फरमाया कि शाह-जादे को जाकर यह हुक्म सुनादे कि शेखनिजाम हैदराबादी आज रात को छापा मारने का इरादा कररहा है तुम अपने नौकरों को लश्कर के आगे भेज दो सो उसका रस्ता रोकेरहें। ये तो उधर चले जावेंगे और अहतमामखां तुम्हारे डेरे का पहरा देगा। जब खान ने हुक्म पहुंचाया और वैसाही हुआ तो दूसरे दिन बमूजिब हुकम के शाहजादे को मोअज्जुद्दीन और मोहम्मद अजीम समेत दरबार में लाये। बादशाह ने कचहरी करके उनके आने के कुछ देर पीछे फरमाया कि असदखां और बहरेमंदखांसे कुछ बातें कहींगईं हैं। तस बीहखाने में बैठकर उनका जवाब दे। तीनों लाचार वहां गये हथियार उनकी कमर से खोललियेगये। जब तक डेरा खडा हुआ वे वहीं थे। फिर डेरे में लायेगये।

हजरत कचहरी से उठकर परिसतार खास की ड्योढी के रस्ते से महल में गये। हाय २ करके दोनों घुटनों पर हाथ मारते थे और कहते थे कि मैंने ४० वर्ष की मोहब्बत खाक में मिलादी।

फिर अहतमामखां के बन्दोबस्त से शाहजादों के आसपास पहरे बैठगये और बादशाही मुतसद्दियों ने उनके कारखानों का तमाम सामान और लवा-जमा दमभर में कुरक करके **कतरे** (बूंद) को दरियामें पहुंचा दिया। एहतमामखां इसी अहताम से हजारी का डेढ हजारी होगया। सरदारखां का खिताब मिला। उसके बेटे हमीदखां ने जो २ सदी था ५० सवारों का इजाफा पाया।

फिर बडी मुद्दत में जमशेदखां और अबदुलवाहिदखां की कोशिश से सुरंगलगी दमदमे बने मोरचे बढे। हजरत भी फीरोजजंग के मोरचे में तश-रीफ लेगये। बडे २ अमीरों को पुराने दमदमे की तरफ से धावा करने का हुक्म दिया। दिन भर पूरी मेहनत[1] और कोशिश हुई। खानफीरोजजंग और

---

१ कलकत्ते की प्रति में–मेहनत।

रुस्तमखां जखमी हुए बहुत से दिल चले सिपाही मारेगये पिछले दिन से बादशाहजादे कामबखश को असदखां के साथ भेजा मगर बानों बंदूकों चादरों और खुरंदों की मारसे लोगों का तसूभर भी कदम आगेको न बढस-का । मारेजाने और जखमी होने के सिवाय कुछ काम न बना बादशाह रात भर मोरचे में रहे तडके ही डेरों में चले आये । किसी को खबर भी न हुई । फिर दूसरी फिकरें की गईं बहुतसे खर्च हुए धर्महार कपटी लोग माल और दौलत के लालच में आकर गनीम से मिलगये । शोरे छोडनेलगे नमकहराम कमीने जो पहिले उस (अबुलहसन) को छोडकर आये थे, अब उसी के बहकाने से बेईमानी के काम करने और उसको रसद पहुंचाने लगे घेरे को बहुत दिन होगये बादशाह की समझ इस बात पर ठहरी कि गोलकुण्डे के आसपास १ किला लकडी और मिट्टी का बनाना चाहिये । वह भी बनाया-गया जंगलभर की लकडी और मिट्टी उसमें लगगई दरवाजे पर पहरे बैठगये चिट्ठी वगैरा आना जाना बंद होगया ।

इसी अरसे में खान फीरोजजंग के जखम भी भरगये उसने आकर मुला-जिमतकी खिलअत जिरेह[2] जहलम[3] खासा जडाऊ बर्सी[4] पाया रुस्तमखां के जखम भी भरे । उसे भी खिलअत इनायत हुआ ।

महाबतखां का बेटा बहरामखां गोले से मारागया था उसके भाई फरजाम को मातमी का खिलअत मिला उसका दूसरा भाई जानिसारखां भी मारागया उसकी भी मातमी का उसने खिलअत पाया ।

सफशिकनखां का भाई शुजाअतखां खानफीरोजजंग की फौज का बखशी मीरअब्दुलमुआली यक्केताजखां, सुहराबखां और मोहम्मदहाकिम वगैरा जो जखमी हुए थे और जलगये थे उन सब पर बादशाहकी मेहरबानियां हुईं ।

सन १०९८ हि० संवत् १७४४ सन १६८७ ई० ।

२१ रजब (प्र० आषाढवदि १४ । २९ मई) को अबुल हसन के उमदा नौकर शेखनिजाम के नसीबजागे । वह बाहर के लशकर की सरदारी करता

---

१ कलकत्ते की प्रति में—हुक्का । २ बकतर । ३ टोप । ४ छुरी ।

था। वह दरगाह की चौखट चूमने को आया। ५०० मुहरें १ हजार रुपये नजरकिये मुकर्रबखां का खिताब ६ हजारी ५ हजार सवारों का मनसब, खासाखिलअत, तलवार मोतियों की लडीका खंजर जडाऊ सरपेच अलम नक्कारा १ लाख रुपये २० अरबी, इराकी, तुर्की. कच्छी घोडे और २ हाथी इनायत हुऐ मलिकमुनव्वर शेखलाढू और शेखअबदुल्लाह उसके बेटों और कई भाई बंदों को अच्छे २ खिताब और मनसब जो ४ हजारी से कम न थे खिलअत अलम नक्कारा घोडे और हाथीमिले।

इसूँजी दखनी जो संभा की तरफ से सालेर का किलेदार, था बंदगी में आया खिलअत, अलमतोग नक्कारा हाथी, घोडा, और २० हजार रुपये के इनायत होने से उसकी इज्जत बढी।

सरफराजखां के भाई सरबुलंदखां को अलमतोग और नक्कारा इनायत हुआ।

मानकोजी जो संभाके नौकरों से मानोवीं नामकिले का किलेदार था, किला लिये जाने के पीछे दरगाह में नाक घिसने को आया। खिलअत और २ हजारी १ हजार का मनसब उसको मिला।

१८ रजब (आषाढवदि ५।२१ मई) को मोहम्मदअलीखां खानसाम मरगया भलाआदमी और खानदानी था। जो उसके पास जापहुंचता था वहा अपनी मुरादको पहुंचजाता था सचा और ईमान्दार था। कामगारखां खानसामां हुआ और कामगारखां की जगह एतकादखाने गुसलखाने की दारोगाई पाई।

शरीफुलमुल्क हैदराबादी के बेटे इफतखांरखाने, जो अबुलहसनका भानजा था, बादशाह की खिदमतमें हाजिरहोकर ३ हजारी १ हजार सवार का मनसब और खिलअत पाया।

शरीफखां को जो उर्दूके करोडा गंज और दखनके चारों सूबोंसे जजियां तहसीलने की खिदमतपर मुकर्ररथा, सूबों में दौराकरने का हुक्महुआ, जिससे

---

१ कलकत्ते की प्रति में–ढाल। २ कलकत्ते की प्रति मे–आसूजी। ३ कलकत्ते की प्रति मैं–खानोवा। ४ मुसलमान न होनेके दंडस्वरूप यह एक करता जो हिन्दुओंसे लिया जाता था।

जजियाके माल की जमाबंदी शरीअतके मुवाफिक्र होजावे और मीर अब्दुलकरीम अपने दूसरे कामोंके सिवाय उसकी नायबीमें करोडागंजका काम भी करें।

२४ शाबान (द्वि० आषाढवदि ११ । २९ जून) को शरीफुलमुल्क मरगया। उसके बेटों को खिलअत मिले।

३१ वां आलमगीरी सन्।

१ रमजान (आषाढसुदि २।३ जुलाई) से ३१ वां जलूसी वर्ष लगा। दरबारियोंने दूसरे करन ([1]युग) शुरुहोने की मुबारकबाद दी।

७ (आषाढसुदि ९।८ जुलाई) को बादशाह घोडेपर सवार होकर सफशिकनखां के मोरचों और दमदमे को देखने गये, जो फिरसे किले के कंगूरों के बराबर तक बनगया था और पैदल होकर २ घडी तक कैफियत देखतेरहे।

मोहम्मदआजमशाह जो बादशाह के शोलापुर को रवाना होने के पहिले हिंदुस्थान को भेजागया था और बरहानपुर तक पहुंचा था, और बखशीउलमुल्करूहुल्लाहखां जो सूबे बीजापुर के बिगडे हुए इन्तजाम पर गया था, दोनों बादशाह के बुलाने से १० (आषाढ सुदि ११।१२।११ जुलाई) को आकर हाजिर होगये। अब किला फतह करने के काम आजमशाह की अफसरी में होनेलगे।

गोलकुंडे का फतह होना।

२४ जीकाद (आश्विनबदि) ११।२२ सितम्बर) की आधी रात को जब कि बखशीउलमुल्क बहादुरखां जैसे बहादुरों के साथ किले के नीचे फिर रहाथा तीरंदाजखां बीजापुरी ने जो बीजापुर फतह होने से पहिले दरगाह में आया था और फिर अबुलहसन से मिलकर उसका मोतमिद बनगया था, मोरचों के पास की खिडकी खोलदी, जिसमें से बादशाही लशकर किले में जा घुसा और आजमशाह ने जो लशकर की मदद के लिये

[1] मुसलमानी ज्योतिषमें ३० वर्षका युग माना जाता है।

किले के नीचे नदी पर ठहरा हुआ था मोरचे में पहुंचकर फतह का शादियाना बजादिया । बख्शीउलमुल्क गाफिल अबुलहसन की हवेली में जाकर उसको और उसके साथियों को मुकाबिला किये बिनाही शाहजादे के पास पकड़लाया । बादशाह ने रहमदिली से उस मौत के मारे को मारनेका हुक्म न दिया, बल्कि अपने दौलतखाने में लाने का हुक्म फरमाया, जहां वह शाम को लायागया । उस गुमराह के दिल में जो डर रहाकरता था उससे बेखटके होकर वहां उस डेरे में उतरा जो उसके वास्ते लगाया गया था और बादशाह के माफी देनेका शुक्रगुजार हुआ ।

खुदा का शुक्र है कि उसकी मदद से ऐसा देर में टूटनेवाला किला ६ महीने और कई दिन में फतह होगया और अजब बात यह है कि १ साल के भीतर २ इसी महीने में २ किले फतह होगये, जिनका यों फतह होना कभी किसीके समझ में नहीं आता था ।

अब इस किले की मजबूती शहर की उमदा इमारतों और वहां की आबहवा का कुछ हाल लिखाजाता है । गोलकुण्डे का नाम पुराने जमाने में हैमाकच्छ था और देवराय वहां का राजा था । उसके पीछे ब्रहमनी बादशाहों का कबजा हुआ । जब उनके घर में गड़बड़ हुई, तो सुलतान महमूद ब्रेहमनी का गुलाम सुलतानकुलीकुतबुलमुल्क जिसके पास यह किला था दबा बैठा । यह किला १ पहाड़पर है जिसकी चोटी आसमानसे लगीहुई है । इसकी तल-हटी भी बहुत मजबूत है और सिवाय आलमगीर बादशाह के कोई उसको न लेसका । उसके किसी तरफ को भी कोई ऊंचाई नहीं है कि जहां से उस पर फंदा पड़सके । मगर १ पहाड़ी जरूर है, जिस पर से कोई हौसलेवाला हाथ बढा सकता है । तखत पर बैठने से पहिले जब बादशाह ने इस मुल्क को अपनी फौजों से रौंदडाला था तो, मेहरबानी से अबदुलाहकुतबुलमुल्क का कसूर माफ करदिया था । तब उसने इस खयाल से कि कोई यहां न आस-

---

१ कलकत्ते की प्रतिमें महीने और कई दिन । २ कलकत्ते की प्रति में–मानकच्छ २०१ पेज में ।

के किले के आसपास १ मजबूत कोट बनवाकर किले से मिलादिया था और निश्चिंत हो बैठा था। फिर उस शिकार ने तो कोई जखम नहीं खाया मगर दूसरा उसके बदले शिकार हुआ।

हैदराबाद का शहर किले से २ कोस पर मोहम्मदकुली कुतबुलमुल्क का भागमती पातर के नाम पर बसाया हुआ है। उसने तो उसका नाम भागनगर रखा था मगर फिर इस नाम से मशहूर हुआ। अब बादशाही मुल्कों में शामिल होकर दक्खनके सूबों में मिलगया है और उसका नाम दारूलजिहाद[1] हैदराबाद लिखा जाता है। यह जमीन पर १ बडे आराम की जगह है जान और बदन के सुख के लिये बहिश्त है बस्ती चौडी है। इमारतें ऊंची हैं। ताजी हवा मीठा पानी और हरयाली गजब की है कि मानों यहां के फूलों और पत्तों में लालों और पन्नों का रंग दिया हुआ है। खुदा का शुक्र है कि ऐसी हरीभरी सुनहरी वलायत बादशाही बन्दों के कबजे में आई। बे दीनों और काफरों के कूडे करकटसे साफ होगई। हैदराबादियों के इस बडी दरगाह में आने सातेहजारी से पांचसदी तक मनसब पाने और हर किस्म के दस्तकारों और कारीगरों वगैरा के नौकर होने का तफसीलवार हाल लिखा जावे तो दूसरी किताब बनजावे। खुलासा यह है कि कई बूंदें समुद्रमें मिलगईं।

२९ जीकाद (आश्विन सुदि १ । २७ सितम्बर) को शाहजादा काम-बखश १० हजारी ५ हजार सवार का इजाफा पाकर बराड का सूबेदार हुआ।

जुम्दतुलमुल्क असदखां और खानफीरोज जंग एक एक हजार सवार के इजाफे पाकर ७ हजारी ७ हजार सवार के बडे दरजे को पहुंचे महाबतखां ने १ हजारी १ हजार सवार का इजाफा पाया उसका पोता मोहम्मद मनसूर विलायत से आकर मुकर्रमतखां का खिताब डेढ हजारी हजार सवार का मन-सब पाकर निहाल हुआ।

अबुलहसन के गोद लियेहुए लडके अबदुल्लाह को ४ हजारी ४ हजार सवार का मनसब मिला।

---

१ लडाई का घर।

लुतफुल्लाहखां के २०० सवार बढे जिससे उसका मनसब २ हजारी १२ सौ सवारों का होगया।

मोहम्मदयारखां ५ सदी इजाफे से २ हजारी २०० सवारों के मनसब को पहुंचा।

कुलीचखां के भाई बहाउद्दीन का बेटा मीरमोहम्मद अमीन अपने बाप के मारे जाने पर, जो बुखारा के खान अबदुलअजीजखां के सुसरे फरगंज के खान अनूरखां[1] से मेल रखने की तुहमतमें मारागया था, दरगाह में आया। बादशाह की मेहरबानी से खांका खिताब पाकर दो हजारी १ हजार सवार का मनसबदार होगया।

सफशिकनखां का बेटा मुखलिसखां जो अपने बापकी नायबी में तोपखाने की दरोगाई का काम करता था, खुद दारोगा होकर २ सदी २ सौ सवारों के इजाफे से १ हजारी ६ सवारों के मनसबसे सरफराज हुआ।

जवाहरखाने का मुशरफ इनायतुल्लाह के मनसब ४ सदी ५० सवार पर १० सवारों का और यारअली के मनसब ४ सदी ४० सवार पर १५ सवारों का इजाफा हुआ।

सैयद याहा के बदले जाने से आकिलखां का जमाई शुकरुल्लाहखां शाहजहांनाबाद के आसपास फौजदार हुआ और उसका मनसब भी बढकर ५ सदी ५[2] सो सवार से ५ सदी १५ सो सवार का होगया।

मीरअबदुलकरीमने जुरमाने की दरोगाई[3] पाकर मनचाही नाकी जमा वसूल की–

बादशाहजादे मोहम्मदमुअज्जम के नौकरों ने बादशाही सरकार में अपने दरजे के लायक मनसब पाये थे सरदारखां के बदलेजाने से लुतफुल्लाहखां उनका दारोगा हुआ।

मोतमदखां के बदलेजाने से सरदारखां फीलखाने का दारोगा हुआ।

मोहम्मदमुत्तलब ने खान का खिताब पाया।

---

१ कलकत्ते की प्रति में अनुअखां और नाअखां। २ कलकत्ते की प्रति में ३ सो सवार। ३ दंड।

सन १०९९.

किले सक्खर की फतह.

जब बादशाह को हैदराबादकी लंबी चौडी वलायत के बंदोबस्त और सब किलों तथा जिलों में नाजिमों और किलेदारों के भेजने और हैदराबादी नौकरों को नोकर रखने से फुरसतहुई तो सक्खर के मुल्क को फतहकरना चाहा, जो बीजापुर और हैदरादबाद के बीचमें था और जहां ढेढ जाति का बंदोनायक राजा था। यह कमीना बापदादों से राज्यकरता चला आता था इसके पास १२ हजार सवार १ लाख पैदल और बडे २ किले थे, जिनमेंसे उसके रहने का किला सक्खर मजबूतीमें बहुतही मशहूरथा वह हैदराबादियों और बीजापुरियों से बराबरी का दमभरता था और इन दोनोंमें से कोई भी उसको नहीं उखाडसकता था बल्कि ये नाम के मुसल्मान तो उसको अपने **पेशवा** (गुरु) की तरह से पूजते थे और अपने बुरे दिनों का **वसीला** समझते थे। बीजापुर के घेरे में उसका बेधड़क ६ हजार जंगी पैदल रसद के साथ भेजना और खान फीरोज जंग का उनको मारडालना पहिले लिखा जाचुका है वैसेही हैदराबादियों की भी उसने कई दफे मददकरके अपनी खराबी का सामान आपकर लिया था और इसलिये अब बादशाह ने रुहुल्लाहखां के बेटे खानजादखां को हुक्म दिया कि उसके मुल्क में जावे। जो वह नेकबखती से दरगाह में हाजिर होनाचाहे तो उसके मुल्कको खराब और उसकी रैयत को कतल और कैद न करे, नहीं तों जैसी उसकी करनी है वैसी सजा देवे।

खान ने वहां पहुंचकर डेराकिया और बादशाह का हुक्म भेजकर उस जंगली को गफलत की नींद से जगाया। वहांवालों के नसीबे में खराब होना घरबार और बालबच्चों से बिछुडना नहीं बदा था, इस लिये उसने बादशाही गजब से डरकर कहलाभेजा, कि मैं अपना मुल्क मुल्क के मालिक को सौंपता हूं और दरगाह में हाजिर होता हूं किसी का कुछ बिगाड न होवे और न कोई माराजावे।

---

१ कलकत्तेकी प्रति में पेदनंद और परिया।

खान ने बादशाह के हुक्म से उसके घरबार का बंदोबस्त रखकर १ घास के तिनके का भी नुकसान न होनेदिया और उसने बाहर आकर २२ सफर (मगसरसुदि ४।२८ नवम्बर) को किला खान के हवाले करदिया। फिर तो जहां दुनिया के बसने से अब तक किसीने नमाज की बांग नहीं सुनी थी वहां मुसलमानी मत का नक्कारा बजने से कान बहरे होगये। खान उसकिले और उस मुल्क में किलेदार और हाकिम रखकर हजूर में आया और उसको भी साथलाया बादशाहने खान पर बहुत मेहरबानी की। बाप ने तो गोकुलकुंडा लियाही था बेटे ने भी सक्खर के लेने में कमी नहीं रखी।

बंदानायक बहुतही काला और कुढंगा था। आधीरात की अंधेरी भी उसको देखकर शरमाती थी। न जाने उसके दिलमें ऐसा उजाला कहां से होगया कि जो दरगाह में मुलाजिमत करने को आया। रबी-उलअव्वल (पौससुदि ३।२७ दिसम्बर) को उसका सलामहुआ और उसके दरजे से जियादा ऊंची जगह उसके खडे रहने को मिली। ५।६ दिन पीछे अचानक मरगया। उसके बेटों और भाईबंदों को मनसब मिले। सक्खर का नाम नुसरताबाद हुआ और १ हरी भरी विलायत बादशाही मुल्कों में मिलगई।

हैदराबाद से बीजापुर को लौटना।

बादशाह को इस फतह और मुल्कगीरी से अपने तनबदन को आराम देना मंजूर नहीं था। हैदराबाद की आवहवा मिजाज के माफिक आगई थी, तो भी उस जगह पर रहने की मरजी थी कि जहां से बादशाही के काम जारी हों और काफिर हरबी संभा सजापावे, जो सिकंदर और अबुलहसन से दोस्ताना रखता था और अपने झूठे दावों के आगे उनको कुछ चीज नहीं समझता था।

सन् १०९९ हि० संवत् १७४४ सन् १६८८ ई० ।

इसलिये तारीख १ रबीउल आखिर १६ वहमन माहइलाही (माघ सुदि ३।१९ जनवरी) बुधवारको १ अच्छी घडी में फिर मुल्क गीरी (दिग्विजय) के लिये सवार हुये और घोडे की वाग बीजापुरकी तरफ फेरी । खान फीरोजजंग को २९ हजार सवारों से ओडनी का किला फतहकरने की रुखसतदी, जिसे सिकंदर के वाप का गुलाम मसऊदहवशी अपने मालिक के घर में गडवड होने से मुखतार होकर दवाबैठा था और खजाने जवाहर और माल ताल लेकर उस किले में रहनेलगा था ।

आजमशाह को संभा पर जाने का हुक्महुआ । बहुतसा इनाम इकराम दिया गया और ४० हजार काम किये सवार उसके साथ तईनात हुये ।

१४ (फाल्गुनवदि १ । ७ फरवरी) को वादशाह विदुर में पहुंचे और कर्मनाने तालाव पर ठहरे । यहां अवुलहसन ने, जो अपनी १९ वर्ष की हुकूमत में हैदरावाद से १ कोस पर मोहम्मदनगर में जानेके सिवाय कभी कहीं नहीं गया था और यह रोज २ का सफर करना और सवार होना उसके वास्ते बहुत मुशकिल था एक जगह वैठेरहने की अर्जकराई । हुक्महुआ कि जां सुपारखां उसको दौलतावाद में पहुंचा आवे और अहलकार लोग खानेपीने और सोने का सब सामान जो दुनिया के आराम ढूंढनेवालों के लिये जरूर होता है तैयार करदेवें और उसकी जरूरतों के लिये ५० हजार रुपये साला-ना दियाकरें । हजरतकी अजव गुनाहवखशी है कि जो मारने के लायक था उसे आराम के पालने में वैठाकर पाला और जो कसूर किये थे सो सब बख्शेगये ।

१।आगरे की छपीहुई प्रति में तो १ रबीउलअव्वल बुधवार १६ बहमन लिखी है मगर कलकत्ते की प्रति में १ रबीउलआखिर बुधवार १६ बहमन इलाही है और यही सही है क्योंकि पंचांग के हिसाब से बुधवार को १ रबीउलआखिरही थी १ रबीउलअव्वल नहीं थी १ रबीउलअव्वल तो सोमवार को थी इसलिये हमने ऊपर भी १ रबीउलअव्वल की जगह जो लेख दोषसे गलत लिखीगई है १ रबीउल आखिर बनादी हैं । २ कलकत्ते की प्रति में कमठाने ।

उस तालाब को दरिया कहें तो अत्युक्ति नहीं है जो कोई उसके उत्तर किनारे के घाट पर बैठता है तो उमर भरके लिये आराम में होजाता है। उसकी आबहवा से अच्छी कहीं नहीं पाता। उसके पानी से खेत हरे रहते हैं। किसान बादलों का एहसान नहीं उठाते। एक वर्ष बीजबोते हैं और कई वर्ष काटते हैं। यहां ख्वाजा मोहम्मदयाकूब जोयबारी मरगया। बादशाहने उसके रिशतेदारों पर मेहरबानी करके उसकी लाश बापदादों के कबरस्थान में गाडीजाने के लिये विलायत को रवानाकरा दी। ३ दिन पीछे उस रमनीकजगह से कूचहोकर ३ जमादिउल अव्वल (फाल्गुन सुदि ५।२९ फरवरी) को कुलबरगे में डेरे हुरे। बादशाहने सैयद मोहम्मदगेसूदराज[1] की कबर पर जाकर वहां के रहनेवालों की तंगी मिटादी।

सन १०९९ हि० । संवत १७४५। सन्। १६८८ ई० ।

७ दिनपीछे यहां से भी कूचहुआ। २२ (चैतवदि ८। १९ मार्च) को बीजापुर में पहुंचे गरीबों और फकीरों को खैरातें मिलीं।

३२ वां आलमगीरी सन्।

१ रमजान सन १०९९ (आषाढसुदि २।१९ जून) को ३२ वां जलूसीसन लगा। उम्मेदवारों को बादशाह की बखशिशों से मुरादें मिलीं और दुश्मनों की कमर टूटगई। इस मुद्दत में कमबख्तों के जो बहुत से किले बादशाही इकबाल से फतह हुए थे। उनका बयान लिखने के लिये कलम के घोडे को दौडनेका मैदान नहीं मिलता।

राजाराम जाट का मारा जाना।

फसादी चोर राजा रामजाट का शाहजादे बेदारबखत की सरदारी और खानजहां बहादुर जफरजंग की कोशिश और दूसरे बहादुरों की मेहनत और बहुत से खरचे से काम तमाम होना इस साल के बडे कामों में से बहुत

---

१ यह दक्षिण में नामी वली हुआ है।

बड़ा काम है, जिस के अखबार का यह खुलासा है २० शौव्वाल (भादोंवदि ६।७ अगस्त) को हलकारों की अरजियों पर से अर्ज हुई कि वह कमबख्त हर्बी १९ रमजान (आसाढसुदि १५।३ जोलाई) को बंदूक की गोली से दोजख में गया और वह इलाका उसके फिसादों से पाक होगया। सब आदमियों ने बादशाह की तारीफ और शुक्र गुजारी की।

१९ जीकाद (आश्विनवदि ८।७ सितम्बर) को उसका सिर हजूर में लाया गया। कामगारखां की शादी सैयद मुजफ्फर की बेटी से थी इसलिये उसको खिलअत घोडा और सहरा १० हजार रुपया का इनायत हुआ।

कामगारखां के बदलेजाने से अलाउलमुल्क फाजिलखां का भतीजा एत-मादखां सरकारी खानसामा हुआ। उसका मनसब भी ५ सदी १०० सवारों के बढने से २ हजारी ४०० सवारों का होगया और उसको यशमै की कलँगी इनायत हुई। उसकी जगह मिरजामोइज ने मूसवीखां का खिताब और तनदफतरदारी का खिलअत पाया।

मोहसनखां के बदलेजाने से ख्वाजा अबदुल रहीम ब्यूताती हुआ उसकी जगह मोतमिदखां दागतसहीहे की दरोगाई पर खिलअत खासा और खंजर देकर मातमसे उठायागया।

अबुलहसनहैदराबादी की ३ लडकियां थीं बादशाह के हुक्म से एक का निकाह तो सिकंदर बीजापुरी से हुआ दूसरी शेखमोहम्मद नकशबंद सहरंदी के बेटे मोहम्मद उमर को ब्याहीगई। तीसरी की शादी असदखां के बेटे इनायतखां से थी, उसको खिलअत घोडा हाथी और सहरा इनायत हुआ।

मुखलिसखां मीरआतिश किशना नदी का पानी बीजापुर में लाने के लिये खंजर पाकर रुखसत हुआ।

---

१ कलकत्ते की प्रति में २३ शव्वाल (भादोंवदि १०।१० अगस्त)।
२ लडनेवाला काफिर हिंदू। ३ कलकत्ते की प्रति में—कलगी और यशम की छडी।
४ कलकत्ते की प्रति में यों लिखा है कि मोहसनखां की जगह मोतमिदखां दाग और तसहीहे का दरोगा हुआ और एतकादखां उसकी बीबी के मरजाने से जो अमीरुल उमरा शायस्ताखां की बेटी थी खिलअत खासा और खंजर देकर मातम से उठाया गया।

मुरशिदकुलीखां कदीमी के बेटे फजलअलीको खानी का खिताब और दीवान आला की कचहरी के वाकिआलिखने का ओहदा इनायत हुआ। खिताब देनेके वक्त बादशाह ने फरमाया कि इससे पूछो कि तू अपने नाम परही खान लगाना चाहता है या बाप का खिताब मांगता है। उसने बाप का खिताब बाजी रयायतों के खातिर से पसंद किया, तो फरमाया कि मैं और मेरे मां बाप अलीपर कुरबान। इस नादान से कहो कि अली को छोडकर कुली होता है फजलअलीखां ही बेहतर है।

इसीतरह की एक और बात भी याद आई है। वह यहां लिखता हूं। एक हिंदुस्तानी सैयद ने जिसे हजरत पहिचानते थे अर्जकराई कि खानजादों[1] ने कुरान याद करलिया है हजूर में सुनाने की इजाजत पाने के उम्मेदवार हैं। एक मुसाहिब को हुक्म हुआ कि रात के वक्त ले आना। जब हाजिर हुए तो मुसाहिब ने अर्जकी कि फलाने के बेटे हाजिर हैं फरमाया कि राफजी[2] का नाम लेतेही उसने तअजब करके फिर अर्ज की कि यह तो फलाने हैं फरमाया हां जो तुमको यकीन नहीं आता है तो दोनों के नाम पूछो। वह पूछने गया तो एक का नाम हसनअली और दूसरे का हुसेनअली[3] था। बादशाह ने फरमाया कि मैं और मेरे मां बाप अली के कुरबान, हिंदुस्तानियों को ऐसे नामों से क्या काम। बुरी २ गरजों से राफजियों के कुसंग में फंसजाते हैं और सीधा रस्ता छोडकर उलटे चलते हैं।

नवाब मिहरुन्निसाबेगम को दिल्ली जाने की इजाजत हुई। लुतफुल्लाहखां को पहुंचा आने का हुक्म हुआ।

फीलखानेका दरोगा सरदारखां खिलअत और १०० सवारों का इजाफा पाकर डेढहजारी ६०० सवारों का मनसबदार होगया।

उर्दू का उतराहुआ काजी अबूसईद मरगया। उसके बेटों निजामुद्दीन और फैयाजुद्दीन को मातमी के खिलअत इनायतहुए।

---

१ अर्थात् उसके लडकोंने। २ शीया मत के मुसल्मानों को सुन्नी मत के मुसल्मान राफजी कहते हैं जिसके मायने अहमके हैं शीयालोग इस नाम से चिढते हैं और सुन्नियों को बुरा कहते हैं। ३ ऐसे नाम बहुत करके राफजियों के होते हैं।

सियादतखां के बदलेजाने से अर्जेमुकर्रर की खिदमत अफरासियाबखां को मिली ।

शाहजादा दौलतअफजा मरगया। अली आदिलखां बीजापुरी के मकबरे में हुक्म से गाडागाया ।

जवाहरखाने का मुशरिफ इनायतुल्लाह नव्वाबजीनतुल निसाबेगम की सरकार का खानसामाँ हुआ ।

खानजहां शाहजहानी का बेटा लशकरखां जिसका मनव्वरखां खिताब था बीजापुर का किलेदार हुआ । सरदारखां के बेटे हमीदुद्दीनखां ने बाप के बदले-जाने से फीलखाने की दरोगाई पाई ५ सदी १ सदी होगया ।

बादशाहजादे आजमशाह और खानफीरोज जंगकी फतहों का हाल ।

आजमशाह और फीरोजजंग जो संभा को सजा देने के लिये रुखसत हुए थे, पहिले किले मलगांव[1] पर गये, जो बीजापुर के मजबूत किलों में से था। थोडेही दिनों में मोरचे दौडाकर, मारे तोपों के अंदरवालों को घबरादिया, जिन्होंने नादानी से बीजापुर की तरफ के हाकिम के मरजाने पर उसके कम उमर लडके को अपना सरदार बना रखा था । आखिर अपनी चलती न देखकर उन लोगों ने अमान मांगी । किला फतह होगया । आजमनगर नाम रखागया । उस लडके ने भी आजम्म शाहके वसीले से हजूर में आकर अपने लायक मनसब पाया ।

आजमशाह छावनी में रहने का मौसम आजाने से चलागया । फीरोज-जंग ने औडनी का किला घेरकर पहिले तो मसऊदगुलाम को बादशाही नौकर होजानेका पैगाम भेजा और फिर उस बेवकूफ बूढे के कबूल न करने पर उसके आबाद इलाकों को उजाडकर जलादिया और जो मौत के मारे किले में से लडने को आते थे उनको मारा। मोरचे बढाकर तोपों की मार से

१ कलकत्ते की प्रति में बलगांव ।

किलेवालों को तंग करदिया। आखिर मसऊद ने अमान मांगी और १८ शव्वाल (भादोंवदि ४।९ अगस्त) को मौतकीसी तकलीफ पाकर किले से बाहर निकलआया। वह मजबूत किला अपने जिलों समेत उसकी गंदी हकूमत से पाक होकर इमतियाजगढ कहलाने लगा।

सियादतखां ने खानफीरोजजंग की अरजी हजूर में लाकर खिलअत पाया। शादयाने बजनेलगे। जो लोग हजूर में खडे थे उन्होंने मुबारकबाद दी।

बादशाह की दरगाह में हरेक गुनहगार के कसूर बख्शे जाते हैं, इस लिये वह कमबख्त मसऊद भी, जो हजूर में बुलाये जाने के लायक न था, बुलाया गया। खां का खिताब ७ हजारी ७ हजार का मनसब, मुरादाबाद की फौजदारी और जागीरीदारी देकर उसका दरजा बराबरवालों में बढाया-गया, और यह हुक्म फरमाया कि जबतक रहे खानफीरोजजंग के लशकर में रहे। उसके बेटे और भाई बंद भी बडे दरजोंपर पहुंचे।

सन ११०० । संवत् १७४५ । सन् १६८८ ई० ।

९ सफर (मार्गशीर्षसुदि ७।११ नवम्बर) को खानफीरोजजंग किले का सामान असबाब लेकर हजूर में आया। उसपर बडी मेहरबानी हुई। एतमादखां खानसामां को फाजिलखां का खिताब मिला। अमानतखां के बेटे मीरहुसेन[1] ने भी बाप का खिताब पाया।

ताऊन अर्थात् महामारी का फैलना।

खानफीरोजजंग कई दिन तक हजूर में रहकर संभाकी जड उखाडदेने के लिये रुखसत हुआ फिर बादशाह ने भी कूच करना चाहा, जिसके वास्ते रबीउलअव्वल सन् ३२ की पहिली तारीख (पौषसुदि ३।१९ दिसम्बर) मुकर्रर हुई। बोझ उठानेवाले जो दूर २ के परगनों में चलेगये थे, बुलवाये गये, क्योंकि आधे मोहर्रम (मगसरबदि) से ताऊन की अजबवबा:

---

[1] कलकत्ते की प्रति में—मीरहसन।

(मरी) फैलगई । इसीसे सब घबरा उठे । खुशीजाती रही । सोग में बैठ गये । मौत ने चाहा कि आदमियों का बीज दुनिया से बिलकुल उठादें और उनकी जिंदगी के रूख को जड से उखाडडालें नहीं कहसकतें कि बडी **क्यामत** (महाप्रलय) ही आगई थी, कि जिसकी दहशत से सब छोटे बडे आदमियों की जाने निकलनें लगीं बगल और जांघ की जड में १ गांठ उठती थीं । तप और एक अजब बेहोशी होजाती थी । हकीमों की तद्-बीरें कुछ नहीं चलती थीं । इन लोगों में से भी ऐसा कोई नहीं था कि जो अपने हाल पर रहा हो और दूसरी दुनिया के देखने को न चलनिकला हो । ऐसे आदमी कम होंगे, कि जिनकी उमर की नाव मौत के भंवर से बची हो । घर के घर २।३ दिन के अंदर **नेस्ती** (विनाश) के दरया में डूबगये जो कोई बचा भी, तो उसके रिस्तेदार नहीं बचे, और वह मारे डर के अपने को मुरदाही जानता था । कोई किसी की खबर नहीं लेता था हरतर्फ अपनी अपनी पडी थी । लोगों की आधी जान रहगई थी । वह भी घडी २ मौत का रस्ता देख रही थी । सब लोग दुनिया के कामों को छोड बैठे थे । पुरानी खिदमत करनेवाली परस्तार खास औरंगाबादी महल, महाराजा जसवंतसिंह का बेटा मोहम्मदीराज जो महल में परवरिश पाकर १३ वर्ष का होगया था और मनसब भी पाचुका था, फाजिलखां सदर और दूसरे उमदा सरदार दुनिया से चलबसे । बिचले और छोटे दरजेके हिंदू मुसलमान जो मरे उनकी कुछ गिनती न थी । १ लाख से तो कम न होंगे । बहुतों के मगज में फितूर पडकर आंखें जबाने और कान बेकाम होगये । बडे आदमियों में खानफीरोजजंग की आंख में सदमा पहुंची छोटे बड़े लोगों की कौन कहे । पुरानी तवारीखों में कभी ऐसी **क्यामत** (प्रलय)

---

१ दिल्ली में जब राठोडों से लडाई हुई थी तो कोटवालने इस लडके को लाकर बादशाह के भेट किया था कि यह जसवंतसिंह का लडका है और बादशाह भी उसको जसवंतसिंह का असली लडका समझकर महल में रखते थे और अजीतसिंह को जाली लडका समझते थे और जबतक अजीतसिंह को उदेपुर के रानाने अपनी बेटी न दी ऐसा ही समझते रहे (खाफीखांन) ।

होनी नहीं लिखी है, न जिंदा आदमियों ने ऐसी हलचल जो देश महीने तक रही थी कहीं देखी और न सुनी थी ।

खुदा पर भरोसा रखनेवाले बादशाह उस मरी की मारामारी में अपने मज-बूत दिल और पक्के इरादे से कुदरत के कारखानों का तमाशा देखतेहुए उसी तारीख को बीजापुर से निकले । शुक्रहै कि एक हफ्ते के पीछेही उसकीतेजी ठंडी होगई । अखलूक[1] तक मंजिल तय करतेचलेगये । हकीमोंकी नजर में खान फीरोजजंग की आँखों का रोग जानेवाला नहीं था । इसलिये शाहजादे-आजमशाह को शत्रुओं पर जाने की रुखसतहुई ।

संभाका पकड़ाजाना और कतल होना ।

तकदीर की चुटकी से निकलकर जो तीर किसी बेदीन की जान के निशाने पर लगता है, वह उसीकी बुरी करनी का फल है, और कजाके गजब की चिनगारी जिस जलेतन के घर को जलातीहै वह उसकी छाती में दबीहुई दुशमनी की आगका फल है बात यह है कि जिन मुबारिक दिनों में बादशाह कई कामों के लिये अकलूख[2] में ठहरे हुऐ थे तब उनके कान में एक खुश खबरी पहुंची जिसके सुनने की उम्मेद उनको बहुत मुद्दत से लगरही थी । मुसलमान लोग जिस फतह की आवाज पर कान लगाये हुए थे उसीके शादयाने की गूंज आसमान तक जापहुंची । कजा की सी धाकवाले और दुशमनों के पकड़नेवाले दीनदुनिया के बादशाह को जो दुआऐं दीगईं उनका शोर आकाश पर फरिशतों की बांग से जा मिला । बादशाही इनसाफ और अहसान की बरकत से अमन अमान की बधार बंटनेलगी । फसाद सोगया । शैतान कैद में आगया । लो खोलकर कहताहूँ, कि हरबी काफिर कम बख्त संभा बादशाह के इकबाल से मुसलमानों के लशकर का कैदी होगया ।

---

१. कलकत्ते की प्रति में २ महीने । २ कलकत्ते की प्रति में-अकलूच ।
३ कलकत्ते की प्रति में अकलूच ।

पूरा बयान इस खुशी की दास्तान का यह है, कि शेखनिजाम हैदराबादी जिसका खिताब मुकर्रबखां था, बडा सिपाही और बहादुर था और इसीलिये अपने बेटों और भाई बंदों समेत २९ हजारी जात और २१ हजार सवार का मनसब उसको मिला हुआ था। वह बीजापुर से परनाले का किला फतह करने गया। जो गनीम के कब्जे में था। उसने होशियारी और खबरदारी से अपने जासूस संभा की खबरलाने के वास्ते छोडरखे थे, जिन्हों ने अचानक यह खबर उसको पहुंचाई कि वह बेवकूफ बरगी लोगों के झगडे से जो उसके अपने थे, राहेरी से खेंले के किले में आया है। उनसे सफाई करके और किले के सामानों से निश्चित होकर संगमनेर नाम जगह में, जहां उसके पेशकार कवि कलस ने बडे २ मकान बनवाये और बाग लगाये हैं, आया है और खेलकूद में लगाहुआ है कोलोपुर से वहां तक ४९ कोस का फासला था और रस्ते में ऐसे ऐसे घाटे और दरया पडते थे कि दुनिया में फिरनेवाले लोग जमीन पर वैसे बहुत कम बताते हैं तो भी खान ने नमकहलाली से अपनी जान पर खेलकर नामपर मरनेवाले थोडे से मर्दोंके साथ धावा बोलदिया। उस कमबख्तके जासूसों ने बहुतही कुछ उससे कहा कि मुगलों की फौज आती है मगर गफलत और गरूर के मतवाले ने भवों के इशारे से उनका सिर उडवादिया, और यह झूठबातकही, कि ये बेखबर लोग बावले होगये हैं। मुगलोंकी फौज यहां नहीं पहुंचसकती। इतनेही में वह बहादुर खान बहुतसी तकलीफें उठाकर हवा और बिजली की तेजी से उसके सिरपर जापहुंचा सम्भा ४।५ हजार दखनी बरछैतों के साथ लडने आया। मगर कजा का तीर तकदीर की चुटकीसे छूटकर कवि कलसके लगा। संभा थोडासा लडकर भागा और कवि कलसकी हवेली में जा छुपा। उसने तो जाना था कि मुझे किसी ने नहीं देखा, मगर हरकारों ने खान को खबर देदी। खां ने दूसरे भागे

---

१ कलकत्ते की प्रति में खेलना और खिलना। २ कलकत्ते की प्रति में कोलापुर।

बुर्जों का पीछा न करके हवेली को ही आवेरा उसका बेटा इखला-सखां कई बहादुरों के साथ सीढियों से उतरता हुआ भीतरही भीतर चलागया और संभा को उसके मुसाहिब कवि कलसमेत जहन्नुम का रास्ता दिखाने के लिये खानके हाथी तक घसीटता ले आया। उसके २६ उमदा सरदार भी उसकी औरतों और लडकियों समेत पकडेगये।

यह खुशी की खबर गांव अखलूज में जिसका नाम फिर असअद-नगर रखा गया बादशाह को पहुंची। उर्दू के कोटवाल सजावारखां के बेटे हमीदुद्दीनखां को हुकमहुआ कि खान के पास जाकर उस जंगली को जंजीरों में जकडलावे। वह अपनी उमदा तदबीरों से उसको उस मुल्क से निकाल लाया। बादशाह के इकबाल से उस काफिर का कोइ भी मददगार कुछ हाथ पांव नहीं मारसका १ जमादिउल अव्वल (फागुनसुदि ७। १६ फरवरी) को, जब कि असदनगर से बहादुरगढ में डेरे लगाये थे, बादशाह ने बडे गुस्से और मुसल्मानी मत के ता "अस्सुब" (धर्मांध होकर) से हुक्म दिया कि उस गुमराह को २ कोससे 'तखतेकुलाह' (जकडबंद) करके और उसके साथियों को "मजहके" (उपहास) के कपडे पहिनाकर तरह २ से तकलिफें देते ऊंट पर सवार करके ढोल बजाते और बुरा कहतेहुऐ उर्दू में लावें, जिसके देखनेसे मुसल्मानों की खुशी बढे और कैदीनों की जान निकले। वह रात कि जिस के सुबह होते ही उसको दरगाह में लाये सचमुच शबरात की रात थी। किसी को भी उस तमाशे के देखने की उमंग में नींद नहीं आई और वह दिन ईद का दिन था जो जवानों और बूढों को उस तमाशे की खुशी में पूराहुआ।

जब उस कतलकरने के लायक संभाको तमाम उर्दू मे फिराकर दीवान आम में बादशाह के सामने लाये, तो हुक्म हुआ कि कैदखाने में लेजावें। इसके

१ कलकत्ते की प्रति में सरदारखां।

साथही आपने तख्त से उतर कर कालीना कोना मोडा और जमीन पर सिर टेककर खुदा का शुक्र अदाकिया और उस मुराद पूरी करनेवाले और कर्मों का बदला देनेवाले की दरगाह में दुआ के वास्ते हाथ उठाया। तकदीर के कारखाने का यह तमाशा देख के इबरत (डर) का इसकदर जोश हुआ कि "आकबत" (परिणाम) को देखनेवाली आंखों में आंसू भरआये।

वह वेदीन वे वफा संभा बादशाह की मेहरबानीयों की बेकदरी करके एक दफे तो हजूर से अपने बापके साथ, और दूसरी बेर दिलेरखां के पाससे, छल कपट करके भागगया था, इसलिये उसी रात को उसकी आंख अंधी करदी गई। दूसरे दिन कवी कलस की जबानं कटवा दीगई। वह गांठ जिसका खुलना कमसमझ लोगों की नजरमें आताही न था, मुसलमानों के बादशाह की नेकनीयती से इस तरह पर खुलगई, कि नादानों को मुशकिलों के हल होजाने का रस्ता मिलगया और उनके दिलों पर खुदाकी कुदरत का नकशा जमगया। भला, कहां संभा और कहां उसका आसमान जैसे राहेरी के ऊंचे किले में बैठना, और कहां यह कैद और ख्वारी। मौतने उसका रस्ता खोलदिया था वहीं शिकारी की तरह से खैंचती हुई

१ खाफीखां लिखता है कि उसवक्त कमबख्त कवि कलश ने जो हिंदी के शायर (कविता) कहने में अच्छी तबीअत रखता था और जिस के सिर गरदन और सारे अंग प्रत्यंग शिकंजेमें जकडे हुये थे आंख और जबान के सिवाय और किसी अवयव का चलाना उसके वशमें नहीं था तो भी आंख और जबान से संभा को संबोधन करके तुरत फुरत ही एक हिंदी शइर (दोहा) इस मजमून का कहा कि हे राजन्! तुझे देखतेही आलमगीर बादशाह को ऐसा तेजप्रतापवाला होकर भी तखतपर बैठे रहने की ताकत नहीं रही और विवश होकर तेरी ताजीम के वास्ते तखत से उठकर नीचे उतर आया।

अपने जाल में ले आईथी। संभा के पकडे जाने की सबसे एक अच्छी तारीख या जनो '**फर जंदे संभा शुद असीर**' आजमशाह के वकील इनायतुल्लाह ने कही थी इस लिये उसपर बहुत मेहरबानी हुई और मुकर्रखां को इस बडी बंदगी के इनाम में खानजमा फतहजंग का खिताब ५०

---

१ खाफीखां ने लिखा है कि बादशाह ने आजमशाह को तो बहुतसे नामी और लडाईयां लडे हुये अमीरों के साथ काफरों (हिंदुओं) को सजा देने के लिये बहादुर गढ और गुलशनाबाद की तर्फ और खान फीरोजजंग को १ लायिक फौज से किलों के फतह करने के वास्ते राजगढ वगैरा की तरफ भेजा था और शेखनिजाम हैदराबादी जिसका खिताब मुकर्रबखां था बादशाह के जानेपहिचाने हुये बहुत से बंदों के साथ संभा के ऊपर रुखसत हुआ था। उसने परनाले का किला फतह करने के वास्ते कोलापुर पहुंच कर मरहटों की खबर लाने और संभा के मकान का पता लगाने के वास्ते उस मुल्क में हरतर्फ को तेज चालाक और सच्ची खबर लानेवाले जासूस (भेदू) भेजे संभा जो, दंगा फसाद और बुरे काम करने में अपने बाप सेवा से १० गुना बढकर निकला था और इसीलिये अपना नाम संभा सवाई रखकर बापदादों से ज्यादा नामी और मशहूर होगया था अपने असली मुकाम राहेरी से निकलकर खेलने के किले में चलागया था और वहां के सामानों और दूसरी तर्फों के बंदोबस्तों से खातिर जमा करके अपने औंधे नसीबों की प्रेरणा से बादशाही फौजों के पहुंचने से गाफिल, अपने दीवान कविकलश, दूसरे सरदारों, ५ वर्ष के बेटे साहू तथा औरतों और २।३ हजार सवारों के साथ मानगंगा में नहाने और शिकार करने के वास्ते आया था जो परगने संगमनेर की सरहदपर समुंदर से १ मंजिल पर बहती है और जहां कविकलश ने एक अच्छा बाग लगाकर उस में बड़ा रंगीन महल बनाया था। वह जगह भी जंगल झाडियों और पहाडों की ऊंची नीची घाटियों से घिरी हुई थी। इसलिये संभा नहाने के पीछे वहीं रहकर ऐश उडाने लगा, क्योंकि वह अपने बापदादों का तरीका छोडकर शराब पीने और खूबसूरत औरतों की संगत में पडगया था। मुकर्रबखां यह भेद पातेही कोलापुर से ४५ कोस का धावा मारकर चुने हुये २००० सवारों और १०० पैदलों से वहां आपहुंचा।

२ इस मिसरा का अर्थ तो यह हुआ कि संभा जोरू बच्चोंसमेत पकडागया और जो अक्षरों के अंक जोडे तो ११०० होते हैं और यही उससमय के हिजरी सन के।

हजार रुपया इनाम वढिया खिलअत जडाऊ साज का घोडा सोने के साज का हाथी जडाऊ खंजर जडाऊ परदले का धोप और सात हजारी ७ हजार सवार का मनसब असल और इजाफे से इनायत हुआ उसके वेटों में से इख-लासखां को खान आलम का खिताव खिलअत और इजाफा होकर ५ हजारी ५ हजार सवार का मनसब मिला शेखमीरान ने मनव्वरखां का और शेख अवदुल्लाह ने इखतिसासखां का खिताव पाया। अहतरामखां और दूसरे उसके भाईवंदों और साथियों को भी खिलअत और मनसव मिले।

सैंतीसवां सन ११०० हि० । संवत् १७४६ । सन् १६८९ । ई० ।

उस वेदीन का फसादकरना और मुसलमानों के शहरों को लूटना उसके जिंदा रखने से वढाहुआ था, इसलिये शरीअतवालों काजियों और मुफ्तियों के फतवा (व्यवस्था) और दीनदौलतवालों (अमीरो वजीरों) की सलाहसे उसको मारना वाजिबठहरा इसलिये २१ जमादिउलअव्वल सन ३२ (चैतवदि ८।४ मार्च). को कोरागांव (फतहावाद) में मुकामहोने के पीछे १९ (चैतसुदि १।१२ मार्च) को वह कविकलससमेत, जो सब जगह उसके साथ रहा था, काफरों की मारनेवाली तलवार से मारागया।

---

१ खाफीखां लिखता है कि वादशाह की सवारी के साथ रहनेवाले कई शुभ-चिन्तकों ने इस वात में मसलिहत जानी थी कि इन कमवख्तों को जानकी अमान देकर इनके नौकरों के पास से किले की कुंजियां मंगालें, और इन को किसी किले में जन्म कैद रक्खें, परन्तु उन वदकारों ने जानलिया था कि आखिर तो उनका सिर वदला लिये जाने की सूली पर शोभायमान होगा और जो कैद किये गये तो वहुतसी ख्वारी और वेइजती होने और जिंदगी के सब स्वादोंसे विमुख रहने के सिवाय एक एक दिन नित नई मौत का होगा। इसलिये वे दोनों बुरी २ वातों के कहने पर जवान खोलकर वादशाह और वादशाही अमीरों की शान में जो मुंह में आया कहने लगे। खुदा की मरजी भी यही थी कि इन वदमाशों के फसाद की जड दक्खन में से न उखेडे और वादशाह अपनी प्यारी वाकी उमर उस लडाई और किलोंके लेने में पूरी करदें इस वास्ते वादशाह की गैरत ने यह तकाजा किया कि जो फुरसत न देकर इन फिसादियों की जिंदगी के दृक्ष और उनके फिसाद की जड काट दीजावेगी तो किले भी थोडीसी कोशिश के साथ आजावेंगे—

सैयदमोहम्मदगेसूदराज की औलादमेंसे सैयद फतहउल्लाह बहुत दिनोंतक सिपाहगरी करके अपने वतन कुल्बरगेमें रहता था। बादशाह ने,जो औलिया लोगों का बहुत भाव रखतेहैं,उसके बेटे यदुल्लाह को उसकी नेकी और फकीरी देखकर छोटेरोजे का सज्जादानशीन (गादीधर) बनाया और कई अच्छी उपजाऊ जागीरें भी बहुतसे इनामों के सिवाय दीं थीं,सो वह लशकर में फ़कीरों के दोस्त बादशाह से मिलने को आया कहने लगा कि मैं यह देखने के लिये कि काफिर (संभा) का क्या हालहोगा अपने दादा के रौजे (कबर) के पास मुराकिबा (ध्यान) करने को बैठता था। एक रात को क्या देखता हूं कि पाक मकानों में परिक्रमादेने के लिये जाताहुआ विकटपहाडों में पडगया हूं। कुछलोग मुझको पुकारते हैं और पूछते हैं कि कहांजाता है मैंने उनसे अपना इरादाकहा । वे

—बादशाह यही सोचकर वचन देने और किलों की कुंजियां मंगाने पर राजी न हुये कहने लगे कि पहिले इन दोनों की जीभें मुंह से निकालकर गालियां देने से बंद करें फिर आंखें पपोटों में से निकाल लें, इसके पीछे इन को १० । ११ दूसरे साथियों के साथ तरह २ की तकलीफ देकर मारडालें। संभा और कविकलश के चेहरों की खालमें भुस भरा कर दक्खन के तमाम बडे २ शहरों में ढोल दमामें बजातेहुये फिरावें जालिमों की सजा यही है। फिर संभा के ७ बरस के बेटे साहू और कई दूसरे मरहटेमर्दों की जान बख्शी करके गुलालबाड के हातेमें रखने का हुक्मदिया और साहूकी तरबियत (शिक्षा) के वास्ते समझदार मुवक्किलों (रक्षकों) को रखकर उसको ७ हजारी मनसब बख्शा और हजूरी मुसाहिबों की तजवीज से उसके दीवान और बखशी अलग ही मुकर्रर कर दिये। सांपके मारने सपोले के पालने आग को बुझाने और चिनारीके छोडदेने का जो फल होताहै वह बादशाह के मरतेही जाहिरहोगा, क्योंकि भेडिये का बचा आदमियों में बडा होने पर भी आखिर को भेडया ही होता है। फिर कुछ औरतें जिनमें संभाकी मा और बेटियां भी थीं दौलताबाद के किले में भेजीगईं (मुन्तखिबउललुबाब छापाकलकत्ता पेज ३९०)

---

१ कलकत्ते की प्रतिमें यदीअउल्लाह। २ कलकत्ते की प्रति में अपने रोज़े (कबरस्थान) का पृष्ठ ३२५।

बोले कि एक सूर मुद्दतों से इन पहाड़ों में रहता है तू भी हमारे साथ उसके पकड़ने की कोशिशकर ।

जब पलक खुली तो मैंने कहा कि लशकर में जाऊं और काफिर का काम तमामहोने तक गजा (मजहबीलडाई) में शामिलरहूं ।

इस बात के सुननेके वादशाह का दिल खुशहुआ । सैयद की इज्जत जो उसके लायकथी की दोदिन नहीं बीतेथे कि लोगों की मनचाही बात हो गयी । बादशाहने उसी दिन सैयद को बुलाया । तरह २ की खातिरदारी और मदद खर्च से राजीकरके रुखसतकिया और इस फतह के **शुकराने** में १० हजार रुपये नजराने के रोजे के **खादिमों** और गरीबों के वास्ते भेजे । खुद मोहम्मदके दीन की मदेदकरे ।

२१ जमादिउल आखिर (वैशाखवदि ८।३ अप्रेल) को बादशाह कोरा गांव से-इसलामाबाद चाकने का किला देखने को पधारे । शाहजादा आजमशाह जो वहां से ५ कोस आगे ठहराहुआ था, आदाबबजाने को आया और उसी दिन रुखसत होगया ।

रामा के साथियों का पकडा जाना.

इस वर्ष की खुश खबरियों में से रामा का अपने साथियों समेत पकडा जाना है । यह संभा का छोटा भाई था और कैद में था । उसके पीछे काफिरों ने इसको सरदार बनाया । इसने राहेरी में कुछ जोर पकडा था, मगर राहेरी के लेने से पहिले जब जुलफिकारखांने किलेवालों को घेरकर तंग किया, तो रामा जोगियों का भेसकरके किले से भागगया और अपनी और अपने भाई बाप और दादे का नाम और लाजका कुछ खयाल दिल में न लाया जब यह खबर हलकारों की अर्ज से सही निकली तो अबदुल्लाहखां

१ यह अनुवाद मूल ग्रंथ का ठीक आशय लेकर इस मतलबसे कियागया है कि पढनेवाले यह जानसकें कि मुसलमान लेखकों के ऐतिहासिक लेख अजहबीरंग में कहांतक डूबेहुए हैं । २. कलकत्ते की प्रति में राना । और खफीखां की तवारीख में रामराजा ।

बारह को, जो बख्शीउल्मुल्क रूहुल्लाहखां के बुलाने से उसकी नायबी में हैदराबाद को गया था, फिर बीजापुर का नाजिम होगया था और बादशाह के हुक्म से बीजापुर इलाके के २ मजबूत किलों के लेने में लगाहुआ था, हुक्म पहुंचा, कि अगर रामा उधर जावे तो उसको पकड लेखान को जासूसों ने खबर दी कि मुद्दत तक तो रामा का कुछ पता न था, पर अब ३०० के करीब लोग उस के पास जमा होगये हैं, जिनमें से अकसर के गले में सरदारी के पट्टे हैं और वे इस जिले में होकर बदनेपुर की रानी की जमीदारी में आये हैं। खान ने उन किलोंका लेना दूसरे वक्त पर छोडकर पहिले अपने बडे बेटे हुसनअली को उधर रवाना किया। पीछे से आप भी ३ दिन और ३ रात का धावा करके उस रीछनी की जमीदारी में सुजानगढ के किले के पास रात को जापहुंचा, जो तुंग-भद्रा नदी के किनारे पर है वहां रामा पनाह लेकर एक टापू में ठहराहुआ था। खान ने पहुंचतेही तलवार निकाली। और लोग तो मारेगये पर हिंदुराव रामा का भाई एकूजी, भरजी तातियैा, घुडपडे वगैरा सरदार १०० के करीब जो आदमी थे पकडेगये। रामा उस गडबड में हथियार तो क्या चार जामा और जूतियां भी छोडकर ऐसा भागा कि किसीको खबर तक न हुई। जिससे खान की इस बडी खिदमत का कुछ नाम न हुआ, बल्कि यह इलजाम लगायागया कि रामा के पकडने में उसने अनाकानी की। ऐसेही उस रीछनी पर भी शक हुआ कि छुपा रखा और छोडदिया।

बादशाह के पास पहिले तो खबर रामा के पकडेजाने की पहुंची थी और हमीदुद्दीनखां को हुक्म हुआ था कि उसको हजूर में ले आवे, मगर दूसरी खबर आने पर यह हुक्म चढा कि कैदियों को बीजापुर के किले में कैद रखें। फिर जानिसारखां को बहुतसी फौज के साथ उस रीछनी (रानी) की जमीदारी पर जाने का हुक्म हुआ। शैतान का भाई संता उन्हीं दिनों

---

१ कलकत्ते की प्रति में हुसनअली। २ कलकत्ते की प्रति में बधनोर और नधोर। ३ कलकत्ते की प्रति में एलकोजी और अंकोजी। ४ कलकत्ते की प्रति में भाविया।

में अबदुल्लाहखां नारह मुत्तलबखां और शिरजाखां के मुकाबिले करके जीत में रहा था। रानी बहुतसा जुरमाना अपने जिम्मे लेकर बादशाही लश्कर की मार धाडसे बचगई, क्योंकि उसका नाम दुनिया में कुछ अरसेतक बाकी रहनेवाला था, और अजब बात यह हुई कि हिंदूराव, भरजी और दूसरे कई कैदी ऐसे कैदखाने से; कि जहां से निकलजाना पहरेवालों को मिलाये बगैर अकल में नहीं आता था, भागगये। जब यह खबर बादशाह से अर्ज हुई तो बाकी ८० कैदी हजूर में बुलाये जाकर मारे गये। अबदुल्लाहखां की जगह लशकरखां नाजिम हुआ। उसके बेटे वजीहउद्दीनखां किलेदार और फौजदारखां कोटवाल का मनसब घटगया।

३३ वां आलमगीरीसन.

१ रमजान सन ११०० (आषाढसुदि ३।१० जून) को ३३ वां जलूसी वर्ष लगा। बादशाह को जैसे दुनिया पूजती है वैसेही बादशाह खुदा को पूजनेलगे और जैसे लोग बादशाह का हुक्म मानते हैं वैसेही बादशाह भी पैगम्बर का हुक्म उठाने में लगगये तमाम शहर को इस तरह से उन्होंने नेकियों का खजाना बख्शा और लोगों को तरह २ की मेहरबानियों से दीन और दुनिया में निहाल किया।

मूसवीखां के बदलेजाने से हाजी शफीअखां तनदफ्तर का दरोगा हुआ और मूसवीखां दक्खन का दीवान हुआ। हजूर और दूरके बंदों को बरसाती खिलअत इनायत हुए।

अबदुलअजीतखां का बेटा अबुलखैरखां राजगढ का सूबेदार हुआ।

मुखलिसखां के बदलेजाने से मुखतारखां को मीरआतिश की और मुखलिसखां को मोहम्मद यारखां की जगह अर्जमुकर्रर की खिदमत इनायत हुई।

मीरअबदुलकरीम ने करोडागंज का काम अच्छा किया था और नाज उतनाही सस्ता कर दिया था जितना कि हैदराबाद के कहत में महंगा होगया था इसलिये दरबार में कदर होकर उसको मुलतिफितखां का खिताब मिला।

सरदारखां का बेटा हमीदुद्दीन खां का खिताब पाकर शाहजादे मोहम्मद-मोअज्जम को हुजूर में लाने के वास्ते औरंगाबाद को गया। कामगारखां को बहुतसे तइनातियों के साथ शाहजादे मजकूर को महलवालियों को दिल्ली में पहुंचाआने का हुक्म हुआ।

इरादतखां का बेटा मुबारकउल्लाह इसलामाबाद चाकने की फौजदारी पर इसलामखां वालाजाही का बेटा कमालउद्दीन उस किले की किलेदारी पर शरफुद्दीनखां के बदलेजाने से इखलासकेश खानसामानी की कचहरी की वाकिआनिगारी (समाचार लिखने) पर मुकर्ररहुआ।

सलावतखां ने हजूर में पहुंचने की अर्ज कराई थी, इसलिये एतमादखां को सूरतबंदर की दीवानी और फौजदारी इनायतहुई।

जान्सिारखां अबुलमुकारक यशम के साज और दस्ते का खंजर पाकर गनीम के मुकाबिले पर रुखसतहुआ।

२शव्वाल (सावनसुदि ४।१० जौलाई) को बख्शीउलमुल्क रूहुल्लाहखां "काफिरों" से रायचूर का किला छीननेके वास्ते भेजागया। मुखतारखां उसका नायबहोकर आदाबबजालाया।

सन ११०१ हि०-संवत् १७४६-सन १६८९ ई०।

राहेरी का किला फतह होना और एतकादखां को जुलफिकारखां का खिताब मिलना।

एतकादखां ने, जो संभाके पकडेजाने से पहिले राहेरी का किला लेनेके लिये गया था जहां संभा का वतन था १९ मोहर्रम (मार्गशीर्षवदि ३।२० अक्तूबर) को वह किला फतह करलिया। संभा की और रामाकी मायें औरतें लडकियां और लडके सब पकडेगये। ज़ुम्दतुलमुल्क ने अपने बेटे की अरजी इस फतह के बाबत दरबार में गुजरानी। खिलअत खासा और जडाऊ ज़ीगा कुलंग के पर का इनाम में पाया। फतह के शादयाने बजनेलगे। सब अमीरों

(१) कलकत्ते की प्रति में यहां मोहम्मदआजम लिखा है सो गलत है क्योंकि खफगी मोहम्मदमोअज्जमपर थी मोहम्मदआजमपर नहीं थी।

ने मुबारकबादें और नजरें दीं। वियूतात के दारोगा अबदुलरहीमखां को संभा के मालअसबाब जब्तकरनेकेलिये राहेरी के किले में जाने का हुक्महुआ।

२० सफर (पौषवदि ७।२३ नवम्बर) को एतकादखांने आकर चौखट-चूमी इस अच्छी खिदमत के पलटेमें उसका मनसब बढकर ५ हजारी ५ हजार सवार का होगया खिलअत हाथी घोडा जडाऊ तरकश कमान ५० हजार रुपये और जुलफिकारखां बहादुर का खिताब भी मिला।

गरीबपरवर बादशाह का हुक्म हुआ कि संभा की मां सेवा की औरत और उसकी दूसरी घरवालियों को गुलालबाड में उसकी गुंजायिश के लायक डेरे खडे करके इज्जत और हुरमत के साथ उतारें। रानी का बाजार और मिसल जुम्दतुलमुल्क की मिसल के पास मुकर्ररहुई, जहां उसके खिदमतगार और ताबेदार उतराकरें और हरेक का सालियाना उसके मुवाफिक बंधगया।

संभाका बडा बेटा साहू ९ वर्षका था तोभी ७ हजारी ७ हजार का मन-सब राजा का खिताब खिलअत जडाऊ जमधर उरबसी हाथी घोडा नक्कारा और अलम पाकर इज्जत में बडे २ राजाओं से बढगया। उसके छोटे भाई मदनसिंह और अबधसिंह[1] को भी नवाजिशें मिलकर हुक्महुआ कि अपनी मां और दादी के पास जायाकरें, और हरेक के कामों के वास्ते बादशाही मुसद्दी तईनात होजावें जो उनके घरों का काम किया करें।

खानफीरोजजंग का बेटा कमरुद्दीनखां जो हजूर में आया हुआ था, खिलअत जडाऊ जमधर और पांचःसदी २०० सवारों के इजाफे से ढाईहजा-री २ हजार सवारों का मनसब पाकर रुखसतहुआ।

२६ सफर (पौषवदि १३। २९ नवम्बर) को नवूरीउलमुल्क रुहुल्लाहखां ने रायचुर का किला लेलिया जिसका नाम फीरोजनगर रखागया और उसको खिलअत और शाबाशी का फरमान लिखागया। उसीका

१. कालकत्ते की प्रति में ऊधोसिंह।

बेटा खानजादखां असल और इजाफे से डेढ हजारी ६०० स्वारोंका मनसबदार होगया ।

कोरागांव से बीजापुर को कूच ।

१६ रबीउलअव्वल (माहवदि ३ । १९ दिसम्बर) को बादशाह कोरे से कूच करके १० रबीउलआखिर (माघसुदि १२) को बीजापुर में दाखिल हुए ।

सन् ११०१ । हि० संवत १७४६ । सन् १६९० ई० ।

१५ दिन पीछे वहां से चलकर १० जमादिउलअव्वल (फाल्गुनसुदि १२ । १० फरवरी) को गांव बदरी में पहुंचे । बख्शीउलमुल्क बहरेमंदखां ने डेरों के वास्ते किशनानदी के किनारे पर १ अच्छी जगह तजवीन की थी वह बादशाह के पसंद आई । देखकर खुश होगये । खान को हीरों की अंगूठी इनायत की । १० महीने तक वहां डेरे रहे ।

१ दिन अदालतकी कचहरी में सलाबतखां अव्वल मीरतुजुक ने एक आदमी को हाजिरकरके अर्ज किया, कि यह कहता है, मैं बंगाले की बहुत दूर बलायत से मुरीद (चेला) होने को आया हूं । हजरत ने मुसकराकर जेब में हाथ डाला और १०० के करीब रुपये सोने चांदी के चरन खान को देकर फरमाया कि उसको देकर कहदे, कि हमसे जो नकद फायदा उठा सकता है वह यह है खान ने जब उसको वह रकम दी तो उसनेइधर उधर बखेर दी और नदी में कूदपड़ा । खान चिल्लाया कि डूबता है । बादशाह के हुक्म से तिरनेवाले उस को नदी में से पकड़कर लेआये । हजरत ने दरवाजे के अन्दर मुंह डालकर सरदारखां से फरमाया, कि एक शख्स बंगाले से आया है, उसके सिर में झूठा खियाल समाया हुआ है । चाहता है कि मेरा मुरीद होजावे ।[1]

---

१ कलकत्ते की प्रति में लिखा है कि कहीं डूब न जावें ।

दोहरा—चूहा खडा न मावे तरफल बंधी जज्ज ।
बोलेमंदी मा दखंदी खडी निलज्जं ॥

इसे मियां फर्रुखसहरंदी के पास लेजावो और कहो कि इसको मुरीद करलें और सिर पर टोपी रख दें ।

खुदा को गवाह करके कहता हूं, कि उस जमाने में शायदही कोई वली और फकीर सिवाय इस बादशाह के इस दरजे का होगा जो बादशाही के परदे में फकीरी करे और फकीरी को बादशाही के भेस से रौनकदे, मुरीद करे, उसको बडे दरजे पर पहुंचावे और फिर आसमान कीसी ताकत रखने-पर भी उसका सिर आजजा सी जमीन परही हो ।

सनसनी की फतह.

११ जमादिउलअव्वल (चैतवदि ३ । ११ फरवरी) को अखबारनवीसों की अर्जियों से दरगाह में अर्ज हुई कि शाहजादे वेदारबख्त की दहशत से सनसनी की गढी फतह होगई और जो काफिर उसमें रहते थे वे दोजखमें पहुंचा दियेगये ।

बदरी से कूच और कलकले में मुकाम.

१९ शाबान (जेठवदि ६ । १९ मई) को बदरी से कूच होकर कलकले में डेरे लगे । हाजी शफीअखां के बदलेजाने से बीजापुर का दीवान अमानतखां तनदफतर का दरोगा हुआ । उसकी जगह अबुलमुकारम ने पाई ।

---

१ कलकत्ते की प्रति में यों लिखा है ।

हिन्दी—टोपी लेदें बावरो देंदे खरे निलज्ज ।
चूहा खडममावली तो कल बंधे छज्ज ॥

और हाशिये में लिखा है कि ये दो हिंदी फिकरे (पद) सन्दिग्ध हैं तजकरेचिगत में लिखा है कि बादशाह ने यह दो फिकरे मोती बरसानेवाली जबान से कहे, जो कोई समझता है, वह उन के बाहर और भीतर के गुनों पर दीवाना (मोहित) होजाता है । २ कलकत्ते की प्रति में सिवानाफे । ३ कलकत्ते की प्रति में सरहिंदी टोपी । ४ कलकत्ते की प्रति में न देवे ।

मोतमदखां के मरजाने से दाग और तसहीहे की दरोगाई ख्वाजा अब्दुलरहीमखां को इनायत हुई।

बादशाहजादे मोहम्मदआजमशाह को खिलअत सरपेच और शाहजादे बेदारबख्त को खिलअत तरकश जड़ाऊ कमान हाथी घोड़ा सरपेच बहादुरी[1] का फरमान भेजागया।

बादशाहजादे मोहम्मदमोअज्जम के वास्ते ९ मन गुलाब और २ मन अर्क बेदमुश्क का इनायत हुआ।

दूपसिंह[2] ने वतन से आकर दरगाह में माथा टेका और राजा का खिताब[3] पाकर अपने बराबरवालों में सुर्खरू हुआ।

बहादुर[4] जफरजंग कोकलताश इलाहाबाद की सूबेदारी पर और उसका बेटा हिम्मतखां अवध की सूबेदारी और गोरखपुर की फौजदारी पर भेजागया।

सजावारखां के बदलेजाने से अबदुल्लाहखां नादेर का फौजदार और सरदारखां ४०० सवारों का इजाफा पाकर लशकर के आसपास १२। १२ कोस में अमन रखने के वास्ते फौजदार हुआ।

दरगाह में अर्ज हुई कि आजमखां कोके का बेटा सफदरखां ग्वालियर की फौजदारीमें एक गढी पर हमला करता हुआ बंदूक की गोली से मारागया।

फीलखाने का दारोगा हमीदुद्दीनखां शाहजादे खुजस्ताअखतर को औरंगाबाद से हजूर में लाया। हुक्महुआ कि बाप के पास रहाकरे।

हमीदुद्दीनखां ने मोटे २ हाथी बादशाह को दिखाये इसलिये उसको २० सवारों का इजाफा मिला।

हलकारों की अर्जियों से हजूर में अर्जहुई कि रुस्तमखां शिरजा, जो किले सितारे की तर्फ गश्त और गिरदावरी के वास्ते भेजागया था, उस पर जिले के फसादी लोग आगिरे देर तक लड़ाई रही आखिर शिरजा हारा और बालबच्चों समेत पकड़ागया।

---

१ कलकत्ते की प्रति में फरमान और बहादुरी का खिताब पेज ३३५।
२ कलकत्ते की प्रति में अंदोतसिंह अद्वतसिंह। ३ कलकत्ते की प्रति में—खिलअत और राजाका खिताब। ४ कलकत्ते की प्रति में खानजहां बहादुर।

३४ वां आलमगीरी सन.

१ रमजान (जेठसुदि ३ । ३० मई) से ३४ वां जलूसी वर्ष लगा बादशाहने नेकी और इनसाफ से सब लोगों को लाभ पहुंचाया ।

खिदमतखां खोजे के बदलेजाने से खिदमतगारखां खोजामहल का नाजिर और जवाहरखाने का दारोगा हुआ ।

खिदमतखां आलाहजरतके रौजे (ताजगंज) की **मुतवल्लीगरी** पर बैठायागया और यह भी हुक्महुआ कि हरेक सूबे के अहलकार दो दो हजार रुपया **अकामत (समाधान)** के नाम से उसके पास पहुंचा देवें ।

लुतफुल्लाहखां घाटून के **घाटे** की तर्फ रुखसतहुआ और शेख अबुलमकारम टोदा और पांच गांव की थानेदारी पर गया ।

रूम के कैसर का सफीर अहमदआका बुखारा का एलची नजरबे और काशगर का वकील अबदुलरहीमबेग **नियाजनामे**-और तुहफे लेकर हजूर में आये हरेक को साथियों समेत मुलाजिमत करने ठहरने और रुखसतहोने के दिनोंमें खिलअत जवार हाथी घोडे और नकद रुपये इनायतहुए उनके हाथ उन बादशाहों के वास्ते स्वर्ग जैसे हिंदुस्तान के तुहफे और खतों के जवाब भेजेगये ।

हमीदुद्दीनखां आजमशाह की फौज में खजाना पहुंचाने को गया ।

मीर नूरुद्दीन मुरतिजाबाद मिरच के मजबूत किले का किलेदार हुआ जांनिसारखां खिलअत और हाथी पाकर गनीम को सजा देने के लिये गये ।

मूसवीखां के मरजाने से अमानतखां का बेटा दयानतखां दक्खन की सूबों का दीवान हुआ ।

मूसवीखां सैयद खानदानी था । अकलीइल्मों में इका था शाइर भी अच्छा था । शाहनवाजखां का जमाई और बादशाह का साढू था । बडा खैरख्वाह था ।

---

१ कलकत्ते की प्रति में ख्वाजा. २ कलकत्ते की प्रति में खतानोर और खताऊं. ३ कलकत्ते की प्रति में बोदा पांची गांव और बांचीगांव । ४ साइन्स विज्ञान,शास्त्र ॥

सन ११०२।

१९ सफर (मगसरबदि ५।६।११ नवम्बर) को उम्दतुलमुल्कअसदखां हीरों की जडीहुई कुरानकी हैकेल[1] खिलअत खासा और ९०० मोहरों का घोडा पाकर किशनानदी के पार गनीम के उपर गया उसके साथ जो अमीर तइनातहुए उनको भी खिलअत जवाहर तल्वारें घोडे और हाथी इनायत हुये। दूसरोंने अपनी हालत के मुवाफिक खिलअत पाये।

हयातखां के मरजाने से आबदारखाने की खिदमत भी जानमाजखाने के दारोगा मुलतिफितखां को इनायत होगई मगर सातों चौकी की खिदमत उससे उतर कर मोहम्मदमुनअम को मिली।

कलकलेसे बीजापुरको लौटना।

सन् ११०२ हि० संवत १७४७ सन् १६९१ ई० -

४ जमादिउलआखिर सन ३४ का (फागुनसुदि ५। २३ फरवरी) को बादशाह कलकत्ते से जिसका नाम कुतवाबाद रखागया था लौटकर बीजापुर के किले के बाहर रसूलपुर दरवाजे के सामने ठहरगये।

सन् ११०२ हि० संवत् १७४८ सन् १६९१ ई०।

२२ रजब (वैसाखवदि ९।१२ अप्रेल) को आजमशाह के वकीलों के बदलेजानेसे खानजहांबहादुर पंजाब का सूबेदार कियागया और उसका बेटा हिम्मतखां उसकी जगह इलाहाबाद की सूबेदारी पर मुकर्रर हुआ।

२९ शाबान (जेठसुदि १।१८ मई) को बख्शीउलमुल्क बहुरेमंदखां जो गनीम को सजादेने के वास्ते गया था हजूर में आकर पांचसदी के इजाफे से साढे तीनहजारी ३ हजार का मनसबदार होगया।

मुखतारखां गनीम को सजादेनेगया। मुफ्तखरखां को जो उसके पास तइनात था हुक्म हुआ कि शोलापुर तक जाकर शेखुलइसलाम को, जो बुलाया हुआ आरहा है अगुआ होकर लावे।

---

१ गले में लटकाने का खलता। (कलकत्ते की प्रति में हैकल जडाऊ कमर समेत)।

३९ वां आलमगीरीसन ।

१ रमजान (जेठसुदि ३।२० मई) से ३९ वां जलूसी वर्ष शुरूहुआ सब लोग खुशहुये और मुसल्मानी मजहब के बढने से मुसलमानों के दिलबढे।

९ (जेठसुदि १२।२८ मई) को बादशाह ने चिनजीकी तर्फ गनीम के फसादकरने की खबर सुनकर शाहजादे कामबख्श को भेजा । १ हजारी ५ हजार सवार का इजाफाकिया । खिलअत सरपेच नीमाआस्तीन खंजर तल-वार ढाल कलगीजडाऊ बौंक लीना और सोने के साज के २० घोडे चांदी के साज का हाथी और २लाख रुपये नकद इनायत किये ।

बख्शीउलमुल्क बहरेमंदखां वगैरा अमीर उसके साथ तैनातहुये । उनको भी खिल्अत जवाहर घोडे और हाथी बख्शेगये ।

इसलामगढ का जमीदार दीनदार हजारी हजारसवार का मनसब खिलअत घोडा हाथी और राजाका खिताब पाकर अपने वतन को रुखसतहुआ ।

राजाबिशनसिंह की अरजी जो उसने सोने के कुंजी के साथ भेजी थी दरगाह में पहुंची । उसमें लिखा था कि सोकरकी गढी ३ रमजान (जेठ-सुदि ५।२२ मई) को काफिरों के हाथ से छुडालीगई और गुमराहलोग खराब होकर कोनों कुचालों में छुपगये ।

१० शव्वाल (असाढसुदि १२।२७ जून) जो हमीदुद्दीनखां गनीम को सजादेने के लिये जडाऊ जीगा पाकर सक्खर की तर्फ रुखसतहुआ ।

मुख्तारखां मीर आतिश को हाथी और खिलअत देकर रायबाग और ओफरी की तर्फ गनीम पर भेजागया ।

गाजीउद्दीनखां बहादुर फीरोजजंग और उसके बेटे चीनकुलीचखां के लिये इयनियां भेजीगई ।

---

१ कलकत्ते की प्रतिमें लिखा है कि इस इजाफे से उसका मनसब बीसहजारी १५ हजार सवारों का होगया । २ कलगी और दवात । ३ मांक । ४ कलकत्ते की प्रतिमें २ शव्वाल ।

सलाबतखां के बदलेजाने से लुतफुल्लाहखां खास चौकी के बंदों का दारोगा हुआ।

मुखलिसखां कौरबेगी रूहुल्लाहखां के बेटे खानेजादखां और जांनिसारखां का मनसब असल और इजाफे से दो दो हजारी सात सात सौ सवारों के होगये।

सलाबतखां का मनसब असल और इजाफे से ढाईहजारी १२ सौ सवारों का सैयद सैफखां का असल और इजाफे से हजारी [1]६०० सवार का मोहम्मद-यारखां का असल और इजाफे से डेढहजारी [2]७०० सवार का और खिदमतगारखां का हजारी २०० सवारों का होगया। लुतफुल्लाहखां एक कसूर करके ढाईहजारी १ हजार सवार का मनसब खोबैठा।

बादशाहजादे मोहम्मद मोअज्जम के दिन फिरना।

खफगी के शुरू में इजाजत न थी कि वह और उसके बेटे सिर के बाल भी खोलें। जब ६ महीने इसतरह से गुजरगये, तो खिदमतखां नाजिरने, जो आलाहजरत का नायब था और पुराना खिदमतगारहोने से बात कहने की जुरअत रखता था, इस मामले में बहुतसा कहा, तो हजामत बनाने की इजाजत हुई फिर मुद्दतों के पीछे गुस्सा थोडा थोडा करके घटा और मिजाज में मोहब्बत आई तो सरदारखां को जो उसका निगहबान था, कुछ दुआयें दी गई, कि उस कैदी के पास पहुंचाकर कहे, कि उनको पढाकरें, जिससे मेहर-बान खुदा हमारा दिल उसकी तरफफेरे और उसको हमारी जुदाई के दुखसे छुडावे इसमें एक अजब भेद है। खान ने अर्जकी कि छोडना तो हजरत के अखतियार में है। फरमाया कि हां हो, लेकिन खुदाने जो अपनी हिकमत खूब जानता है। हमको दुनिया का हाकिम बनाया है। जहां कोई जालिम किसी गरीब पर जुल्मकरता है तो उसको उम्मेद होती है कि हमसे फरयाद-करेगा और अपना इनसाफ पावेगा, और इस शख्स (शाहजादे) पर तो

१ कलकत्ते की प्रतिमें डेढहजारी ७ सौ सवार। २ कलकत्ते की प्रति में ४०० सवार।

दुनिया के बाजे बखेडों से हमारे हाथ से ज़ुल्म हुआ है और अभी वक्त नहीं आया कि हम इसको छोडदें इसकी दौड खुदाकी दरगाह के सिवाय और कहीं नहीं है इस लिये इसको उम्मेददिलानी चाहिये सो हमसे उम्मेद न तोडे और खुदा से पुकार न करे और जो करे तो हमारे वास्ते भागने की जगह कहां है ।

खुदाकी मसलिहत में तो यह बात ठहरचुकी थी कि इस शाहजादे का तप और तेज दुनिया में चमकेगा और बादशाही का तख्त उसके शरीर से शोभा पावेगा इसवास्ते बादशाह का ध्यान उसकी तरफ खिंचा और उसे कैद से निकालने और दुनिया पर उसकी छाया डालने के लिये होशियारी से धीरे २ तजवीजें कीं जैसे बीमार का इलाज आहिस्ते २ कियाजाता है जल्दी करने में उसकी जान पर आबनती है ।

दूसरी दफे फिर जब बदरी से कूच होनेलगा सरदारखां को हुक्म हुआ कि जब हम सवार होजावें तो दौलतखाने का डेरा वैसाही खडारहे और उनको उनकी जगह से वहां लेजावे और सब मकान दिखावे घडी २ भर तक हर जगह बैठावे जिससे उनके तन बदन और होश हवास खुशी और तमाशे से दुरुस्त और ताजे होजावें ।

जब ऐसाही कियागया तो बादशाहजादे ने निगहबान से फरमाया कि मुझे तो दरशन चाहिये । दरशन चाहनेवालों को मकानों के दिखाने से क्या हो ।

शाहजादे मोअज्जमकी मां का मरना ।

होते २ जब बादशाहजादेकी मा नव्वाबबाई के मरने की खबर दिल्ली से पहुंची, तो दीवानखास से उसके मकान तक सरायचे खिचवाकर गली बनवाई गई और बादशाह ने जेबुन्नीसाबेगम के साथ जाकर मातमपुरसी की । फिर बहुत दिनों पीछे ४ जीकाद (सावनसुदि ६।२० जौलाई) को बादशाह के दर्शन हुये और हुक्म हुआ कि जुहर की नमाज हजरत की खिदमत में पढाकरें और जब हजरत जुमें की नमाज पढने को जामामसजिद में आवें तो उनको जुमें की नमाज पढानेके लिये दौलतखाने की मसजिद में लेआया

मारें। ऐसेही कभी कभी हुक्म से लड़ने के लिये किले के दरवाजे तक जाने पाते थे और कभी बाग और शाहाबाद के तालाब की हवाखाने के लिये, जो बादशाह का बनाया हुआ था, ले जाते थे।

यों होते २ शिकक मिटगई और एतकादखां महली को हुक्म हुआ कि शाहजादे के घरवालों को दिल्ली से हजूर में लेआवे।

मोअज्जुद्दीन और मोहम्मदअजीम को ९।९ हजारी ३।२ हजार सवार के मनसबको मिले। १ दुजरते अखतर को खिलअत इनायत हुआ और इन्होंने इस मनसबका सलाम दीवान आम में आकर किया।

मुखलिसुद्दीनखां को खिलअत और हाथी इनायत हुआ।

४ जीकाद (सावनसुदि ६।१० जोलाई) को बख्शीउलमुल्क रूहुल्लाहखां खिलअत पहिनकर सक्खरकी तर्फ रुखसत हुआ और उसके साथ के तइनाति-यों पर भी इनायतें हुईं।

सलाबतखां का बेटा तहव्वुरखां शाहजादे कामबख्श की फौज की हरावली पर तइनात हुआ पहिले ८ सदी ३०० सवार था अब १ सदी १० सवार का इजाफ मिला।

लुतफुल्लाहखां फिर बहाल हुआ।

शाहजादे मोहम्मद मोअज्जम के नौकरचाकरों को जो दिल्लीसे औरंगाबाद में आगये थे सफशिकनखां हजूर में लेआया।

सन् ११०३ हि. संवत् १७४८ सन् १६९१ ई.

हरकारों की लिखावटों से अर्ज हुई कि जुम्दतुलमुल्क असदखां ने २१ मोहर्रम (कार्तिकबदि ७।८।४ सितम्बर) को खरपे में शाहजादे कामबख्-शकी मुलाजमत की और ६ रबीउलआखिर (पौषसुदि ७।१९ दिसम्बर) को दोनों चिनजी में पहुंचे।

---

१ कलकत्ते की प्रति में इसके आगे मोहम्मदरफीअउलकदर को सात हजारी हजार सवार का मनसब मिलना लिखा है।

७ (पौषसुदि ८ । १८ दिसम्बर) को जुमामसजिद में एक दीवाना तलवार खैंचकर वादशाह की तरफ दौडा किरावलों ने पकडलिया । सलाबतखां के हवाले हुआ ।

१३ (पौषसुदि १४।२४ दिसम्बर) को शिकार की सवारी में आजमशाह और वेदारवखत ने आकर मुलाजमत की और सवारी में साथ रहे । फिर उसी जगह से नुसरतावाद सक्खर को रुखसत होगये ।

वख्शीउलमुल्क वहरेमंदखां जो शाहजादे का कामवख्श की फौज से बुलायागया था २० (माघवदि ७।३१ दिसम्बर) को हजूर में पहुंचा ।

सन् ११०३ हि. संवत् १७४८ सन् १६९२ ई.

७ जमादिउलअव्वल (माघसुदि ८।१६ जनवरी) को नरवेल[1] का किला फतह करने के इनाममें जुलफिकारखां वहादुर का मनसव असल और इजाफे से ४ हजारी ढाई हजार सवार का होगया ।

१९ शावान (जेठवदि ७ । २७ अप्रेल) को शाहजादे मोअज्जुद्दीन के बेटे आअज्जुद्दीन[2] अजीजुद्दीन और मोहम्मदअजीम के बेटे मोहम्मदकरीम और फर्रुखसियर हजूर में हाजिर हुए खिलअत और जवाहर मिले रोजीनेभी वढे ।

फिर कुतुबाबाद में आना

२६ शावान (जेठवदि १३ । ४ मई) को वादशाह की सवारी बीजापुरसे चलकर फिर कुतुवावाद में दाखिल हुई । जव तक वहां रही जुमे और ईदों की नमाजों के लिये वादशाह बीजापुरमें जाया करते थे ।

खालिसे का दफतरदार रशीदखां हैदरावादके वाजे खालिसों की जमा की जांच और मालकी गिरदावरी के लिये भेजागया । इनायतुल्लाह जो रोजीनेदारों का मुसतोफी और खानसामां की कचहरीका वाकिआनवीस था खां का खिताव पाकर रसीदखां का नायव हुआ और उसका मनसव भी असल और इजाफे से ६ सैदी[3] ५० सवारों का होगया ।

---

१ कलकत्ते की प्रति में नरमल । २ कलकत्ते की प्रति में अज्जुद्दीन ।
३ कलकत्ते की प्रति में ८ सदी ।

सरदारखां जो पुराना खानाजाद और भरोसेका बंदा था मरगया। सच्चा खैरख्वाह था। भीतर और बाहर उसका एकसा था। फकीरों की मोहब्बत से खाली नहीं था। उसका लायक बेटा हमीदखां कोटवाली और उसके दूसरे कामों पर मुकर्रर हुआ।

पांचोंवक्त की नमाज पढने और अलग बैठने के लिये दीवानखास के पास मसजिद बनती थी। उसमें कई पत्थर बादशाहने भी सवाब कमाने के लिये अपने हाथ से लगाये।

३६ वां आलमगीरी सन्

इन्हीं खुशी के दिनों में रमजान सन् ११०३ (जेठसुदि २। ८ मई) से ३६ वां जिलूसी सन् लगा।

२ (जेठसुदि ३। ९ मई) को शाहजादा मोअज्जुद्दीन असदनगर की तर्फ **बलवाइयों** को सजा देने के लिये रुखसत हुआ। वालाबंदसमेत खिलअत सरपेच २१ घोडे और १ हाथी उसको मिला और मनसब भी हजारी हजार सवार के इजाफे से १० हजारी ३ हजार सवार का होगया।

शाहजादे रफीउल्कदर का मनसब हजारी जात के बढने से ८ हजारी ७ हजार सवार का होगया।

शाहजादे खुजस्ता अखतर को ७ हजारी मनसब नया मिला।

मामूरखां के बदले जाने से औरंगाबाद का सूबेदार आतिशखां हुआ और मामूरखां को "सर्रा" की फौजदारी मिली। पहिला डेढहजारी ६०० सवार और दूसरा हजारी ५०० सवार था दोनों ने ४। ४ सौ सवारों का इजाफा पाया।

---

१ कलकत्ते की प्रति में अमानतखां। २ कलकत्ते की प्रति में बीर। ३ कलकत्ते की प्रति में पहिले का ३ सौ और दूसरे का ४ सौ सवार इजाफे पाना लिखा है।

सैयदशुजाअतखां का बेटा महम्मदखां, जो पहिले हामदखां कहलाता था, नेरास का फौजदार हुआ और उसका मनसब भी ५०० सवारों की तरक्की से २ हजारी डेढ़हजार सवारों का होगया।

अबदुरज्जाकखां लारी हैदराबादी को-राहेरी के इलाके और कोकन की फौजदारी इनायत होकर हजार सवारों के इजाफे से चार हजारी ४ हजार सवारों का मनसब घोडा हाथी और नक्कारा भी मिला।

२१ शव्वाल (सावनबदि ८ । २७ जून) को शाहजादे मोहम्मद अजीम का निकाह रूहुल्लाहखां की बेटी से हुआ। शाहजादे को १७ हजार रुपये का सरपेच २० हजार रुपये के बाजूबंद जडाऊ साज का घोडा हाथी और हजारी जात का इजाफा मिला जिससे उसका मनसब १० हजारी १० हजार सवार का होगया।

कुतुबआलम और शाहआलम के रोजे के सज्जादानशीन सैयदमोहम्मद और सैयदजाफर गुजराती अहमदाबादसे हजूर में आये। खिलअत हाथी और मामूली मदद खर्च पाकर वापिस गये।

१ जीकाद (सावनसुदि ३ । ६ जोलाई) को खानजहांबहादुर जफरजंग के बेटे हिम्मतखां सूबेदार इलाहाबाद के नाम हजूर में हाजिर होने का हुक्म भेजागया। अमीरुलउमरा का बेटा बुजुर्ग उम्मेदखां भी उसके बदलेजाने से सरकार जौनपुर का फौजदार हुआ।

रूहुल्लाहखां मरगया। मा और बापकी तरफ से खानदानी था। भला आदमी दुनिया का भला करनेवाला था। बादशाह की मौसी का बेटा था। अच्छी समझ और अच्छे स्वभाववाला था, जिससे बादशाह को भी रंज हुआ। खुदाउसको बख्शे। उसके बख्शेजाने की एक बडी निशानी तो यहीहै कि हजरत उसके अखीर वक्त पर हाल पूछने के लिये पधारे थे और उसको बख्-

---

१ कलकत्ते की प्रति में ढाई हजार। २ कलकत्ते की प्रति में २ हजार।
३ कलकत्ते की प्रति में यों लिखा है कि बुजुर्ग उमेदखां हिम्मतखां की जगह इलाहाबादका सूबेदार हुआ और उसके बदलेजाने से उस का भाई मुजफ्फरखां भी सरकार जौनपुर की फौजदारी पर गया।

रोजानेमें जुम्ला दे लाये थे। उस वक्त उसने एक शेर पढ़ा जिसका यह मतलब है।

" वह गरीब किस-घमंड में मरा होगा जिसके पास [illegible] हू गया हो।

उसका नायब बेटा खानाजादखां ५ सदी १०० सवार का इजाफा पाकर २ हजारी हजार सवार का मनसबदार होगया और मुखलिसखां के बदलेजाने से कोरबेगी का ओहदा उसको मिला।

सद्रुल्लाहखांके मरनेसे भी मीरबख्शीगरीबहरेमंदखां को इनायत हुई जिसका मनसब ३ सदी ५०० सवारों के बढ़ने से ४ हजारी २००० सवारों का होगया उसकी जगह मुखलिसखां दोयम बख्शी हुआ। उस का मनसब भी पांसदी बढ़कर ढाई हजारी ७०० सवारों का होगया। उसके भाई अली-उल्लाहखां ने डेढ़हजारी ६०० सवार का दरजा पाया।

ख्वाजाअबदुलरहीम भी मरगया उसकी जगह मीरहुसेन अमानतखां मुस्तौ-फी और उसके बदलेजाने से इनायतखां तनदीवान हुआ उसका मनसब ६ सदी २० सवार के बढ़जाने से ७ सदी ८० सवारों का होगया कुछ दिनों पीछे खालसे की दीवानी भी उसको मिलगई और २० सवार फिर बढ़े।

सलावतखां ने बीमारी बढ़जाने से दिल्लीजाने की रुखसत ली मगर कई मंजिल चलकर आखरी मुकाम को पहुंचगया उस अरसे में अक्सर यह शेर पढ़ाकरता था जिसका अर्थ यह है।

हम आप जाते हैं और कबर का कोना पकड़ते हैं।

जिससे हमारी हड्डियां किसी के कंधे को भारी न हों।

यह मामलों में सीधा और सच्चा था बादशाह को राजी रखना खूब जानताथा।

१८ (प्र० भादोंबदि ५।२३ जौलाई) को बड़ी मेहरबानी से यह हुक्म हुआ कि शाहजादा मोहम्मदआज़म अदालत में आकर मुजरा किया करे और हजूर में बैठा करे।

---

१ कलकत्ते की प्रति में अलीउल्लाहखां का कोई जिक्र है।

सन् ११०४ हि० संवत् १७४९ सन् १६९२ ई० ।

१ मोहर्रम (भादोंसुदि ३।३ सितम्बर) को खिदमतगारखां नाजिर ने १९ सदी और १०० सवारों का इजाफा पाया मोहम्मदयारखां पांच सदी की तरक्की से २ हजारी ४०० सवार का मनसबदार होगया ।

काकडखां जो शाहजादे का कामबख़्श की फौज में तइनात था चिनजी का फौजदार और पांच सदी ३०० सवारों के इजाफे से डेढहजारी ७०० सवारों का मनसबदार हुआ ।

गुर्जबरदारों के मुशरफ मीरहुसेन को हुक्म हुआ कि दिल्ली जाकर मोअज्जुद्दीन के महलवालों को हजूर में ले आवे ।

मोहम्मदजमील जो हजरमोत के हाकिम का भेजाहुआ आया था खिलअत और २ हजार रुपया पाकर रुखसत हुआ ।

२३ सफर (कार्तिकवदि १०।२४ अक्तूबर) को शाहजादे रफीउलक़द्र और खुजस्ता अख्तर को हुक्म हुआ कि अपने बाप के साथ जुहर की नमाज के लिये मसजिदमें आयाकरें ।

लुतफुल्लाखां और असालतखां असअदनगर के थाने पर भेजेगये ।

शाहजादेरफीउलकदर के २ हजार सवारों की कमी पूरी होगई ।

ख्वाजामुबारिक खिदमतगारखां की नायबी में मोहम्मद मोअज्जम की सरकार का नाजिर हुआ ।

उरछे के राजा उदोतसिंह को जो खानफीरोजजंग की फौज में तइनात था एरज की फौजदारी और पांचसदी ९ सौ सवारों की तरक्की मिली जिससे उसका मनसब २ हजारी १९ सौ सवारों का होगया ।

फर्राशखाने के मुशरफ अबदुलहई ने अर्ज की कि शाहजादे मोहम्मदमोअज्जम का दौलतखाना हुक्म के बमूजिब बहुत अच्छीतरह से तैयार होगया है खिदमतगारखां और अबदुलरहीमखां को हुक्म हुआ कि सवारी में हाजिर होकर शाहजादे को दौलतसरा में पहुंचादें ।

१ रबीउलआखिर (मार्गशीर्षसुदि ३।३० नवम्बर) को हिंडौनबयाने के फौजदार कमालुद्दीनखां को वहां के सरकशों की जड उखाडदेने से पांच सदी

६०० सवारों का इजाफा मिला जिससे उसका मनसब २ हजारी हजार सवार का होगया।

आगरे के मरेहुये सूबेदार अमीरउलउमरा के बेटे एतकादखां को निवाई की फौजदारी और २ सौ सवारों की तरक्की मिली इससे उसका मनसब डेढ हजारी १२ सौ सवारों का होगया।

जुल्फिकारखांबहादुर ४ हजारी ३ हजार सवारोंके बडे दरजे को पहुंचा।

अमीरउलउमरा का बेटा खुदाबंदाखां भेडायचका फौजदार हुआ ९ सदी ४०० सवार था १ सदी बढा।

अबूमोहम्मदखां बीजापुरी ३ हजारी १ हजार सवार था ५०० सवारों की वृद्धि हुई।

मुखतारखां ३ हजारी हजार सवार था ५०० सवार इजाफेके थे ५०० सवार कमी के बहाल होगये।

हमीदुद्दीनखां ने मोटेताजेहाथी दिखाकर २०० सवार का इजाफा पाया। हजारी हजार सवार होगया।

सन् ११०४ हि० संवत् १७४९ सन् १६९३ ई०।

१५ जमादिउलआखिर (फागुनवदि १। ११ फरवरी) को शाहजादे मोहम्मदअजीम को ६० चीरे जामे सरपेच फोता नीमा आस्तीन और बाला-बंद इनायत हुआ।

सन् ११०४ हि० संवत् १७५० सन् १६९३ ई०।

ख्वासों का दारोगा अनवरखां जो हकीम अलीमुद्दीनवजीरखां शाहजहानी का बेटा था मरगया। उसके पास कुछ नहीं निकला। उसकी जगह १४ रज्जब (चैतवदि १।१२ मार्च) को आवदारखांने का दारोगा मुलतिफतखा मुकर्रहुआ उसका मनसब भी १ सदी ५० सवारों के वढने से हजारी १५० सवारों का होगया। वह बादशाह के पास रहने और मिजाज पहिचान जानेसे वरावरवालों में हसद (ईर्षा) से देखा जानेलगा।

---

१ कलकत्ते की प्रति में डेढ हजार।

हरकारे के लिखनेसे अर्ज हुई, कि जुल्फिकारखां बहादुर जिन्जी के मोर्चे से १२ कोस हट आया है क्योंकि नाज की महँगी से उसका वहां रहना दुश्वार था।

इससे पहिले भी खबरनवीसों ने अर्ज की थी कि किला तो जुल्फिकारखां ने घेरा है मगर जुल्फिकारखां को गनीमने घेरलिया है रसद नहीं पहुंचती है। अगर मदद पहुंच जावे तो उसकी मुशकिल आसान हो।

उम्दतुल्मुल्क को जो चंदेवाल में ठहरा हुआ था ताकीदी फरमान लिखा गया कि जल्दी अपने बेटे की मदद को पहुंचे मगर उसने जाने में देर की तो दूसरा फरमान अदालतकी कचहरी में खास दस्तखत से लिखा गया। इस वक्त मैं हाजिर था और सुन रहा था। बादशाह फाजिलखां मीरमुनशी से फरमाते थे कि उम्दतुल्मुल्क को लिखो कि तुम तो बेटेके आशिक बनते थे, अब जो उसपर वक्त तंग आगया है तो जानेमें क्यों देर करते हो! क्या एक शेर अपने वास्ते पढ़तेहो कि—

जअ्फराक मैं महुब्बी नहीं हूं।

एक बूढ़ी गरीबनी हूं।

मुद्दई होना और बात है दावे में सच्चा उतरना और बात उधर जाने से पहिले उम्दतुल्मुल्क ने अपनी जगह पर कहा था कि अबतक हमको कोई काम नहीं फरमाया अब जो फरमावेंगे तो लोग देखेंगे कि तुर्क कैसा होता है।

यह बात हजरत के कान तक पहुंच गई थी फाजिलखां और दिवानखानेके दारोगा काबिलखां की तरफ देखकर फरमाया कि तुर्की तमाम होगई। यह क्या मसल है? दोनोंने अर्ज की, यो सुना है कि अब फिर शेखी मारकर क्योंकि तुर्की तमाम होगई। सो यही बात उस फरमान में लिखी गई।

---

१ कलकत्ते की प्रति में डेरगांव। २-१ बुढ़िया की बेटी का नाम महस्ती था वह बीमार होकर मरनेलगी तो उसकी मां ने कहा कि मैं इसके बदले मरजाऊंगी मगर जब जानलेवा बलाधनी रूप से आया तो बुढ़िया ने ऊपर लिखा शेर पढ़ा था।

३७ वां आलमगीरी सन्

--सन् ११०४ हि० । संवत् १७५० । सन् १६९३ ई० ।

१ रमजान सन ११०४ (वैशाखसुदि २ । २७ अप्रेल) को ३७ वां आलमगीरी वर्षलगा रोजों और ईद से मुसलमानों की खुशी बढी । काफिरों के कुफ्र और इस्लाम के कांटे दुनिया की क्यारियों में से झाडदिये गये । बादशाहने खुदाकी वंदगी की और रैयत के दिल मेहरबानियों से खुश किये ।

शाहजादे मोहम्मद आजम को जलंधर रोग होगया था इसलिये हजरतसे काच की पालकी इनायत हुई । और हुक्म हुआ कि इसी सवारी में बहुत सावधानी से आतारहे । शाहजादेके सिवाय और कोई पालकी पर सवार होकर गुसलखानेमें नहीं आवे । मगर कुछ बरसेपीछे असदखां और मुकर्रिबखां को भी पालकी पर सवारआने की इजाजत हुई ।

रानी दथनोर के वकील ने उसकी अरजी लाकर १ लाख हून दरगाह में नजर की ।

कामबख्शपर आफत आना

जमाने की बुराई भलाई का अजब हाल है । यह कारखाना दुखसुख की नई २ बातों से भरापडा है । यहां जो किसी को एक ग्रास मीठे हलवे का मिलता है तो उस में सौ ग्रास जहर के मिले होते हैं ऐशकी सुबह और आरामके दिनों के पीछे ही दुख और दारिद्र की रातें भी लगीहुई हैं । मतलब इस कहने का यह है कि जब जुम्मदतुलमुल्क नरपाल का किला फतह करने के पीछे खरपे में, जो करनाटक और हैदराबाद की सरहद पर है, छावनी डाले-हुये था, तब शाहजादे कामबख्श वाकन खेडे का किला लेनेके वास्ते हुक्म

---

१ कलकत्ते की प्रति में यह हुक्म यों लिखा है कि जिस किसी को सरकारसे पालकी इनायत हो उस के सिवाय और कोई बादशाहजादों शाहजादों से पालकी सवार होकर गुसलखाने में नहीं आवे । २ कलकत्ते की प्रति में नंदयाल ।

से भेजागया। वह वख्शीउलमुल्क वहरेमंदखां से मिलकर उस मुहिममें मशगूल हुआ। फिर जब यह काम वखशी उलमुल्क रूहुल्लाहखां को सौंपागया और वादशाहजादे को जुम्दतुलमुल्क की मदद पर जाने का हुक्महुआ और वह जब खरपे में पहुंचा, तो यह हुक्म आया कि तुम और जुम्दतुलमुल्क जुलफिकारखां की मदद को जाओ, जो चिनजी को घेरे हुये है। दुशमनों की भीड और रसद के नहीं पहुंचने से उसकी और लशकारियों की जान पर आवनी है।

शाहजादा जवानी के जोरों, खुशामदियों के दमझांसों में आकर और दूरदेखनेवाले तजरुवेकारों की वातों को नहीं सुननेसे अव्वल सवारी से आखिर तक, जो दूर २ की मंजिलों में होतीथीं, सैर और शिकार करताहुआ घोडे पर सवारजाता था। वहरेमंदखां, तो मीठीवातों से उसको राजी रखकर हजूरमें चलाआया और जुम्दतुलमुल्क बूढा और कमजोर होने पर भी अदव के लिहाजसे अपने ऊपर तकलीफ उठाता था-और दिलसे राजी नहीं था तो भी मंजिलभर घोडे पर आता था। लेकिन गिला दिल में रहने से दुशमनी की गांठ वंधजातीहै। इसलिये उसके मनमें भी नाराजी जोर पकडती जाती थी और वुराचेतनेवालों के कौतुकों से दोनो तरफही वीगाड होता जाता था। जब यह लशकर चिनजी के पास पहुंचा तो खाननुसरतजंग और सरफराजखां को वेठने का हुक्म हुआ सैयदखानजहांवारह का वेटा लशकरखां भी नुसरतजंग की वरावरी से ऐसी इज्जतकी उम्मेदरखता था। जब वह पूरी न हुई तो रूठकर दरवार से चलागया और फिर नहीं आया।

इसवात के वास्ते शाहजादेके आदमियों ने कहा कि यह वात दोनों वाप वेटों अर्थात् जुम्दतुलमुल्क और जुलफिरखां के वहकाने से हुई है। उधर उनके दिल में भी शाहजादे की नाराजी का पूरा असर हो गया। लोगों को

---

१ कलकत्ते की प्रति में यों लिखा है कि जब लशकर चिनजी में पहुंचा तो खाननुसरतजंग ने पेशवाई कर के मुलाजमत की वादशाहजादा दीवानखाने में बैठा और जुम्दतुलमुल्क औरं सरफराजखां ने बैठने की इजाजत पाई।

रंजडालने और बुराचाहने का मसाला मिलगया। तजमिजाज शाहजादे की खफगी बढनेलगी।

इन्हीं दिनों में ओछी समझ के कुछ कमीनों की मारफत किले में रामा से पोशीदा लिखापढी भी हुई। दुशमनों को ऐसी बातों से मनकी मुराद मिली। फिसाद और कपटकी दुकान खुलगई। बहकाने और भरमाने का बाजार भरनेलगा। नुसरतजंग तरह २ की खबरदारीसे हजार रुपये रोज किले के जासूसों को देता था उनसे सब भेदों की खबर पाकर दोनों बाप बेटों ने बादशाहको इत्तलादी और यह अख्तियार मंगालिया कि रावदलीपबुंदेला रात दिन शाहजादे की डचोढी पर डटारहे और बिना इजाजत जुम्दतुल्मुल्क के सवारी और दरबार में गैर लोगों का आनाजाना न होने दे अब तो नाराजियां जाहिर होगई और किले में जानेवाले जासूसों की लगातार खबरों से यह बात साबितहुई कि जुम्दतुल्मुल्क और नुसरतजंग की भाग और अपने बुरे नौकरों की मिलावट से शाहजादे का इरादा रात के अंधेरे में किले में जाने का है। इसपर बाप बेटे बादशाह के डर से एकदम थर्रा उठे उन्होंने लश्करके सरदारों से सलाह की और सबका एक मत होजाने से बादशाहजादे की डचोढी पर चौकी और पकड धकड औ सख्त होगई। किले के आसपास जो थानेदार थे सब बुलालिये गये। यों जो एकदम से फौज किले के घेरे पर उठी, तो गनीम को भी खबर होगई और वह अपनी सिपाहसजाकर लडने को निकला हरतरफ लडाई होने लगी। जुम्दतुलमुल्कको छावनी में शाहजादे की रखवाली की, और नुसरतजंग को मोरचों में बडी २ तोपों और किले तोडने के दूसरे सामानों को उठालेने की, ऐसी फिकर हुई, कि वे थानेदारी की कुछ मदद न करसके। हरआदमी को आपही अपनी तदबीर करनीपडी। जो न करसका वह मारागया।

इसमाइलखां मघा जो उम्दा सरदार था और जिसका मोरचा किले के पीछे था दुशमन से लडा, जिसकी बहुत भीड थी और संता की मदद थी। उसीकी कोशिश से वह जखमी हुआ। उसे उठाकर लाये। बडा नुक-

१ कलकत्ते की प्रति में रावदलपत।

ज़ंग हुआ। नुसरतजंग ने मोरचों के उठाने में बहुत जल्दीकी। पटी २ तोपें मेख मारकर बेकार करदीं। जो फौज मौजूद थी उसको जमा किया और सब चीजें उठाकर छावनी में पहुंचाईं।

इतनेहीमें गनीम इधर उधरसे निश्चिंत होकर १ लाख सवार और प्यादे के साथ खुशी से नाचता कूदता नुसरतजंग के पास आ पहुंचा। वहां से छावनी दो कोस और क़िले की दीवार पाव कोस थी। काफ़िरों की छेड़छाड़ हद से बढ़गई। मुसलमानों के वास्ते मौत हाज़िर होगई। ऐसे वक़्में खान और मनसबदारों के पास २ हजार से ज़ियादा सवार नहीं थे, तो भी उन्होंने खुदा की मदद का भरोसा और बादशाह का ध्यान करके बाग़ियों का मुक़ाबिला किया। बड़े २ हमले हुए। खून लोहा चला। २ हजार प्यादे और ३०० सवार मुसल्मानों की चोटों की टापों में गिरकर मारे गये खानने अपनी सवारी का हाथी क़िलेतक दौड़ाया। क़िलेवालों ने दरवाजा बंदकर लिये इस लड़ाई में गनीम के एक हजार सिपाहे दोज़ख़ में गये। बादशाहके इक़बाल से बहादुरों ने दोनों हाथों से तलवारें मारीं दुश्मनों के खूनसे अपने चेहरों पर फ़तह का रंग चढ़ाया। दुश्मन नीलका टीका अपने माथे पर लगाकर भागा एक हजार घोड़ियां मुसल्मानों के हाथ आईं, जिनको छोड़कर दुश्मन क़िले में जा घुसा था। फ़तह पानेवालों के ४०० घोड़े और ५ हाथी गोलों और बंदूक़ों से काम आये। इतनेही सिपाही भी मनसबदारों की अरदली और दूसरे लोगों के शहीद हुये। शायदही कोई ऐसा होगा जो जख़्मी न हुआहो। जब खुदा की इनायत से ऐसी बड़ी फ़तह हो-गई, तो खान नुसरतजंग पिछले दिनसे छावनी में पहुंचा और ज़ुम्दतुलमुल्क से मिला। इन लोगों को बादशाहज़ादे और उसके सलाहकारों की इस सलाहका पूरा भेद लगगया कि जब बापबेटे आवें तो क़ैदकर लिये जावें। इसलिये दोनों सवार होकर बादशाहज़ादे के दौलतख़ाने में गये और बादशाह की नमकहलाली से बे अदबीकरके शाहज़ादे को अपने क़ाबू में ले आये।

दूसरे दिन खान फ़ीरोज़जंगने लशकरके छोटेबड़े आदमियों को तरक़्क़ी हाथी घोड़े खिलअत और नक़द इनाम देकर राजी करलिया। फिर गनीमसे

कई बार लड़ाई की और फतह पाई। मगर जब नाज होचुका और फौज को ठहरने की ताकत नहीं रही तो दुशमनों से सुलह करके बादशाही मुल्कमें चलाआया और वहां ठहरगया इतनेहीमें तो बादशाहके कई हुक्म आगये कि शाहजादे को महरमखां के साथ हजूर में भेजदो जुम्दतुलमुल्क दरगाह को रवाना होगया और नुसरतजंग ४ महीने पीछे फिर किले पर गया। किले को घेरा और किलेवालों को तंगकिया किले का फतह होना रामा और संता का भागजाना आगे लिखाजावेगा।

२० शव्वाल (आषाढ वदि ८। १९ जून) को बादशाहजादा कामबख्श ने चिनीसे आकर महल में जेबुन्निसाबेगम के वसीले से आपकी मुलाजिमत की एक हजार मोहरें और १ हजार रुपये नजर निछावर किये।

बादशाह का हुक्म निकला कि जिस अमीर को जवाहर का सरपेच इनायत हो वह इतवार के सिवाय और किसी दिन उसको न बांधे, और उसी एक सरपेच पर सबर रक्खो दूसरा सरपेच अपनी तर्फ से न बनावें और न सिरसे लपेटें।

२१ जिलहज (भादों वदी ८। १४ अगस्त) को लाहोर का उतारा हुआ नाजिम खानजहांबहादुर जफरजंग को कलताश दरगाह में हाजिर आया। उसके बेटे हिम्मतखां ने भी जो इलाहाबादकी सूबेदारी से दूर होगयाथा, आकर चौखट चूमी। हुक्म हुआ कि शाहजादे मोअज्जुदीन के कबीलोंको उसके पासपर नाले में पहुंचा आवे।

सन् ११०५ हि० संवत् १७५० सन् १६९३ ई०।

हमीदुद्दीनखां, जो गनीमको सजादेनेके लिये गया था १६ सफर (कातिकवदि ३।७ अकतूबर) को हाजिर आया वह पहिले तो कठरे के बाहर खडारहा करता था। अब यह इज्जतबख्शीगई कि अंदर खडा हुआकरे।

इनायतुल्लाहखां को उसके खाल मुल्ला मोहम्मदताहर के मरजाने की मातमी-से बालाबंद इनायत हुआ।

---

१ कलकत्ते की प्रति में जीनतुन्निसा।

२० रबीउलअव्वल (मार्गशीर्षवदि ६—९ नवम्बर) को खानजहांबहादुर ने अर्ज की कि हिम्मतखांको संतासे ३ दिन तक मुकाबिला रहा । बहुतसी कोशिश और मेहनत के पीछे वह हारा और यह जीता ।

राजाअनूपसिंह नुसरतावादसक्खर की फौजदारी और किलेदारी पर, रादअंदाजखां इन्तीयाजगढ औडनी की किलेदारी पर सजावारखां मोहम्मदाबादविदुरकी किलेदारी पर और मामूरखां बालाशाही बीर और शिवगांव की फौजदारी पर मुकर्रर हुआ हरेकको उसकी हालतके म्वाफिक इजाफा और इनाम मिला ।

शाहजादे आजमका हजूरमें आना ।

शाहजादाआजम जो बीमार होनेसे हजूरमें बुलाया गयाथा, २ रबीउलअव्वल (कार्तिकसुदि ४।२२अकतूबर) को वेदारबखस और वालाजाह समेत हाजिर आया । उसे अभी पूरा आराम नहीं हुआ था । हजरत खुद उसकी दवादारू करना चाहतेथे इस लिये उसको उस डेरेमें उतारा जो गुलालबाड में दीवानखास के पास उसके रहने के वास्ते लगायागया था । एक महल और २ कमरे बंदोवस्त के वास्ते बनाये गये थे ।

१६ (मार्गशीर्षवदि २।९ नवम्बर) को शाहजादेवालाजाह को ७ हजारी २ हजार सवार का मनसब अलम नौबत और नक्कारा इनायत हुआ ।

खानजमां फतहजंग ने जो बादशाह जादे की फौज में तइनात था मुलाजिमतमें आकर सिर झुकाया ।

हकीमुलमुल्क जो हजूरसे दवा के वास्ते और फजायलखां मीरहादी जो तसल्ली और दिलासे के लिये गये थे शाहजादे के साथ ही लौटकर दरगाह में हाजिर होगये ।

हजरत हररोज एक दफे शाहजादे के देखने को जाते थे । खुद और नवाब जीनतुन्निसाबेगम शाहजादे के साथ परहेजी खाना खाते थे । शाहजादे की मोहब्बत और खातिर से बीमारी रहने तक दोनों उसी खाने पर राजी थे । खुदा का शुक्र है कि उसने बादशाह की बरकत से शाहजादे को उस डरावनी बीमारी से बचाया और नई जिंदगानी बखशी ।

शाहजादे के नौकरों में से मोहम्मद सालिमअसलम ने आराम होनेकी तारीख कही, जिसका यह अर्थ है—

" शाहजादे की (शफा निरोगिता बादशाह की दुआ थी) बादशाह भी सुनकर खुश हुए । इस तारीख के मूल फारसी अक्षरों से सन ११०९ हिजरी निकलते हैं)

५ जमादिउलअव्वल (पौषसुदि ७।२३ दिसम्बर) को शाहजादा खुशी और तन्दुरुस्ती के साथ दीवानखासमें आकर हजूरमें बैठा । बादशाह के दिल की कसक मिटगई । हकीमुलमुल्क जिसने इलाजकरनेमें ईसापैगम्बरकीसी करामात दिखाईथी, हजारी जात के इजाफेसे ४ हजारी होकर अपने बराबरवालों से बढगया ।

शाहआलीजाह (मोहम्मदआजम) अपनी **बीमारी** की कैफियत इसतौरसे कहतेथे कि हकीम मासूमखां ३ वर्ष पहिलेसे जलंधर होजाने की बात मेरे सामने इशारेसे कहता था । और लोगों की जबानी साफ २ कहलाता था कि मैं जलंधरके चिह्न और लक्षण देखताहूं और अपने मकदूरभर तन्दुरुस्ती के बचाने और रोग के दबाने की कोशिश करताहूं । कुछ दिनों दवा और खुराकका साधन और उन चीजोंसे जो इस बीमारी को पैदाकरनेवाली हैं परहेज रहे तो खटका मिटजाता है । मगर मैंने उस मरनेवाले की बात नहीं सुनी । उसके मरनेसे २ वर्ष पीछे, जब कि चिनजी को जाता था, शद्म के जिलेमें यह बीमारी होगई । हकीम मोहम्मदशफीअ मोहम्मदरजा और हकीममोहम्मद अमीनसावजी इलाज में बहुतही दिल लगाते थे । मगर रोगका जोर बढता जाता था । यहां तक नौबत पहुंची कि आस्तीन की चौडाई १४ गिरह के करीब बढगई और फिर भी तंग पडती थी और पाजामे के पायचे की चौडाई १ गज ६ गिरह तक पहुंचगई थी । परहेज जो जरूर था किया जाता था पानी की जगह कासनी और मको का अर्क पीता था । तो भी हकीमलोग अपनी नेकनामी के लिये कहते थे कि बादशाहजादे परहेज नहीं करते एक रात को सब आदमी नाउमेद होकर खाल फटजाने का सोच करते थे ।

बेगम बेदारबख्त मेतीआरा बखतुन्निसा और कई हुरमों ने मेरा पलंग घेर रक्खा था। मैं नींद और गफलत में पड़ा था कि पांव की तरफ एक गोरा आदमी जिस की खिचड़ी डाढ़ी थी दिखाई दिया और मेरे पास खड़ा होकर बोला कि "अभीतक कुछ नहीं गया है तू तो बह करले, खुदा तुझ को जल्दी अच्छा करदेगा।" मैंने कहा कि जिस बात का हुक्म हो मैं तो बह करता हूं और जो खुदाने चाहा तो कभी वह बात न करूंगा। फिर मैंने उस बुजुर्ग (महात्मा) के कहनेसे तोबह करली मेरे दिल को कुछ ढारस बंधी और वह अजीज आंखों से ओझल होगया।

मैंने बेगम और दूसरे आदमियों से यह बात कही और आराम होने की बधाई दी। उसी दम पेशाब लगा। २ बड़े तसटे भरगये।

बीमारी कम और तबीअत हल्की होगई। सूरज निकलनेतक इसी तरह से ९ दफे पेशाब उतरा। सूजनभी ७ हिस्से उतरगई।

लोग पूछते थे कि वह अजीज जो खुदा के हुक्म से दिखाई दिया था कौन था। मैंने कहा कि मुझे कुछ मालूम न हुआ कि कौन था और क्या नाम था, मगर दूसरे दिन शेख रहमान दरवेशने आडोनी से जो ४० कोस दूर थी लिखा कि आज ४ घड़ी पिछली रात से हजरत अली ने फरमाया कि आज की रात हमने तो बह करायी हैं और खुदा से उसके वास्ते क्षमा मांगी है, सो जल्दी आराम हो जावेगा। कुछ फिकर न करे।

"आराम होने के पीछे मुस्तफाकाशी वगैरा मेरे नौकरोंने अपने बरसों असबाब और नकद रुपया गरीबों और फकीरों को दे दिया। मीर जैनुल आबदीन ने १२ हजार रुपया खैरात किया। आराम होने का नहान हो जाने के पीछे हिदायतखां ने १ हफ्ते तक जशन करके १९ हजार रुपये

---

१ इस कहानी में यह नहीं खोला है कि तो बह किस पापकर्म के नहीं करने की कराई थी, क्यों कि मुसलमानी मत में किसी बुरे काम के छोड़ने की प्रतिज्ञा करने को तो बह कहते हैं।

लोगों की जियाफत में लगाये । बेगमने ६० हजार रुपये नजेफ और कर-बला में नजराने के भेजे । १ लाख २० हजार रुपये सरकार से मक्के और मदीने वगैरा के हकदारों के वास्ते भेजेगये । बेगमों और शाहजादों ने भी बहुतसे रुपये खैरात किये । जब हकीमुल्क और फजायलखां हजूर में से आये थे, तो कुछ भरभराहट मुंह और हाथों पर थी । हकीम ने सोनेकी माजून दी उसके खानेसे कुछ सूजन होगई। उसने अर्ज की कुछ डर नहीं है । अभी बिलकुल दूर होजावेगी । फिर मै हजूर में चला आया । हकीमको २ हजार अशरफी हाथी और खिलअत दिया । फजायलखां के ऊपर भी रियायतें कीं.

फतहजंग के बेटे मनव्वरखां पांचसदी जात के इजाफे से ३॥ हजार सवारों के मनसब को पहुंचा ।

अलीमरदानखां हैदराबादी जो गनीमकी कैद में चलागया था छूटगया और उसको दरगाहमें आने से पहिलेही पांच हजारी ५ हजार सवार का मनसब इनायत हुआ ।

सन ११०५ हि० संवत १७५० सन १६९४ ई०

२१ जमादिउलअव्वल (माघबदि ७। ८ जनवरी) को जुम्दतुलमुल्क जो चिनजी से लौटकर हुक्मके म्वाफिक नुसरताबाद सक्खर में ठहराहुआ था दरगाहमें बुलाया हुआ आया । बादशाहजादे कामबख्श के मामले से उसके दिलमें बहुत खटका था । मुलाजिमत के दिन, जब कि वह सलाम करने की जगह पर पहुंचा, तो मुलतिफतखांने, जो खवासों का दरोगा होने से तखत के पास खडा था, धीरेसे १ मिसरा पढा, जिसका मतलब यह था कि "बखश देनेमें जो मजा है वह बदलालेने में नहीं है" बादशाहने फरमाया कि तुमने खूब वक्त

---

१ जहांजेबबानू । २ बजफ और करबला शीआ पंथी मुसलमानों के धाम सुलतान रूम की अमलदारी में बेगम भी उसी पंथ की मालूम होती है आजमशाहका दिलभी उसी तर्फ झुका हुआ और जबही उस को वह सपना शीआ लोगों का सा आया था क्यों कि शीआ लोग अलीका जियादा विश्वास रखते हैं जो मुसलमानों के पैगम्बर मोहम्मद के भाई और जमाई थे ।

पर पढा और मेहरबानी से उस बडे अमीर की तरफ देखकर कदम: चूमने का हुक्म दिया और उसका माथा जमीन पर से उठाया ।

कोकलताशखां जफरजंग के बेटे सिपहदारखां को जो बुजुर्ग उमेदखां के मरजानेसे इलाहाबाद का सूबेदार हुआ था, जौनपुर की फौजदारी भी मिली । ३ हजारी ढाई हजार सवार था ५०० सवार का इजाफा मिला और १ करोड दाम भी इनाम के मिले ।

२२ जमादिउलआखिर (मावसुदि ९ । ८ फरवरी) को खानाजादखां जो **गडाहबोना** की तरफ राहदारी के वास्ते गया था हजूरमें हाजिर हुआ ।

शाहजादा बेदारबखत गनीम को सजा देने के लिये रुखसत हुआ । मछली के दस्ते का खंजर मोती लडी समेत १० हजार रुपये की कीमत का उस को इनायत हुआ । खानफतहजंग उस के भाई बेटे और दूसरे लोग उस के साथ तइनात हुए । हरेक को खिलअत जवाहर हाथी और घोडे मिले और मनसबों के इजाफे भी हुवे ।

सन ११०५ हि. संवत १७५१ सन १६९४.

२१ रज्जब (चैतबदि ७-८ । ८ मार्च [1]) को शाहजादा मोहम्मदमोअज्जुद्दीन परनाला का घेरा छोडकर हजूर में आया और खिलवत में अपने बेटे आज्जुद्दीनसमेत सलाम करने को चौखटपर झुका ।

मुखतारखां मीरआतिश बनायागया ।

नवाजिशखां रूमी मुरादाबाद के चकलेकी रखवाली पर गया । बारह के सयदोंमें से एक मनसबदार जो सरकारी नौकर था, शाहजादे आजम के नौकर अमानुल्लाह का दोस्त था,। एक दिन दोनो रस्ते में जारहे थे । जब वक्त आजाताहै तो एक हर्फ पर बिगाड होजाताहै । उनकी भी दोस्ती दुशमनी से बदलगई । अमानुल्लाह के हाथ का जमधर **सैयद** के लगा और वह मरगया । सैयद इकट्ठे होकर अमानुल्लाह के डेरे पर गये, जो शाहजादे आजमशाह की छावनी में था । उधर से भी बहुतसे आदमी जमा होगये और दंगा

१ कलकत्ते की प्रति में करहानमूना पेज ३६५ ।

होनेलगा। जब बादशाह से अर्ज हुई तो मुख्तारखां मीरआतिश को हुक्म हुआ कि वहां जाकर जहांतक होसके सुल्ह करादेने की कोशिश करे। खानने हुक्मके म्वाफिक फसाद की आग को बुझाना चाहा, मगर बाहर के सैयद नहीं मानते थे। उसने इस हालकी अर्जी भेजी दूसरे दिन सैयदों का दल अदालत की कचहरी में आकर बाहरकी तरफ ठहरा। हुक्म हुआ कि काजीउलकुज्जात (बडेकाजी) के पास जाओ। जैसा शरीअत (धर्मशास्त्र) में होगा होजावेगा। उन्होंने कहा कि हमतो काजी के पास नहीं जाते। अपने दुशमनसे समझ-लेतेहैं।

यह बात बादशाह को बुरीलगी आस्तीनें चढाकर कहा कि जो लोग हमेशा मेरे हाथकी मारखाया किये हैं और मेरी बरछी के निशाने रहे हैं, वे शरे के मुवाफिक बात का ऐसा जवाब देते हैं। जितने हों जमा होकर आजावें। फिर हुक्म हुआ कि खास चौकी और पुरानी अरदली में जितने सैयद नौकर हैं सब मोकूफ, और जो गुसलखाने के दरवाजे के डेरे के आगे बैठते हैं सब उठा दियेजावें।

अब कौन आदमी था जो दममारसकता। सैफखां और सैयदखां जैसे रईस बडे २ मुसाहिबों के घरों में जा घुसे और कसमें खा २ कर कहनेलगे कि हम नहीं थे। तो भी मुद्दतों तक मोकूफरहे और उन पर खफगी रही। मुद्दतों में जाकर सिफारिशों से बहाल हुए। फिर तो सास नहीं निकालतेथे और घुटने समेटकर अदबसे बैठतेथे।

इन्हीं दिनो में शाहजादे मोअज्जुद्दीन के नौकरोमेंसे २० आदमी के करीब जिन पर खून सवार होगया था अपनीही सरकार के दीवान फजलअलीखां के साथ बुरा बरताव करके बदमाशी से यहां तक ढीठ होगये कि जो कोई नसीहत से उनको समझाता तो कडा जवाब सुनता था। जब यह बात बाद-शाह से अर्ज हुई, जो उन्हीं दिनोंमें सैयदों से नफरत करचुके थे, तो हुक्म देदिया कि हमीदुद्दीनखां जाकर उन लोगों के एमाल (कर्मों) की सजा देवें। जब खान उनके पास पहुंचा तो हटे नहीं और पतंगोंकी तरह आगपर गिरने

लगे मगर पतंगोंकी बिसात तो मालूम है कि जो हजारों जमा भी होजावें तो १ मुट्ठीभर से जियादा नहीं हो सकते । मगर वे थोडेसे आदमी जो मरने को तैयार थे जब इन १ हजार आदमियों पर हमला करते थे तो सबके पांव उखड जाते थे और भागने के सिवाय कोई बात दिल में नहीं आती थी । इतनेही में खानकी सवारी का हाथी भी भीड और गुलगपाडे से भडककर भागा और एक कोस तक बादशाहीगंज की तर्फ खान को लेगया । खानको बडी २ गोनें नाज की नजर आगईं । जब हाथी उनके बराबरसे निकला तो खान संभलकर होदेसे निकला और उन पर बैठगया । आदमी हाथी के पीछेगये और उसको लेआये । खान दूसरी सवारी पर लडाई में आया आखिर वे मरनेवाले अपनीही जलाई हुई आग में जलगये और मौतसे जा मिले ।

३८ वां आलमगीरी साल (सन् १७०५)।

१ रमजान (वैशाखसुदि २।१६ अप्रेल) के चांदने अपना मुबारक चेहरा मुसलमानों को दिखाया । बादशाह इबादत कररहे थे खैरातें करने से उनको खुशी हुई ।

हरकारों के लिखने से अर्ज हुई कि आगरे का नाजिम अमीउलउमरा शायस्ताखां मरगया । इस बडे अमीर की खूबियां इससे जियादा और क्या होंगी कि उसकी सखावतें और बखशिशें दुनिया में चारोंतर्फ मशहूर होरहीहैं ? उसके बनायेहुए आमफायदे के मकान सराय और पुल लाखों रुपये की लागत के हिंदुस्थान में बहुतहैं । उसके मरने से आजमखां कोका का बेटा सालहखां अपने बाप का अगला खिताब जो फिदाईखां था पाकर गवालियर की फौजदारी से अकबराबाद की सूबेदारी पर गया ।

बखशीउलमुल्कबहरेमंदखां का मनसब ४ हजारी ढाई हजार सवार का था १८ जिलहज्ज (भादोंबदि ५ । ३१ जोलाई) को १ हजारी बढकर पूरा ५ हजारी होगया ।

जुलफिकारखां चार हजारी ३ हजार सवार था हजारी जात के इजाफे से वहभी ५ हजारी होगया ।

बखशीउलमुल्कमुखलिसखां २॥ हजारी ६ सौ सवार का मनसबदार था ५ सदी १०० सवार के इजाफे से ३ हजारी ७ सौ सवारों के मरतबे को पहुंचा।

फाजिलखां खानसामां ५ सदी इजाफा पाकर ढाई हजारी ६०० सवारों के दरजे को पहुंचा।

सन ११०६। संवत १७५१। सन् १६९४ ई०।

२७ सफर (कार्तिकबदि १०।७ अक्तूबर) को इस्माईलखां मवा गनीम के हाथसे छूटकर हजूर में पहुंचा और ईद्री की राहदारी पर मुरतिजाबाद तक मुकर्रर हुआ ५ हजारी ५ हजार तो पहिले था हजारी जातका अब और इजाफा हुआ।

खाने जादखां खास चौकी के बंदों का दरोगा हुआ।

आसकरीखां हैदराबादी अवधकी सूबेदारी पर गया।

राजा भीम ५ हजारी असलीमुकाम (परलोक) को गया।

अमीरउलउमराके बेटों एतकादखां अबुलमुआली और उस सरकार के दीवान मुरलीधरने हजूरमें पहुंचकर ७ जमादिउलअव्वल (पौषसुदि ९।१५ दिसम्बर) को मातमी के खिलअत पाये।

अखलासकेश बाजे मुकदमों को निबेड़कर हाजिर आया जिनके लिये हजूरसे उज्जैन में भेजागया था।

सन ११०६ हि० संवत् १७५१ सन् १६९५ ई०।

८ रज्जब (फागुनसुदि १० । १३ फरवरी) को बिहार के नाजिम बुर्जग उमेदखांने दुनिया की उमेद छोड दी।

एतकादखां और अबुलमुआली खिलअत इनायत होकर बापके मातम से उठाये गये।

फिदाईखां बिहार का सूबेदार हुआ। उसकी जगह मुखतारखां आगरे की सूबेदारी पर भेजागया मुखतारखां के जाने से खानेजादखां मीरआतिश हुआ। ढाई हजारी से तीनहजारी होगया।

बखशियों को हुक्म हुआ कि बादशाहजादे मोहम्मदमुअज्जम का मनसब ४० हजारी ४० हजार सवारों का सियाहेमें लिखलें ।

हजूरमें और सूबों में हुक्म पहुंचा कि हिंदूलोग सिवाय राजपूतों के हथियार न बांधें हाथी पालकी अरबी और इराकी घोडों पर सवार न होवें ।

सन ११०६ हि० । संवत् १७५२ । सन् । १६९५ ई० ।

२६ शाबान (वैशाखवदि १३ । १ अप्रेल) को कुतुबाबाद से कूच होकर २८ (वैशाखवदि ३० । ३ अप्रेल) को बीजापुर में ९ वीं दफै नोरसपुर और अफजलपुर की तरफ डेरे हुवे ।

३९ वां आलमगीरी सन्.

रमजान का चांद दिखा बादशाह ने ब्राह्मणपुरी को रोजे के दिनों के लायक न देखकर इस जिले मेंही मुकाम रक्खा ।

खानजहां बहादुर जफरजंग ने एक दिन अदालत की कचहरी में चीनी का छोटासा गोल लोटा नजर करके अर्ज किया कि, यह मूसापैगम्बर का लोटा है । बादशाह ने एक नजर देखकर शाहजादे मोहम्मदमोअज्जुद्दीन और मोहम्मदअजीम को दे दिया । लोटे के गले में नकशों से मिलतेहुए खत की २ सतरें लिखी थीं । शाहजादों ने कहा कि यह लिखावट भी इबरानी होगी ।

खानजहां उनके कहने का मतलब समझकर बोला, कि मैं इबरानी नहीं जानता जिसने बेचा है ऐसाही पता दिया है । बादशाह ने फरमाया कि यह तो बातें हैं, हां चीनी बुरी नहीं है ।

उस अच्छे और सखी खान की बहुतसी बातें जो समझ में नहीं आतीं, लोगों में मशहूर हैं । मगर यह बहस मैंने खुद सुनी थी इस वास्ते यादगारी के लिये लिखदी है ।

नाजिर खिदमतगारखां को हुक्म हुआ कि ख्वाजा मंजूर के हाथ खासा खिलअत बादशाहजादे मोहम्मदमोअज्जम के घर पर भेज दें ।

बादशाहजादे ने तसबीहखांने में आकर इस इनायत के लिये सलाम किया। हजरत के साथ अदालत की कचहरी में आकर शुकराने की दोहरी नमाज

पढी और इजाजत लेकर पांव चूमे । हजरत ने भी उस की पेशानी चूमी, जिस की आदाब बजालाने के पीछे हीरों का सिरपेच १ लाख रुपये की कीमत का, तलवार, २ घोडे मीना और सोने की साज का एक हाथी, चांदी के सामान और तलायर समेत इनाम में मिला और घर जाने का इशारा हुआ ।

अमीरुलउमरा के बेटे खुदाबंदखां ने बाप के मरे पीछे भेंडायच की फौजदारी से हजूर में आकर मातमी का खिलअत पाया ।

हमीदुद्दीनखां १०० सवारों का इजाफा पाकर डेढ हजारी ९०० सवार होगया ।

वडा शाहजादामोहम्मदमोअज्जम हमेशा दाहने हाथ पर बैठा करता था । उसके कैद रहनेके दिनों में आजमशाह बैठनेलगा था । अब मोअज्जम की तरफ से अर्ज हुई कि ईदके दिन मेरे वास्ते क्या हुक्म है । हुक्म हुआ कि सवारी से आगे ईदगाहमें जाकर दाहनेहाथ की तरफ बैठेगा । जब उस दिन सवारी जीनेंपर[1] पहुंची, तो. मोअज्जम ने आगे जाकर मुजरा किया और पांव चूमे । बादशाह मिलने के पीछे उसका बायां हाथ अपने दहनेहाथमें पकडकर मुसल्ले पर लेआये और इसतौर से उसका दाहने हाथ पर बैठना होगया और बादशाह से भिडकर बैठा ।

आजमशाह पीछेसे आता था उसके हाथमें खासातलवार थी । वह तो उसने हजूर में रखदी और भाई की बांह में इशारा करके चाहा कि कुछ हटे तो दहने हाथ पर बैठजावे । बादशाह की आंख जो उधर पडी तो दहने हाथ से आजमशाह का दामन पकडकर बायें हाथ को लेआये । फिर किसको आगे पीछे करने का मकदूर था ।

नमाज पढे पीछे ज्योंहीं खतीब मिम्बर पर चढा और खुतबे में बादशाह का नाम पढा बादशाई उसी दम आजमशाह का हाथ पकडकर उठे और

---

१ मसजिद की सीढियां ।

मोअज्जमशाह को सवार होजाने का इशारा होगया। वह तो अपने बेटों समेत तीसरे दरवाजे से बाहर गया और बादशाह दूसरे दरवाजे से निकले।

शाहजादे मोहम्मद अकबर की २ बेटियां, जकियेतुन्निसां और सफयेतुन्निसां, जो हजूर में पहुंची थीं, शाहजादे रफीउलकदर और खुजस्ताअखतर को ब्याहीगईं।

५ शव्वाल (जेठसुदि ६।१९ मई) जुमेरात[1] को मुअज्जमशाह ने तसवीहखाने में आकर आगरे जाने का खिलअत मिलने का:आदाब बजाया। खिलअत ख्वाजामंजूर के हाथ उसके घर पर भेजदियागया था। फिर बादशाह के साथ अदालत की कचहरी में आकर पांव चूमने की इज्जत पाई। बादशाह ने पेशानी चूमकर उसका मान बढाया और फातिहा पढकर रुखसत किया। रफीउलदर और खुजस्ताअखरत तो उसके साथ गये मोअज्जुद्दीन और मोहम्मदअजीम हजूर में रहे। उनको हुक्म हुआ कि डेरों तक बादशाहजादे (अपने बाप) को पहुंचा आवें।

बीजापुर के पाससे ब्राह्मणपुरी (इसलाम पुरी) को जाना।

७ शव्वाल (जेठसुदि ८।११ मई) को लशकर का कूच नोरसपुर और अफजलपुर से हुआ।

१७ (प्र० आसाढवदि १३।२१ मई) को भीमडानदी पर गांव ब्राह्मण पुरी में डेरे हुवे जहां पर उतरने की मुबारकबादशाह को बादशाह के हुक्म से बादशाहजादों शाहजादों और सब अमीरों ने अर्ज की। दौलतखांने को जाते हुवे आजमशाह का डेरा रास्ते में आया। बादशाह ने उसका गिरदाव बहुत बडा देखकर हुक्म दिया कि जरीबकश नापे और इनके डेरे का घेरा बादशाह होने से पहिले के हमारे डेरों के घेरे से जियादा न होवे।

---

१ संवत् १७५२ के पंचांग में भी जेठसुदि ६ जुमेरात को ही है।

रुहुल्लाहखां की बेटी से शाहजादे मोहम्मदअजीम के घर में लडका पैदा हुआ। ५०० मोहरें बादशाह को नजर हुईं। रुहुलकुदस नाम रखागया।

सन् ११०७ हि० संवत १७५२ सन् १६९५ ई०।

२२ मोहर्रम (भादोंवदि १०।२३ अगस्त) को मुखतारखां की लडकी से शाहजादे बेदारबख्त के घर में लडका हुआ जिससे आजमशाहने आदाब बजाकर ५०० मोहरें नजर कीं। उसका नाम फीरोजबख्त हुआ।

२२ सफर (आश्विनवदि १०।१२ सितम्बर) को मोअज्जुद्दीन और मोहम्मदअजीम आगरे जानेको रुखसत होकर शाहआलीजाह (आजमशाह) की खिदमत में गये। हरेक को खिलअत बालाबंद और नीमआस्तीन तुरी मोतियों की माला और हाथी मिला।

खुदाबदाखां की शादी उम्दतुलमुल्क की बेटी से ठहरी। खिलअत इनायत हुआ।

जुलफिकारखां बहादुर का मनसब बढकर ५ हजारी ४ हजार सवारों का होगया।

बखशीउलमुल्क बहरेमंदखां को ५ हजारी ३ हजार सवार का मनसब बगैर किसी शर्त के इनायत होगया।

बखशीउलमुल्क मुखलिसखां ३ हजारी १ हजार सवार के मनसब पर चढा।

हमीदुद्दीनखां असल और इजाफे से २ हजारी हुआ।

खानेजादखां और कासिमखां पर आफत आना।

बादशाहसे अर्ज हुई कि संता बदमाश जो बराड की भीखसे[1] भारी बोझ लादेहुए अपने ऊजडे खेडे[2] को जारहाहै बादशाही लशकर से ८० कोसपर होकर निकलेगा। बादशाहने कासिमखां को, जो सरा का हाकिम था और किसी सबब से ओडनी के पास तक आ पहुंचा था, हुक्म भेजा कि अपनी

---

१ लूट क्यों जलन से भीख लिखा है। २ उस का गांव बाघर।

फौजसमेत उसके रास्ते पर पहुंचे और खानेजादखां सफशिकनखां सैयद असालतखां मोहम्मदमुरादखां और दूसरों के साथ जो खास जिलों और खास चौकी के मनसबदारों और सातों चौकियों और तोपखाने की बहुतसी जमैयत के साथ हजूर से भेजे जाते हैं मिलकर उसको सजा दे।

सन् ११०७ हि. संवत १७५२ सन् १६९६ ई.

२३ जमादिउलआखिर (माघवदि १०।१९ जनवरी) को ये लोग गनीम के जाने के रास्ते से ६ कोस पर पहुंचकर आपस में मिलगये। कासिमखां के घर का सामान औडनी में था और उसने खानेजादखां वगैरा की मनचाही **जियाफत** करना चाही इसलिये नया २ सामान करनाटक के डेरे और तंबू जो अभीतक काम में नहीं आये थे और सोने चांदी तांबे और चीनी के बरतन हर किसम के किले से निकाल कर दूसरे दिन अपने और उन अमीरों के पेशखाने के साथ ३ कोस पर भेजदिये। गनीम ने पेशखाने के आने की खबर सुनकर अपनी जमैयत के ३ दल बनाये एक को तो पेशखाना लूटने के लिये, और दूसरे को सिपाहियों के मुकाबिले के वास्ते भेजदिया और तीसरे को अलग तैयार रखा।

जो दल पेशखाने पर भेजागया था वह ४ घडी पिछले दिन से उस पर जा पडा और बहुतों को मार काट कर जो कुछ था सब लूट लेगया। यह खबर ज्योंही कासिमखां को पहुंची वह खानेजादखां को नींद से न जगाकर खुदही दौडा। अभी १ कोस भी न गया था कि गनीम की फौज जो लडने को तैयार थी आई और लडाई शुरू होगई।

खानाजादखां जब जागा और यह खबर सुनी तो बहीर बुनगाह माल असबाब और डेरे खेमे सब वहीं छोडकर जलदी से रवाना होगया। गनीम की तरफ काले पैदल **बंदूकची** बहुत थे और सवारों का भी पार न था, इससे बडी लडाई हुई और बहुतसे आदमी दोनों तरफों के मारेगये। फौज और सरदारों के जमे रहने और दुशमनों के मारने काटने पर भी गनीम न तो १ कदम पीछे हटाता था और न उसकी मजबूतीमें कुछ भंग पडता था। उसी

वक्त यह तीसरा फाल्तू दल दुश्मन का **बहीर** और **बुनगाह** पर जो पीछे छोड़ी हुई थी जा गिरा और सब लूट लेगया।

जब यह खबर ऐन लड़ाई में खानजादखां और कासिमखां को पहुंची तो उनके पांव उखड़गये और उन्होंने यह सलाह की जहां पेशखाना गया था वहां एक छोटा सा पुराना किला है उसके आगे तालाब भी है वहां पहुंचना चाहिये। एक कोस तक रास्तेमें गनीम से लड़ते हुए शाम को तालाब पर पहुंचगये। उसवक्त गनीम ने इनको छोड़दिया और एक तरफ को डेरा कर लिया। बादशाही आदमियोंने भी जो किले में थे इनके आनेजाने का रास्ता बंदकर दिया। खान और दूसरे अमीरों के साथ जो खाना था वह उन्होंने बांटखाया पर फौज के वास्ते तालाब के पानी के सिवाय और कुछ न था घोड़ों और हाथियों के दाने और घास का नाम तो कौन लेसकताथा।

ज्योंही रात को अंधेरा हुआ कि गनीम ने आगे पीछे से लशकर को घेरलिया। लशकर वाले भी कमर कसकर उसके सामने खड़े होगये। गनीम ३ दिनतक आता तो था मगर लड़ता नहीं था। चितरदुर्गके जमीदार के कई हजार पियादे जो दान्तों में तिनके लेकर कासमखां के हाथ से छूटे थे काबू पाकर दुश्मन होगये चौथे दिन अभी पौफी नहीं फटी थी कि काले पियादे जो पहिले दस गुने इकट्ठे होगये थे अपने काले २ चहरों से जंगल को काला करके चढआये और लड़ाई शुरू हुई।

तोपखाने का सामान बहुतसा तो लुटगया था और जो साथ था वह हो चुकाथा वे भी कुछ देरतक दौड़ धूप और हाहू करके थकगये।

गनीम की तरफ से बंदूकों की गोलियां ओले की तरहसे गिरती थीं। इसलिये यहां भी बहुत से आदमी मारे गये और जो बचे वे चारों तर्फ से बाहर निकलने का रास्ता बंद देखकर जबरदस्ती किले में घुसगये।

मोतबर आदमी जो उस प्रलय जैसी गड़बड़ में मौजूद रहकर लड़े थे क-

कहते थे कि जंगी फौज का तीसरा हिस्सा दोनों पेशखानों में रस्ते में और तलाव के ऊपर काफिरों की तलवारों से घास की तरह से कटगया।

गनीम ने किले को हर तर्फसे घेरकर अपनी दिलजमई कर ली. कि अब ये भूख से मरजावेंगे।

किले में घुसने के दिन तो वहां के जखीरे से ज्वार और बाजरी की रोटी सब छोटों बडों के हाथ आई और नये पुराने छप्परों का घास जानवरों को मिला।

दूसरे दिन न आदमियों के वास्ते रोटी थी और न घोडों के वास्ते जौं।

कासिमखां बडा अफीमी था। उसकी जिंदगी अफीम पर थी उसके न मिलने से उसने अपनी जान खुदा को सौंप दी। मगर दुशमन से बचा ली, जो इस खबर के मशहूर होजाने से और भी जोर में आगया और किलेवाले हिम्मत हारगये। जो लोग बहादुर और **दिलचले** थे उन्होंने बहुत कहा कि भूखे मरकर इस खराबी से कब तक मरो एक दफे ही काफिरों पर न जा गिरें। या तो **शहीद** होजावेंगे या फतह पावेंगे। दोनों सूरतोंमें **अजाब** से दूर और सवाब के पास रहेंगे मगर रईसों ने नहीं माना। इससे बहुतसे लोग भूखों मरगये और घोडे एक दूसरे की दुम घास की तरहसे खाते थे।

गनीम ने १ बुर्ज जडसे गिरादी और हरतर्फ से ही **पकडधकड** का हुल्लड मचादिया।

खानाजादखां लाचार होकर सुलह करनेको गया जो इस शर्त पर ठहरी कि कासिमखां का नकद जिन्स जवाहर हाथी घोडे संता को देवें और २०. लाख रुपया और भी भेट करें उसके मुनशी मौतमिद और घर के **मुखतार** बालकिशन का बेटा औल में रहै। निदान ऐसाही हुआ।

संता ने कहलाभेजा कि बेखटके किले से निकलआवें और २ रात दरवाजे के आगे रहें जिसके पास जो चीज है उसकी उससे कुछ **रोकटोक** न होगी हमारे लशकरसे जो चाहें खरीदें।

बादशाही लशकर १३ दिन पीछे किले से निकला गनीम के आदमी १ तर्फसे रोटी और दूसरी तर्फ से पानी लोगों को देते थे। इसतरह २ रात किले

के दरवाजे पर रहे । तीसरे दिन खानाजादखां अपने साथियों समेत गनीम के अगुवे[1] लेकर दरगाह को रवाना हुआ।

हमीदुद्दीनखां बहादुर जो हजूर से और रुस्तमदिलखां हैदरावाद से किले-वालों की मदद को रवाना हुए थे **ओडनी** के पास मिले और उन्होंने अपनी तरफ से इन अजीजों के डेरे पोशाक और नकद रुपये की मदद की ।

रादअंदाजखां किलेदार ने भी मदद देने में अपने मकदूर से जियादा कोशिश की । जो सामान जरूर था वह हरेक के घर से और इधरउधर से बहुत जियादा जमा होगया ।

गनीम जो ऐसी लूट मिलने के पीछे अपने उजड खंडे को रवाने हुआ था हिम्मतखां बहादुर से लडना चाहा जो दुश्मन को सजा देने का हुक्म पहुंच जाने पर भी थोडी फौज पास होने से बिसवापट्टन में ठहराहुआ था ।

हिम्मतखां का मरना ।

हिम्मतखां के पास १ हजार से जियादा सवार न थे तो भी वह गनीम पर गया । नजदीक था कि उस के बुरे कामों का बदला देदेवे कि इतनेही में अचानक उस के कलेजे में गोली लगी और वह उसीदम मरगया । महावत ने चाहा कि हाथी को लौटा ले चलें मगर बाकींबेग, सिपहसरदारखां ने[2] आकर कहा कि खान जीता है हाथी आगे बढा मैं दुश्मन को हराता हूँ । यह कहकर वह मुकाबिले पर गया और खूब खडा रहा । मगर बिना सर-दार के कहांतक ठहरसकता था एक किला पास था उस में जा घुसा । गनीम की फौज बहीर को लूट कर कई दिनतक उस किले को घेरे रही मगर फिर इस बात में फायदा न देखकर उठगई । बाकीबेग फुरसत पाकर हजूर में आगया ।

बादशाह का हुक्म हुआ कि खानाजादखां जफराबाद की सूबेदारी पर, सफशिकनखां धामूनी की फौजदारी पर सैयद असालतखां रणथंभोर की किले-

---

१ रस्ता दिखानेवाले; रखवाले । २ यह इतना बडा नाम दोनोंही प्रतियों में लिखाहुआ है ।

दारी पर और मोहम्मदमुरादखां दोहद और गोदरे की फौजदारीपर जावें। दूसरा लशकर "उर्दूयमुअल्ला (खास बादशाही लशकर) में मिलायाजाय।

बादशाह ने खानजहां बहादुर और हिम्मत के दूसरे बेटों को मातमी के खिलअत दे कर मातम से उठाया और तसल्ली की बातें कहकर उन के दिलों को ठंडा किया। खानजहां को अपने हाथ से कई खरोलियां देकर फरमाया कि हम पानकी जगह बहुत मुद्दत से यही खाते हैं।

बाकीबेग ने पांचसदी मनसब पाया।

लुतफुल्लाहखां को आखताबेगी की खिदमत और खास चौकी की दरोगाई सफशिकनखां और खानेजादखां के बदलेजाने से इनायत हुई।

अखलासकेश जो सूबे बिदुर के जजिये का अमीन था मोहम्मदकासिम के बदलेजाने से अमीन और फौजदार परगने इन्दौर का हुआ। ४ सदी ५० सवार था ५० सवार और बढगये।

शाहआलीजाह (आजमशाह) बहादुरगढ का बिदा हुआ खिलअत नीमा-अस्तीन बालाबंद समेत और मुक्का लाल और पन्ने का इनायत हुआ।

शाहजादे बालाजाह को खिलअत उरबसी जहां जेबबानूबेगम को लालों का कंठा मिला।

खवासों का दारोगा मुलतिफतखां असल और इजाफे से डेढहजारी २०० सवारों के दरजे पर पहुंचा।

४० वां आलमगीरी सन्.

सन् ११०७ हि. संवत् १७५३ सन १६९६ ई.

१ रमजान (चैतसुदि ३। २९ मार्च) से ४० वां जलूसी सन लगा। बादशाह रोजे रखने एकांतमें बैठने और ईद की नमाज पढने के लिये इस-लामपुरी (ब्राह्मणपुरी) से शोलापुर में चलेआये और महीने भरतक मज-हबी कामों में लगे रहे।

बादशाहजादे कामबख्श के बेटे सुलतान मुहीउलैसुन्नत[1] ने मुलाजिमत की। रोजीना मुकर्रर होगया।

शाहवरदीखां का बेटा शेरअफगनखां असल और इजाफे से डेढ़हजारी १७[2] सौ सवारों का मनसब पाकर नखर का फौजदार हुआ।

अरसलाखां हजारी था डेढहजारी होगया।

तरबीयतखां २०० सवारों का इजाफा पाकर २ हजारी २०० सवारों के मनसब को पहुंचा।

सैयद अजमतखां पांचसदी इजाफा पाकर २ हजारी ९०० सवार हुआ।

बखशीउलमुल्क मुखलिसखां ने सायब[3] का दीवान[4] १ लाख बैतों[5] का खुद सायब का ही लिखा हुआ बादशाह के नजर किया। बादशाह को पसंद आया क्योंकि इस के अकसर शेर[6] नसीहत और फायदे के हैं।

तरबीयतखां जो दुशमनों को सजा देने के लिये महादेव पहाड की तर्फ गया था आया और खिलअत पाया।

अमीरुलउमरा, का बेटा एतकादखां राजा बिशनसिंह के बदले जाने से इसलामपुरी का फौजदार हुआ।

सन ११०८ हि० संवत् १७५३ सन १६९६ ई०।

१३ मोहर्रम (सावनसुदि १४।२ अगस्त) को शाहजादे रफीउलकदर और खुजस्ताअखतर के इजाफे हजार सवार के हुए।

वाँड्रन[7] का थानेदार रामचंद्र इजाफा पाकर २ हजारी डेढ हजार सवार दुअस्पे का मनसबदार होगया।

---

१ इस की किसमत में भी कुछ दिनों के वास्ते बादशाह होना लिखा था औरंगजेब के मरने से ५० वर्ष पीछे जब मरेटों ने काबुल के बादशाह अहमदशाह पर चढाई की थी तो इस को दिल्ली के तखत पर बैठादिया था तवारीख चार चिमनचित्रमणि इसी के राज में बनी है। २ कलकत्ते की प्रति में ७ सौ। ३ फारसी भाषा का एक कवि। ४ काव्यसंग्रह। ५ दोहों वा श्लोकों। ६ छंद। ७ कलकत्ते की प्रति में खताऊं।

तरबीयतखां के लाये हुए दूंदीराव को डेढ हजारी मनसब और महादेवपहाड़ की थानेदारी इनायत हुई।

भदावर का राजा कल्याणसिंह जो दरगाह में आया था रुखसत हुआ। ७ सदी ४०० सवार था २ सदी २०० सवार का इजाफा मिला।

खुदाबंदाखां अहदियों का, अव्वल मीरबखशी, मुरीदखां के बदले जाने से हुआ।

बादशाह से अर्ज हुई कि बादशाहजादा मोहम्मद मुअज्जम शाह हुक्म के मुवाफिक २२ जिलहज. (सावनबदि ९।१२ जोलाई) को मुलतान की तरफ रवाना होगया।

आजमखां का पोता इरादतखां जिसके बाप का नाम भी इरादतखां था, असल और इजाफे से ७ सदी हजार सवार का मनसब पाकर खुजस्तेबुनियाद के इलाके का फौजदार हुआ।

हमीदुद्दीनखां बहादुर संता को सजा देने और दुधरीगढी का घेरा उठादेने के लिये गया था। उसने हजूर में पहुंचकर शाबासी के साथ बहादुरी का खिताब पाया। उसकी अर्ज से रुस्तमदिलखां और दूसरे तइनातियों को इजाफे मिले।

अहमदाबाद के सूबेदार शुजाअतखां मोहम्मद बेग को ४ हजारी ४ हजार सवार का मनसब इनायत हुआ।

अर्ज हुई कि दिल्ली का सूबेदार आकिलखां मरगया। आजाद, बेपरवा, और मजबूत मिजाज का आदमी था। बडे ठस्से से नौकरी करता था। अपने बराबरवालों से घमंड का बरताव रखता था। महाबतखां इब्राहीम ने जब लाहोर की सूबेदारी पाई तो उसने दिल्ली के किले और दौलतखाने की इमारतों के देखने की अर्ज की थी, जो कबूल हुई। यह सबदिखा देने के लिये आकिलखां को हुक्म लिखागया था। पर उसने जवाब में लिखा कि मैं उसको कई बातों से नहीं बुलाऊंगा।

प्रथम तो वह हैदराबादी है। इसलायक नहीं कि बादशाही इमारतों को सैर और तमाशे की नजर से देखे।

दूसरे सब मकानों के दरवाजे इसलिये बंद किये हुए हैं कि हाथ लगकर मैले न होजावें।

तीसरे मकानों में फर्श बिछे हुए नहीं हैं।

चौथे देखनेवाला इसलायिक नहीं है कि उसके वास्ते झाड पोंछकर बिछौने बिछाये जावें।

पांचवें मुलाकात में वह जिस सलूक की मुझसे उमेद रखता होगा, अमले में नहीं आवेगा।

इन सब बातों से उसको किले में नहीं आने देना ही अच्छा है।

जब वह दिल्लीमें पहुंचा और किले को देखने का संदेसा भेजा तो आकिलखां ने उसको नहीं बुलाया। बातों २ में ही टालदिया। यहांतक कि वह अपने रस्ते लगा।

कदरदान बादशाह भी उसकी पुरानी बंदगी इमानदारी इखलासमंदी से उसके घमंड और शेखी की बातों से आनाकानी देजाते थे और उमदा काम उसी को सौंपते थे। वह कमाल से खाली नहीं था। "राजी"[1] तखल्लुस[2] करता था। उसने एक दीवान और मसनवी[3] बनाई है। मोलानारूम की मसनवी की बारीकियों के निकालनेमें वह अपने को इक्का[4] समझता था। नकी करने वाला और अच्छे गुनों वाला था। मोहम्मदयारखां जो हजूरसे आगरे में जाकर बेकार बैठा था उसके मरने से सूबेदार हुआ ढाई हजारी डेढ हजार सवार था ५ सदी इजाफा मिला।

सदरुद्दीनखां डेढ हजारी से २ हजारी होगया।

इतेताजखां का बेटा इक्तेताजखां इलाहाबादके सूबे में अहमदाबादखोरे का फौजदार अब्दुलसमदखां के बदले जाने से हुआ।

सलावतखां का बेटा तहव्वरखां सहारनपुर का फौजदार हुआ।

शत्रुसाल जो लुतुफुल्लाहखां की फौज में तइनात था सरफराजखां के बदले-जानेसे नुसरताबाद सक्खर का किलेदार और फौजदार हुआ।

---

१ उपनाम। २ कविका दूसरा नाम जो कविता में आता है जिस को भोग और छाप भी कहते हैं जैसे बीरबल का- ब्रह्म। ३ काव्य। ४ एकही अद्वितीय।

खानजमा फतहजंग का बेटा खानआलम ६ हजारी ४००० सवार था १ हजार सवार का इजाफा हुआ उसका भाई मनव्वरखां ४ हजारी २ हजार था उसके ५०० सवार बढे ।

फतहउल्लाहखां २ हजारी ५०० सवार था उसको २०० सवार का इजाफा मिला । खानेजादखां जो जफराबादकी सूबेदारी पर गया था हजूर में आया ।

४१ वां आलमगीरी सन्.

१ रमजान (चैतसुदि ३। १९ मार्च) को बादशाह रोजा रखनें और इबादत करनेके लिये इसलामपुरीसे शोलापुर की छावनीमें लौट आये । शाहजादा कामबखश और जुम्मदतुल वगैरा सब छोटे बडे जो छावनी में थे, पेशकशें लेकर मुलाजिमत में आये ।

बख्शीउलमुल्क मुखलिसखां ने लडका पैदा होने की नजर गुजरानी । मोहम्मदहसन नाम इनायत हुआ ।

फाजिलखां खानसामा का बेटा अब्दुलरहीम दिल्लीसे हजूरमें आया । उसके बापने अच्छी चालके कई कपडे 'चीनी और खताई नजर करके शाबाशी पाई ।

बंगाले का उतराहुवा दीवान किफायतखां मीर अहसन रशीदखां के मरजानेसे खालिशेके दफतरका पेशदस्त हुआ ।

इनायतउल्लाहखां का बेटा हिदायतुल्लाह जो पेशदस्त हुआ था अपने बापके बदलेजानेसे जीनतुन्निसाबेगम का मीरसामान हुआ ।

यलंगतोशखां बहादुर के बेटे सुबहानबरदी ने बेटा पैदाहोने की नजर गुजरानी । रहमान बरदी नाम रखागया ।

फाजिलखां ने खानसामानी की खिदमत से इस्तेफा देकर अबूनसरखां के बदलेजाने से कशमीर की सूबेदारी पाई ।

खानाजादखां रूहुल्लाहखां का खिताब पाकर खानसामान हुआ ।

अबूनसरखां को मुकर्रमखां के वदलेजाने से लाहौर की सूबेदारी मिली। मुकर्रमखां हजूर में बुलायागया।

खुदाबंदाखां को रकाब (सफरी के) कारखानों की दरोगाई इनायत हुई।

राजा उदितसिंह के बेटे स्वरूपसिंह को बाप के पास जाने की रुखसत मिली। ७ सदी ९०० सवार था ३ सदी इजाफा हुआ।

वजीहुद्दीनखां गनीम को सजा देने के लिये अनंदापुर की तर्फ भेजागया।

खानफीरोज का बेटा चीनकुलीचखां वहादुर बाप से नाराज होकर दरगाह को आया। जब बादशाही लशकर के पास पहुंचा तो १ महीनेतक ठहरने के पीछे उस का सलाम हुआ।

इखलासकेश रूहुल्लाहखां खानसामान का पेशदस्त हुआ।

शाहजादे बेदारवखत को शाहआलीजाह के पास वहादरगढ जाने का हुक्म हुआ। खिलअत और सोने के साज का इराकी घोडा मिला।

मुत्तलबखां हजारी ४०० सवार था। ९ सदी १०० सवार का इजाफा मिला।

अहतमामखां अलहयारखां लुतफुल्लाहखां के वदले जानेसे आखताबेगी हुआ।

सलाबतखां का बेटा तहव्वरखां सहारनपुर की फौजदारी से बदला जाकर हजूर में आया और कारखाने का दरोगा हुआ।

इब्राहीमखां के वदलेजाने से शाहजादे मोहम्मदअजीम को बंगाले की सूबेदारी और कूचविहार की फौजदारी इनायत हुई।

इब्राहीमखां सिपहदारखां की जगह इलाहाबाद का सूबेदार और उस का बेटा याकूबखां जौनपुर का फौजदार हुआ।

हरसाल के दस्तूर के म्वाफिक वरसाती खिलअत बादशाहजादों शाहजादों सुलतानों वडे २ अमीरों हजूर और दूर के सब छोटे वडे बंदों को इनायत हुए।

लशकरखां शाहजहानी का पोता मोतकिदखां सादुल्लाहखां के वेटे इनायतुल्लाहखां के वदलेजाने से बुरहानपुर का सूबेदार हुआ।

दाराबवेग गुर्जबरदार के बेटे जुलफिक्कारवेगने तवेले की मुशरफी से दीवानखास की मुशरिफीपर तरक्की पाई।

मुलतिफितखां और इनाय तुल्लाहखां को पीलेयाकूत की अंगूठियां इनायत हुई।

अवदुलरज्जाकखां लारी के वदलेजाने से इसमाईलखां मखा इसमालगढ राहेरी का फौजदार मुकर्रर हुआ और अवदुलरज्जाकखां को कन आदिलखानी की फौजदारी पर गया।

सन ११०९ हि० संवत १७५४ सन १६९७ ई०

भीमडानदी के रेल का तूफान।

१० मोहर्रम सन ११०९ (सावनसुदि ११ । १९ जोलाई) को दूरकी बारिशों से भीमडा नदी में इतना पानी आया कि उसकी रेलको देखनेसे मारे डरके जान निकलती थी जो दमवदम वढती जाती थी वहादरगढ से ३० कोस पर शाहआलीजाह की छावनी थी वहां घास और पनत्थीकी लकडियोंकी गंजियां व्योपारियों और सौदागरों ने लगारखीथीं वे वैसीकी वैसेही वहीं चलीआती थीं पानीके जोर ने अकसर गावोंको जडसे उखाडदिया था आदमी और जानवर छप्परों पर वैठे वहे चलेजाते थे बिल्ली चूहे कुत्ते और खरगोश जानके डरसे आपस का दुशमनी छोडकर एक दूसरेके पास कांपते थर्राते वहे जारहे थे।

जब पानी सिमटकर जंगलों में फैला तो जुम्दतुलमुल्क, मुखलसखां और दूसरे मालदारों के अच्छे २ मकान जो उन्होंने बहुत सा रुपया लगाकर अपनी २ पसंदके म्वाफिक नदीके किनारे पर वनाये थे सव वह गये मकदूर वाले लोग तो नावों में वैठकर गिरते पडते डूबने से बचगये बाकी आदमी जान मालसमेत पानीमें वहगये।

वादशाह, शाहजादे कामवखश और दूसरे अमीरों गरीबोंके डेरे ४० गज ऊंची १ पहाडी पर थे जो ३ दिनके चढाव में पानी से ४ गज खाली रह गई थी वहां रातदिन वहुत सवारियाँ तैयार रहती थीं वादशाहकी बडी आजिजी से खुदा का फजल हुआ। पानी घटनेलगा। दुनियां की जिंदगी बची।

खानजहां बहादुर जफरजंग की बीमारी बढगई थी इसलिये बादशाह शोलापुर से छावनीको लौटते हुए १६ जमादिउलअव्वल (पौषवदि ४।२१ नवम्बर) को उसके घर पर पधारे खान पडा हुआ था बिछौने से न उठसका हजरतगद्दी पर बैठ गये व रोरोकर कहनेलगा कि मैं कदम नहीं चूम सकता यह चाहता था कि किसी लडाई में अपनी जान कुरबान करूं और हजरत के काम आऊं बादशाहने फरमाया कि तुम तो उमरभरही जान कुरबान करते रहे हो और फिरभी यही चाहते हो ।

१९ (पौषवदि ७।२४ नवम्बर) को वह मरगया बडा आलीशान अमीर था नेकी और अहसान करनेवाला था मुल्की और फौजी कामोंको करता रहाथा उसका दरबार भी बडे ठाटका लगता था जिसमें उसके सिवाय कम कोई बोलता था और जो कुछ वह चाहता खुदही कहता था दूसरों को जवाब सिवाय हां कहने के और कुछ नहीं होता था जियादा बोलना उसको पसंद न था उसकी महफिल में जियादा जिक्र नज्म नस्र (गद्यपद्यकाव्य) तलवार जवाहर हाथी घोडे और ताकत की दवाइयों का रहा करता था उसकी बहादुरी के काम इतने बहुतहैं जो थोडे से भी लिखनेमें नहीं आसकते ।

२० जमादिउलआखिर (माघवदि ८।२९ दिसम्बर) को शाहजादे कामबख्श को बराड की सूबेदारी मिली २० हजारी ७ हजार सवार तो था ३ हजार सवार और बढे सरकारी दीवान मीरकहुसेन उसकी नायबी में गया ।

जुम्दतुलमुल्क बीमारी से दस्तखत नहीं करसकता था इसलिये दुनियां का काम बंद नहीं रहने के वास्ते हुक्म हुआ कि इनायतुल्लाहखां दस्तखत कियाकरे ।

जुम्दतुलमुल्कने जुलफिकारखां बहादुर नुसरतजंग की अरजी पेश की लिखा था कि इन दिनों बहादुर मुसलमानों ने खुदा की मदद से आसमान जैसा ऊंचे किले चिनजी पर जो करनाटक के तमाम किलों से ऊंचा है और जिसमें लडाई और किलेदारी का सामान भी बहुत था चढकर फतह का झंडा खडाकिया बहुतसे काफिर मारे गये रामा जो उस किले को अपने बचाव की जगह समझकर बडे गरूर से बैठाहुआ था यह हाल देखकर ऐसा

डरा कि माल असबाब और जोरू बच्चों को किले में छोडकर संता के साथ भागगया ।

सन ११०९ हि०-संवत १७५४-सन १६९८ ई० ।

६ शाबान (फागुनसुदि ८।८ जनवरी) को यह मजबूत किला जिसके शामिल ऐसेही ७ किले और भी हैं बादशाही बंदों के हाथ आगया रामा की ४ औरतें ३ बेटे २ बेटियों और उसके साथियों के कबीले पकडेगये करनाटक का देश जिसमें १०० किले और भी हैं कई फिरंगी बंदरोंसमेत बादशाही अमलदारीमें शामिल होगया जोर शोर दिखाने वाले जमींदारों ने ताबेदारी के कुंडल कानों में डालकर अच्छे २ नजराने खानबहादुर के मारफत भेजे ।

जुम्दतुलमुल्क को इस बंदगी के इनाममें हजार सवारोंका इजाफा हुआ जिससे उसका मनसब ७ हजारी ७ हजार सवार का होगया और नुसरतजंग (जुलफिकारखां) भी १ हजार सवारों के इजाफे से ५ हजारी ५ हजार सवारों के मनसब को पहुंचा ।

राव दलपत ने जो नुसरतजंग के पास तइनात था इस लडाई में बहुत मेहनत उठाई थी इसलिये ५ सदी २०० सवार का इजाफा उसे भी इनायत हुआ जिससे उसका मनसब ३ हजारी १५ सौ सवारों का होगया ।

चिनजी का नाम नुसरतगढ रखागया ।

एतकादखां मुखतारखां के बदले जाने से आगरे का सूबेदार हुआ उसके ५०० सवार बगैर किसी शर्तके पक्के होगये और नक्कारा भी मिलगया ।

सियादतखां मरी से मरगया उसके बेटे को बाप का खिताब मातमी का खिलअत और इजाफा मिला दूसरा रिश्तेदार भी खिलअत और इजाफे पाकर राजी हुए ।

सियादतखां के मरने से दीवानखास की दरोगाई भी रूहुल्लाहखां खानसामान को मिलगई ।

सिदारत का खिलअत काजी अबदुल्लाह ने पहिना ।

४२ वां आलमगीरी सन.

रमजान के लगते ही बादशाह मामूल के म्वाफिक शोलापुर में आगये रोजे पूरे करके ईदकी नमाज पढी दुनिया की मुरादें पूरीहुई।

शाहजादा बेदारबखत जो बहादुरगढसे हजूरमें बुलाया गया था आकर देवगांव में ठहरा बखशी उलमुल्कबहरे मंदखां और मनसूरखां मीरतुजुक पेशवाई करके हजूर में लाये कचहरी से निकलने के पहिले मसजिद में सलाम होकर परनाला जाने का हुक्म हुआ सरपेचसमेत खिलअत और लाल और पन्ने का सरपेच, जडाऊ पहुंची, हाथी और घोडा मिला फौज के सब तइनातियों पर भी इनायतें हुई।

भागू बनजारा जो पहिले दरगाह में पहुंचकर ५ हजारी ४ हजार का मनसब पाचुका था और फिर गनीम से जा मिला था अब जो फिर हाजिर आया तो वही आला मनसब और हाथी घोडा इनायत हुआ।

काजी अबदुल्लाह फालिज की बीमारी से मरगया।

दिल्ली कामोरूसी मुफती मोहम्मद अकरम जो खुजस्ते बुनियाद (औरंगाबाद) का काजी था उर्दूय मोअल्ला की कजाके वास्ते हजूरमें बुलायागया।

इनायतुल्लाहखां को हुक्म हुआ कि सिदारत का दफतर भी दीवानी के दफतर का १ टुकडा है इसलिये दूसरा सदर मुकर्रर होने तक उसका काम भी नायब के तौर पर कियाकरे ९ सदी ७० सवार था ३० सवार और बढगया।

बादशाहने शेख उलइसलाम के बुलाने को उसको उसके भाई नूरुलहक के हाथ फरमान भेजा जो कजा की खिदमत छोडने के पीछे हजको जाकर एकबारभी हजूरमें नहीं आयाथा और इस बुलाने से यह मतलब था कि जो हजूर में आकर सदारत का काम कबूलकरे तो उसको सौंपदिया जावे और वह भी आना चाहता था मगर उन्हीं दिनों में बीमार होकर बीमारी के बढजानेसे मरगया।

मोहम्मद अमीनखां को हुक्म पहुंचा कि इस उमदा खिदमत को करने के लिये खानफीरोजजंगकी फौज से दरगाह में हाजिर होजावें।

अमानतखां का जमाई अरशुद खां अबुलअलाकाबुल की तइनाती से हजूर में पहुंचकर किफायतखांके मरने से खालिसे का दीवान होगया।

सन ११०९ हि० संवत १७५५ सन १६९८ ई०

अर्ज हुई कि काबुल का नाजिम अमीरखां २७ शव्वाल (प्र० जेठवदि १३। २९ अप्रेल) को दुनियां से चल बसा यह अमीर नेकियों से भराहुआ आलीशान और अपने मालिक पर जानदेनेवालों और काम करनेवालों में सबसे बढाहुवा था काबुल के बिगडेहुवे काम को उसने ऐसा संभाला था कि जिससे बादशाह की नजरमें उसका एतबार खूब बढगया था वह बादशाह की खाला का बेटा था और अच्छे २ काम करनेसे उसका इस जमाने में होना बहुत गनीमत था इसलिये उसके चलजाने से बादशाहके दिलको धक्का लगा बडे बादशाहजादे के नाम काबुल की खबरदारी के वास्ते जाने का फरमान ५० हजार रुपये की कीमत के सरपेच समेत भेजा गया।

२० जीकाद (द्वि० जेठवदि ७। २२ मई) को दुर्गादास राठोड मोहम्मदअकबर के बेटे बुलंदअखतर को जो उसके भागते वक्त राठोडों के मुल्क में पैदा हुआ था और राजपूत लोग फसाद और मिलावट की नियत से उसकी रखवाली करतेथे अपने गुनाहों के बखशवाने का वसीला बनाकर अहमदाबाद के नाजिम शुजाअतखां की सिफारिश से हजूर में लाया मुलाजिमत के वक्त हाथ बांधे हुवे आया हुक्म हुआ कि बँद खोलदें जडाऊ जमधर खिलअत और ३ हजारी ढाईहजार सवारों का मनसब पाकर अपने बराबरों वालों में महसूद (ईर्षा पात्र) होगया।

बलंद अखतर ने खिलवत में मुलाजिमत की खिलअत सरपेच और गुलालबाडमें डेरा इनायत हुआ।

खानजहां का बेटा अबुलफतह खां खिलअत घोडा और रुखसत पाकर व्याह करने के वास्ते दिल्ली को गया।

इसलामखां का पोता हिम्मतखां का बेटा नेकनामखां शाहजादे बेदारबखत की फौजमें बखशीगरी और विकायानिगारी की खिदमत पर मुकर्रर हुआ १ सदी २०० सौ सवारों का इजाफा पाकर हजारी ३०० सवार होगया।

चीनकुलीचखां बहादुर बीजापुर की तर्फ नागवाडी के फिसादियों को सजा देकर हजूर में आगया।

रतवाद देफलिया मुनअमखां के वसीले से दरगाहमें हाजिर आया ६ हजारी ५ हजार सवार का मनसब नक्कारा इनायत हुआ।

बखशीउलमुल्क मुखलिस खांअसल और इजाफे से ३ हजारी १२०० सवार तरबीयतखां मीरआतिश जोगनीम की छावनी उठादेने के लिये बराड की तर्फ रुखसत हुआ था ढाई हजारी १२०० सवार हुआ यही मनसब रूहुल्लाहखां खानसामां ने भी पाया।

शेखमीर का बेटा महोतशमखां मौकूफ होने के पीछे २ हजारी हजार सवार के मनसब पर वहाल हुआ।

चीनकुलीच खां गनीम को सजादेने के लिये कोटे की तर्फ भेजागया कमरपट्टा इनायत हुआ।

छतिरमल का बेटा भोलानाथ जिस ने मुसलमान होकर हिदायत के शनाम पाया था अपने बापके मरे पीछे विकायेनिगार कुल हुआ।

फजलअमीरखां मुरशिदकुलीखां मुलतान के सूबेका दीवान हुआ।

मुल्लाअवुलकासिम औरंगाबाद में आजमशाहकी मां के रोजे में पढाने की शर्तपर १) रोज पाता था तकदीर जो खुली तो दक्खन के नये मनसबदारों में दाखिल होकर मुल्ला होने से बादशाह के पहिचानने में आया और बादशाहजादे मोहम्मद कामबखश का अव्वल बखशी होकर बीजापुर का दीवान होगया दियानतखां का खिताब पाया शेर भी कहताथा और तेजहोश तखल्लुस करता था।

हमीदुद्दीनखां बहादुर जो मंदिर गिराने और मसजिद बनाने के लिये बीजापुरको गया था हुक्मके मवाफिक अच्छा काम करके हजूर में आया शाबाशी और गुसलखाने की दरोगाई मिली जो बादशाह के पास रहनेकी जगह थी।

बादशाहजादे मोहम्मद कामबखश के वकीलों के बदले जाने से असकरकुलीखां हैदराबादी बराडका सूबेदार हुआ मोहम्मदअमीनखां ने हजूरमें पहुंचकर

---

१ कलकत्ते की प्रति में–सेवावकलिया।

कुल हिंदुस्तान की सिदारत का बडा औहदा पाया पन्ने की मीना के काम की और चांदी की ३ अंगूठियां इनाम में मिलीं ।

मोहम्मद अकरम औरंगाबाद से हजूरमें पहुंचकर उर्दूयमुअल्ला का काजी हुआ ।

एबतुल्लाह अर हैदराबाद से बादशाही चीजें हजूरमें लाया जिनमें निहाया नाम किताब मुल्ला अबदुल्लाह तब्बाख की लिखी हुई थी जिसकी पहिली जिल्द तो सरकार में पहुंचगई थी और बादशाह दूसरी जिल्द चाहते थे इसके इनाम में उसको १ हाथी और हजार रुपया मिला मनसब भी बडकर पूरा १ हजारी होगया ।

बुखारा का वकील कुतुबुद्दीन हजूर में आया खिलअत १० हजार रुपये १ मोहर २ सौ मोहर की १ रुपया दोसौ रुपये का तो मुलाजिमतके दिन और १ हथनी और १५ हजार रुपया रुखसत के दिन इनायत हुआ ।

अवध का नाजिम जबरदस्तखां असल और इजाफे से ३ हजारी ढाई हजार सवारके मनसब को पहुंचा ।

फतहखां परेंडेके जिलेमें गश्त और गिरदावरी करने पर मुकर्रर हुआ खिलअत और मीनाकार खंजर इनाममें मिला ।

सन् १११० हि० संवत् १७५५ सन् १६९८ ई० ।

याकूतख्वाजासराके तीर लगाना और मारने वाले को सजा मिलना ।

बादशाहजादे कामबख्श का नाजिर ख्वाजायाकूत खैरख्वाही और नमकहलाली से कभी २ कुछ कडी और कडवी बातें कहदिया करता था जो बादशाहजादे के बाजे लुच्चे मुसाहिबों के दिलमें तीरकी तरह से खटकं जाती थीं और वे उसके मारने की फिकर में रहतेथे १८ जमादिउल आखिर (पौषवदि६ । १२ दिसम्बर) की रात को जब कि याकूतबादशाहजादे की ड्योढी से अपने घर को जाता था किसी कम्बख्त ने उसपर तीर मारा मगर उसकी जिंदगी बाकी थी इसलिये हाथ में लगकर पेट में पार न हुआ बादशाह ने यह खबर सुनकर तहकीकात की गरज से उर्दूयमुअल्ला के कोट-

वाल को हुक्म दिया कि शाहजादे के ९ उमदा नौकरों को कैद करले और तीर मारनेवाले का पता लगावे कोटवाल ने ४ आदमियों को जो वादशाह को राजी रखने के लिये खुद हाजिर होगये थे पकडकर अर्ज कराई कि वाद-शाहजादे का कोका फसाद कराने के इरादे में है ।

हुक्म हुआ कि वादशाहजादे का वखशी ख्वाजा मोहम्मद उस को हजूर में लेआवे वखशी चिकनी चुपडी वातों से नर्म करके उसको वादशाही दौलत-खाने में के पास तक तो ले आया मगर फिर कई वदमाशों के वहकानेसे वह लौटगया वह क्या लौटा उसका नसीव ही लौटा हुआ था ख्वाजा मोहम्मदने अर्ज कराई कि वह तो नहीं आता है और अदूलहुक्मी की तैयारी करता है हुक्म हुआ कि वादशाहजादा उसको लश्कर में से निकाल दे वादशाहजादेने उसे वुलाकर २०० अशरफी डेरा और वारवरदारी देकर रुखसत तो करदिया मगर उस का जाना दिल में वहुत वुरा लगा वह अभी नदी से नहीं उतरा था कि वादशाह ने शाहजादे से कहलाया कि उस को अपने साथ लेआके और उसके गुनाह वखशवालें ।

वादशाह जादा उसको वुलाकर अपने साथ दरवार में लाया अर्ज होने पर हुक्म हुआ कि आप तो हजूर में आजावे और उस को दीवानखास में छोड आवे वादशाहजादे ने कहा कि हम दोनों इकट्ठे मुजरा करेंगे और वाला-वंद खोलकर अपनी और उस की कमर से मजवूत वांध लिया ।

इस नागवार हरकत की अर्ज होने से हुक्म हुआ कि अदालत में चल कर बैठे वहां वखशीउलमुल्क मुखलिसखां ने हुक्म के म्वाफिक जाकर वहुत समझाया मगर शाहजादे ने नहीं माना तव हमीदुद्दीनखां वहादुर को हुक्म हुआ कि उस वुरे मुसाहिव (कुसंगी) को वादशाहजादे से जुदा करदो वाद-शाहजादे ने कटार निकाला खान ने उस का हाथ पकडकर छीनलेना चाहा इस में उस का हाथ तो जखमी होगया पर वादशाहजादे को आल नहीं आई और कोका पकडा गया ।

जव इस हाल की अर्ज हुई तो हुक्म हुआ कि जवाहरखाने के पास डेरा खडा करके शाहजादे को दंड देने के लिये उस में रखें और कोके को कैद-खाने में लेजावें ।

बादशाहजादे का मनसब मौकूफ होकर तमाम मालअसबाब और शाहजादगी का लवाजिमा जब्त होगया उस के उमदा नौकर हजूर में लायेगये और खिलअत पाकर सरकारी बंदगी करनेलगे।

संता का सिर.

इन्हीं दिनों में गाजी उद्दीनखां बहादुर फीरोज जंगने संता का सिर दरगाह में भेजा जो बादशाह के हुक्म से दक्खन के अच्छे २ शहरों में फिरायागया संता का और हाल तो लिखा जा चुका है बाकी का यह है कि उसने बूधे डोके सामले और हिम्मतखां के मारे जाने के पीछे चिनजी की तर्फ जाना चाहा था कि बादशाह का हुक्म हमीदुद्दीनखां बहादुर के नाम उसका पीछा करने के लिये आया उसने रूहुल्लाहखां का साथ छोडदिया और जलदीसे आकर संताका मुकाबिला किया और कई हाथी कासिमखां के उसने छीनलिये फिर उसको यह हुक्म हुआ कि शाहजादा बेदारबखत संता के पीछे जाने को मुकर्रहुवा है तुम अपनी फौज के कुछ तइनाती उसके पास छोडकर हजूरमें हाजिर होजाओ।

फिर बेदारबखत के साथ भी संता के कोई मुकाबिले हुवे और वह हर दफे निकल २ गया।

चिनजी को जाते हुए संता की धन्ना यादव से भिडंत होगई जो रामा को चिनजी में लिये जाता था, धन्ना हारा संताने उसके साथी अमरतराव को जो मानकूजी का भाई था पकडकर हाथी से कुचलवा दिया और रामा को पकडलिया धन्ना भागगया।

दूसरे दिन संता हाथ जोडकर रामा के हजूरमें खडा हुआ कि मैं वहां बंदाहूं यह गुस्ताखी इस लिये हुई कि आप चाहते थे कि धन्ना को मेरी बराबरी का बनावें और उसकी मदद से चिनजी में पधारें अब जो बंदगी आप मुझे फरमावें मैं करने को तैयार हूं।

यह कह कर रामा को चिनजी में ले गया फिर वह जुलफिकारखां बहादुर से लडने शाहजादे कामबखश को बहकाने किला नहीं फतह होने देने और

---

१ अगली पंक्तियोंसे साला जानाजाता है।

इसमाईलखां मथा को पकड ले जाने में शामिल रहा फिर जब किला फतह हुआ तो रामा को वहां से लेकर सितारा की तर्फ गया जहां धन्ना था और अदावत के मारे उससे लडा इसवक्त जमाना उससे पलटगया था और उस के बिगडने का वक्त आ पहुंचा था इसलिये उस लडाई में हारा और थोडे से आदमियों से भाग कर मानकूजी की जमीदारी में चलागया उसने भलमनसी से उसको अपने घरमें पनाह दी लेकिन उस औरतने कि जिसके भाई को संताने मारा था खाविंद और दूसरे भाई से कहा कि इसको जिंदा नहीं छोडना चाहिये मानकूजी ने तो दिल जमई के साथ रुखसत कर दियाथा मगर उसके भाईने नहीं माना और पीछा किया उन्हीं दिनों में बादशाहका हुक्म भी उसके पीछा करने का खानफीरोज जंग के नाम पहुंच चुका था। उसके साथ की फौज के सिवाय शाहजादे और हमीदुद्दीनखां की फौज भी उसके साथ तइनात होगई थी और मुत्तलबखां जो सजावली के वास्ते भेजा गया था यह खबर सुनकर उसपर चढगया अब यहां यह बात साफ नहीं है कि वह खान के हाथ से मारागया या उसी मुद्दई (मानकूजी के साले) के हाथसे कतल हुआ मगर उसका सरखान फीरोजजंगके सिपाहियों के हाथ लगा जो हुजू-र में पहुंचा।

इस अच्छी बंदगी के बदले में शाबाशी के सिवाय खान पर और भी महरबानियां हुईं और मुतलबखां को भी ५ सदी का इजाफा मिला।

४३ वां आलमगीरी सन.

सन् १११० हि० संवत १७५५ सन् १६९९ ई०

१ रमजान (फागुनसुदि २। २२ फरवरी) से रोजे लगे बादशाह शोलापुर में आगये।

मनसूरखां को हुक्म हुआ कि बादशाहजादे कामबखश के महल को बुनगाह से ले आवे।

मामूरखां आतिशखां के मरने से करनाटक का फौजदार हुआ।

हमीदुद्दीनखां बहादुर ने महरमखां के मरजाने से जवाहरखाने की दरोगाई पाई

याहाखां के बदले जाने से रुस्तमखां बहादुर शाहजहानी का रिस्तेदार रुस्तमबेगखां चरकस जो विलायत से ताजा आकर नौकर हुआ था मंगलवेडे का किलेदार हुआ।

महरबानी से शाँहजादे कामबखश के वास्ते यह हुक्म हुआ कि जुहर की नमाज हसनबाडी के दौलतखाने की मसजिद में और आसिर की हजरत के साथ पढा करे।

सरबराहखां कोटवाल के नायब मोहम्मदअमीन को हुक्म हुआ कि बादशाहजादे का उतरा हुआ दीवान और नायिब मीरकहुसेन बादशाही माल हासिलका बहुतसा रुपया खागया है दीवानी दफतरवाले जो कुछ लिखकर देवें वह उस से चबूतरे में बैठाकर वसूल करें यह मेरा भी मुलाकाती था भला आदमी था मगर काम करने का सलीका न था उस की गलतियों में से एक मशहूर गलती यह भी थी कि २।३ भले आदमियों की तरह से कि जो बेटों और ताबेदारों की ईमान्दारी और कारगुजारी के भरोसे रहा करते थे अपना दिल खुश किया करता था मगर अखीर को परदा खुलगया सूबे की नायबी में उस के नालायिक बेटे और बिगाडनेवाले पुराने दोस्त आशना चोर और लबाडी रिंदे उस को गाफिल और काम से नावाकिफ देख कर बादशाह और बादशाहजादे का माल खागये और अखीर में उस को कोटवाली तक पहुंचाकर आप जल्दी से अपने २ वतन में जा पहुंचे और इधर इस के पास देने को कुछभी न था मगर मुखलिसखां मुलतिफितखां और इनायतुल्लाहखां जैसे नेक बुजर्गों ने उस के हाल पर रहम कर के मदद की और मिलकर बादशाह के हजूर में भी कुछ भलाई की बातें कहीं जिस पर वह कैद से छूटगया फिर मरते वक्ततक उस ने कमर नहीं बांधी।

बादशाह के हुक्म से खुदाबंदाखां बुनगाह की रखवाली करने को गया।

जुम्दतुलमुल्क ईद की नमाज पढने के लिये हजूर में आया।

ईद के दिन बादशाहजादा कामबखश घोडे पर सवार होकर बादशाह की सवारीके साथ गया।

पेशकशें नजर से गुजरीं इनायत चाहनेवालों की रियायतें हुईं।

सुलतान बलंदअखतर ने ईद की मुबारकबादका सलाम किया ।

दीवान खास की दरोगाई के बदलेजाने के पीछे रूहुल्लाहखां का मनसब जो ढाई हजारी था पांचसदी और बढा ।

दक्खन के तोपखाने के दरोगा मनसूरखां ने अर्ज कराई कि उस के भाई यूसुफखां ने कमर नगर के जिले में जहां का वह किलेदार है १ शख्स को पेकडकर हजूर में भेजा है जो अपने को अकबर बताता था हुक्म हुआ कि हमीदुद्दीनखां को सौंप देवें ।

सन १११० हि० । संवत् १७५६ । सन् १६९९ । ई० ।

२९ शव्वाल (बैशाखसुदि ११२० अप्रेल) को बादशाहजादा कामबखश उस डेरे में चलागया जो गुल्लालबाड के बाहर १ जरीब पर तैयार किया-गया था ।

२६ ज़ीकाद (जेठबदि १३।१७ मई) को राना अमरसिंह के भेजे हुए आदमी दरगाह में हाजिर आये १ हाथी २ घोडे ९ तलवारें और ९ पाजामें चमडे के लाये । •

कामभारखां और रूपसिंह के बेटे राजा मानसिंह ने जो ढाईहजारी थे पांच सदी और २ सदीका इजाफा पाया ।

१० जिलहज्ज (जेठसुदि १२।३० मई) को शाहजादा कामबखश बाद-शाह की सवारी की जानेआने से पहिले ईदगाह में गया और आया ।

२९ (असाढसुदि १।१८ जून) को काम बखशने मौकूफ होने के पीछे २० हजारी मनसब की बहाली का मुजरा किया ।

सन् ११११ । हि० संवत् १७५६ । सन् १६९९ ई० ।

६ मोहर्रम (असाढसुदि ८।२४ जून) को चीनकुलीचखां बहादुर गनीम को सजा देकर कोटे की तर्फ से हजूर में आया उस की इज्जत बढाने के लिये बखशीउलमुल्क मुखलिसखां इसलामपुरी के दरवाजे तक पेशवाई करके मुलाजिमत में लाया पांच सदी २०० सवारों का इजाफा पाकर साढे ३ हजारी ३हजार सवारों के दरजे को पहुंचा ।

२२ (सावनवदि ८।१० जोलाई) को निजाबतखां का बेटा मोहम्मदइब्रा-हीम जिस का खिताब खानआलम था कैद से छूटकर हाजिर आने में पहिले ही ३ हजारी २ हजार सवार के मनसब और जौनपुर की फ़ौजदारी, पर मुकर्रर होगया।

इंदरसिंह को २ हजारी हजार सवार का और बहादुरसिंह को हजारी ५०० सवार का मनसब मिला दोनों राना राजसिंह के बेटे थे खानफीरोज जंग के लिखने से मोहम्मदअमीनखां ने अर्ज की कि इसलामगढ का जमींदार मुसलमानों की फौज के जीतने से कमबख्ती के जंगल में भागगया और इस-लामगढ में बादशाही बंदोंका अमल होगया।

जाली बलंदअख्तर को जिसने अपने को इलाहाबाद के जिले में शुजाअका बेटा जाहिर किया था गुर्जबरदार गवालियरमें पहुंचाकर किलेदार की मोहर से रसीद लेआया।

शुजाअतखां ने छींटेदार पत्थर[1] का १ पियाला मल्तिफितखां के वास्ते भेजा था वह किसी तरह से बादशाह के नजर आगया खानमजकूर को हुक्म हुआ कि उसको लिखे कि पियाले और रकाबी की किसम से कुछ बरतन बनवाकर भेजे उसने बरतन नहीं भेजे बल्कि तख्त चोखी एकही पत्थर के और मीरफर्श भी बहुत सुडौल और साफ चमकदार बनवाकर भेजदिये जो पसं-द आगये।

मशहूर जगता का पोता वहीदखां गोबंद का थानेदार मुकर्रर हुआ ३ सदी ३०० सवार था ४ सदी ४०० सवार का इजाफा पाया।

सतबा दफलिया जो दरगाह में आ पहुंचा था लशकर से भागगया तर-बीयतखां मीरआतिश सैयदखां शुकुल्लाहखां का शगरी वगैरा पीछा करके सजा-देनेके वास्ते भेजे गये।

खानजहांबहादुर की बहन हाजीखानम अपने भाई के मरे पीछे दिल्ली से हजूर में आई ५ हजार रुपये का जवाहर नीमा आस्तीन दुशाला और २ हजार रुपये नकद इनायत हुए।

---

१ कलकत्ते की प्रति में संगमरियम अर्थात् कालेपत्थरका।

खानजहां का वेटा नुसरतखां ९ सदी ९०० सवारों का मनसबदार था उसको १ सदी इजाफा मिला उस के छोटे भाई अबुलफतहखां ने जो ७ सदी ३०० सवार था ३ सदी १०० सवार का इजाफा पाया।

इनायतुल्लाहखां के वेटे जियाउल्ला ने लड़का पैदा होने की पेशकश गुजरानी।

मुखलिसखां ईरान के वडे व्योपारी मोहम्मदतकी को मुलाजिमत में लाया उसने कुरान लंगरीगोरी जरी के २७ थान और फितीने का इतर नजर किया।

जुलफिकारखां वहादुर के वदलेजाने से रुहुल्लाहखां जिलेका दरोगा हुआ।

अवदुलरहमानखां के वदलेजाने से सयादतखां ने अर्ज मुकर्रर की दरोगाई पाई हजारी २०० सवार था पांचसदी का इजाफा पाया।

सफशिकखां वडे शाहजादे का वकील हुआ।

वादशाह का हुक्म हुआ कि अनूपसिंह का वेटा सरूपसिंह रामा के कवीलों को जुलफिकारखां वहादुर के पास से हजूर में लेआवे और सेवा के कवीले जो जुम्दतुलमुल्क की मिसलमें रहतेहैं उनको हमीदुद्दीनखां वहां से लाकर राजा सादू के पास गुलालवाड में रखदे।

सादुल्लाहखां के वेटे हफीजुल्लाहखां ने जो सूवे ठट्टे का नाजिम और सेवस्तान का फौजदार था शाहजादे मोअज्जुदीन की अर्ज से ३०० सवारों का इजाफा पाया पहिले २ हजारी ७०० सवार था।

हमीदुद्दीनखां वहादुरोंने जो २ हजारी १४०० सवार था पांचसदी इजाफा पाया।

मुलतिफितखां के डेढ हजारी २०० सवारों के मनसव पर १०० सवार और वढे।

शेखसादुल्लाह खवासों की मुशरफी से वदला गया और मुझको वह खिदमत अगली खिदमतों के सिवाय इनायत हुई।

खाननुसरतजंग वादशाह की मुलाजिमत में आया खिलअत घोडा हाथी और जडाऊ खंजर इनायत हुआ।

बादशाह का गनीम के किलों को छुडाने के लिये जाना और बसंतगढ का फतह होना।

बादशाह ने इसलामपुरी में ४ वर्षतक रहने के पीछे जब कि लोगों को अच्छी तरह से अमन और आराम मिलगया था और इस पर भी बादशाही फौजें बागियों को मारने और पकडने से दम नहीं लेने देती थीं जिहाद के सवाब कमाने का इरादा करके चाहा कि खुद चलकर काफिरों के किलों को घोडोंकी टापों से उडादें इसलिये हुक्म हुआ कि जो मजबूत किला चूने और पत्थर का १ साल पहिले दौलतखाने के गिर्द बनचुका है उसके आस-पास एक कच्चा किला ऐसा बनावें कि जिसका घेरा माप में ढाई कोस का हो।

वह काम जो एक साल में होने का था १९ दिन में ही काम करनेवालों की महनत और कोशिश से तैयार होगया फिर बादशाह ने नवाब जीनतुल-निसा बेगम बादशाहजादे की मा और महल की दूसरी खिदमत करनेवालियों तथा सब लोगों के कबीलों को उस अमन की जगह में छोडकर असदखां को जरूरी तइनातियों के साथ उसकी रखवाली पर मुकर्रर फरमाया।

५ जमादिउलअव्वल (कार्तिकसुदि ६।१९ अकतूबर) को १ अच्छी घडी में बादशाह सूरज के समान जहान फतह करने के वास्ते निकले जो मैं सब मंजिलों के उतरने चढने का रोजनामचा लिखूं तो कलम के घोडे का पांव मट्ठा होजावे खुलासा यह है कि २० दिनमें मंजिलें तै कर के मुर्तिजाबाद मिरच के मैदान में उतरे शाहजादा मोहम्मदआजम जो बेद-गांव से बुलायागया था वह भी इसी मंजिल में पहुंचकर कदमों से लगा खिलअत खासा जडाऊ धुगधुगी और मीना कार साज का घोडा इनायत हुआ।

हरकारों की खबर से तहकीक होचुका था कि रामा बराड की तर्फ गया हुआ है इसलिये शाहजादे बेदारबखत को हुक्म हुआ कि अपनी बुनगाह को मुरतिजाबाद में छोडकर उस पर धावा करे।

रूहुल्लाहखां को खिलअत तलवार और हमीदुद्दीनखां बहादुर को खिलअत

और कटार इनायत होकर हुक्म मिला कि परनालागढ से सितारा गढतक घोडे दौडकर आबदीका नाम और निशान बाकी न छोडें ।

जब करके परगने में डेरेलगे तो अर्जहुई कि यहां बादशाही थाना था गनीमने उठादियाहै और एक पुरानी मसजिद है वह भी उजडीपडी है बादशाह दो कोस चलकर उस मसजिद में गये और नमाज पढकर उसकी हिफाजत और थाने की आबादी का हुक्म दे आये ।

वहां से मसबाडी नाम मुकाम पर जहां मुसलमानों का थाना था बादशाह का डेरा हुआ वहां से ३ कोस पर सामने ही बसंतगढनाम एक किला गनीम के कबजे में था जो मजबूती में मशहूर था हुक्म हुआ कि तरबीयतखां-मीरआतिश इस बडे पहाडपर आग बरसावे उसने २ सालका काम २ दिन में पूरा करके तोपखाने के आदमियों को किलेके नीचे तक पहुंचादिया और किलेपर तोप लगाकर गोले मारना शुरूकिया किलेवाले भी तोप मारनेमें नहीं रुकते थे और आग बरसाने में कमी नहीं करते थे इस खबर की अर्ज होनेपर बादशाही दौलतखाने को किशना नदी पर जो किलेसे पावकोस पर बहती है खडा किया गया और बादशाद की जबान से निकला कि इस सफर से हमको जिहाद के सिवाय और कोई बात मंजूर नहीं है जो खुदा और रसूल की मरजी का काम है तडके ही रकाबमें पांव रखने और शरीर काफिरों को कतल-करने के लिये झंडा खडा करना चाहिये ।

बादशाही दौलतखाने के आजाने और धमकी पहुंचने से काफिरों की कमर पहाड के बराबर मजबूत थी तोभी टूटगई उन्होंने उसी दिन पनाह मांगी और अपने जोरू बच्चोंको निकाल लेजाना गनीमत समझा ।

गरीब नेवाज बादशाह की दरगाह में आजिजों को पनाह मिलाही करती है इसलिये हुक्म हुआ कि किलेवाले बगैर हथियार के निकल जावें और तलवार के घाट न पडें वे रात को ही निकलगये तडके १२ जमादिउल

---

१ कुरूर ।

आखिर रविवार (मार्गशीर्षसुदि । १२ । १४ । २९ नवम्बर) को वह किला बादशाही कबजेमें आगया और किलीद फतह नाम रखागया बहुतसे जखीरे और बे शुमार हथियार बादशाही मुत्सद्दियों के हाथ लगे शादियाने बजे और सिपाहियों को इनाम बढे ।

४ जमादिउल आखिर (मार्गशीर्षसुदि ६।१७ नवम्बर को) खबर पहुंची थी कि नरमदा के उधर शाहजादा बेदारबखत की रामा से मुठभेडहुई. बडी-लडाई लडीगई खानआलम और सरफराजखां ने खूब बहादुरी की गनीम डेरा डंडा छोडकर भागगया शाहजादे और दूसरे बहादुरों को निवाजिशें भेजी गई ।

खान बहादुर की तइनाती शाहजादे के पास हुई और उसको हुक्म दिया-गया कि गनीमजिधर होकर निकले सजा देकर उसका झगडा मिटा दे ।

मोहम्मद अकबर के २ नौकर उसकी अरजी कसूर माफकरने के वास्ते और १ संदूकचा अतरका लेकर कंधार से आये बादशाह ने उनके हाथ

---

१ पंचांगके हिसाब से रविवार को १३ होतीहै १२ शनी को थी परन्तु चंद्र दर्शन के हिसाबसे रविवार को १३ तारीख हो तो होसकती है फकत १ दिन का अंतर है सो अकसर हुवा करता है ।

२ मालूम होता है कि इससे पहिलेभी अकबरने ऐसीही अर्जी भेजी थी दुर्गदास राठोड की औलाद के पास जो बादशाही फरमान हैं उनमें १ फरमान १० रजबसन ४२ जलूस (पौषसुदि १२ सं. १७५५ । ३ जनवरी १६९९) का लिखाहुआ है जिसका यह आशय है कि मोहम्मदअकबर का निशानअमीरखां के बेटे मीरखां के नाम आया था वह हजूर की नजरसे गुजरा वह प्यारा बेटा काबुल के सूबेमें है मगर काबुल और मुलतान में होकर दरगाह में नहीं हाजिर होसकता है और शुजाअतखां (सूबेदार गुजरात) की अर्जी से मालूम हुआ कि उसका पक्का इरादा हजूर में आनेका है इस लिये उसको हुक्म लिखदियागया है कि कंधारके इलाके में कौसंजको जाकर सेवी, कंजाव, और, सेवस्तान होताहुआ अहमदाबाद में अजावे और वहां से दरगाह को रवाने होजावे सो तुम इस फरमान के पहुंचतेही उसकी पेशवाईके वास्ते सेवस्तान को चलेजाओ और उसको जैसलमेर या दूसरे किसी रस्ते जिसे मुनासिब समझो अहमदाबादमें लाओ व फिर यहां से तुम और शुजाअतखां उसके साथ दरगाह में आओ ।

अकबर के वास्ते खिलअत और फरमान भेजकर लिखा कि जबतक सरहद पर न पहुंचे कसूर माफ नहीं होसकते मगर बादशाही मुल्कमें पहुंचने के पीछे बंगाले की सूबेदारी और दूसरी महरबानियों का फरमान इनायत होगा ।

सूरतबंदर का मुत्सद्दी अमानतखां मरगया उसका बडाभाई दयानतखां उसकी जगह गया ।

सैफुद्दीनखां को शोलापुर की किल्लेदारी मिली ।

छुतफुल्लाहखां बीजापुर का नाजिम हुआ उसके ढाई हजारी १४०० सवारों के मनसबपर पांचसदी २०० सवारों का इजाफा होगया ।

आसमान जैसे ऊंचे सितारा का फतह होना ।

सितारों को पहिचानने वाले जानते हैं कि खुदा ने अपनी घडीहुई हरेक चीज के नसीब में कुछ न कुछ बुजर्गी और बरकत रखदी है जिससे वह अपने बराबर वालों पर बढा चढा रहता है इस मुग्धम बात का यह मायना है कि सितारे का किला जो सब मजबूत किलों का दादा है एक ऐसे पहाड की चोटी पर बना है कि जिसका सिर तो आसमान से जा लगा है और जड पाताल से भी आगे निकलगई है वह पहाड एक आसमान है जिसपर यह सितारा चमक रहा है और एक जहानहै कि जिसकी लम्बाई और चौडाई से लोग हैरान होरहेहैं उसकी ऊंचाई ख्याल की पहुंच से जियादाहै और चौडाई अटकल के घेरे से बाहर है उसकी मजबूती का बखान करनेमें अनुमान का सिर चकराताहै और मोटाई का बयान लिखने में कलम का पांव लंगडताहै सूरज जैसे चमकने वाले सितारे का नसीब भी ऐसा चमका हुआ था कि आलमगीर जैसे बादशाह उसको गनीम के पंजेसे छुडाने के वास्ते खुद पधारे ।

२९ जमादिउलआखिर सन ४३ (पौषबदि १२ । ८ दिसम्बर) को किले के नीचे १॥ कोस के फासिले से आसमान जैसे ऊंचे बादशाही तंबू ताने गये दूसरी तर्फ बादशाहजादे आजमशाह के डेरे लगे और लशकर समंदर की तहर से उसके चारों तरफ फिरगये तरबीयतखां मीरआतिश ने बाद-

शाह के हुक्म से मोरचे दौडाये वहादुरों ने थोडेदिनों में ही किले के कमरकोट तक पहुंचकर अपनी कमर कसी अजगर जैसी तोपें ऊपर चढाई गईं जिनकी कडक से आकाश के ग्रहों के दिल दहलते थे और आग की गरमी से मंगल जैसे तारे भी मोम की तरहसे पिघलते थे लेकिन उसका कोट ही सब पहाड का था जो २० गज ऊंचा है और उसपर ६ गज पत्थर काटकर कंगूरे बनाये हैं कोई दीवार नहीं है कि जिसके जोड या नीव में कुछ हलचल पडे।

यह किला काफरे हरबी (लडनेवाले काफिरका) की रहने की जगह था इसलिये मजबूती का तमाम सामान तोपखाने और जखीरों से भराहुआ था पानी के चशमें गरमियों में भी वहते थे कामके आदमी हथेलियों पर जान लियेहुए तैयार थे रातदिन बान बन्दूक हुक्के चादरमशक और मतवाले लगातार वरसते थे बाहर की बे शुमार फौज भी रसद पर आ गिरती थी और घास को जो जानवरों के जीने की चीज है २०।२० कोस तक आगे पीछे जलादेती थी वह कई वार वडे जोर शोर से उर्दू के पासतक भी आगई पर सजा पाकर भागी नाज और चारे की महँगाई यहांतक पहुंची कि जाहिर देखनेवालों की नजर में किले का फतह होना मुशकिल दिखाई देनेलगा मगर बादशाह उसी मजबूती और दिलजमई से काम कियेजाते थे यहां तक कि किले की दीवारसे १२ गज के फासिले पर बुर्ज के सामने १ दमदमा उठाया गया जिसके मसाले में लगकर ३०।४० कोसतक भी नामको कोई पेड न रहा और बादशाहजादे की तर्फसे किले के नीचे तक मोरचे दौडगये सिलावटों को सुरंग चलाने का हुक्म हुआ जिन्होंने उसी दमदमे के पास से कई दिन में २४ गज पत्थर बुर्ज के नीचे का खुक्ल कर डाला पादलिया जातिके २ हजार पयादे जो किलों के लेने में उस्ताद होतेहैं बादशाह के हुक्म से हाजिर आये उनको १ लाख ३६ हजार रुपये २ वर्षकी तलब के पेशगी दिये गये और किले पर चढने का सामान जीने, माल और चमडे के कपडों से तैयार हुआ सचहै जो किसी बात का चाहने वाला

होता है वह हरेक दरवाजे से अपना मतलब ढूंढताहै सो किसी न किसी दरवाजेसे उसको रस्ता मिलजाता है मगर काम करने वालों के नजदीक यह सब तैयारी किलालेने के वास्ते पूरी नहीं थी इसलिये तरबीयतखां ने उसी २४ गज ऊंचे दमदमे के नीचे से १ नाल चलाई उसके मसाले में १ हजार कजावें (ऊटोंके पलान) टाट और गजींके बोरे जो महँगी होते २ एक रुपयाकी ४ गज भी नहीं मिलती थी और जंगल के लक्कड खर्चे होगये फिर मिट्टी डाल कर सुरंग किले के नीचे पहुंचाई और उसके ऊपर लकडी की नसेनिया लगाई तो भी इससे जियादा और काम न निकला कि तरबीयतखां ने दमदमें पर रहकले चढादिये और अंदरवाले किले की दीवार से सिर उठाकर बंदूक नहीं मारसकते थे मगर दीवार के नीचे छुप कर पत्थर फेंका करते थे जिससे यह मतलब नहीं बनता था कि बहादुरलोग दीवार पर चढकर हल्ला करें ।

तब फिर हुक्म हुआ कि रुहुल्लाहखां की देखभाल में फतहउल्लाहखां दूसरे मोरचे किले के दरवाजे की तर्फसे चलावे उसने अपनी अकल से १ महीनेतक मेहनत करके ९ शव्वाल सन ४४ (चैतसुदि ७ । १६ मार्च) को किले की रेनी के नीचे तक ये मोरचे पहुंचा दिये ।

ताक के उतार ने में तरबीयतखां से जो गलतियां हुई थीं उनके बदले में उसने १ ताक किले की पत्थरीली दीवार में खोदा जिसमें १ तर्फ से तो १४ गज और दूसरी तर्फ से १० गज लंबाई में दीवार खाली कर दी गई थी बाहर और भीतर वालों के बीच में जो उस ताक का पहरा देते थे गजभर का परदा रहगया था मगर कोई उसके उठाने की हिम्मत नहीं करता था आखिर यह बात ठहरी कि जो इस सब थोथ में बारूद भरकर दीवार को उडादेवें तो रस्ता खुल जावे और हल्लाकरने वाले आसानी से किले में घुसजावें और हुक्म हुआ कि सवार पैदल तोपखानें खास चौकी, पठानों और गक्कडों के दल दूसरे तमाम तइनाती गेरी[१] और करनाटकी पैदलोंके सिवाय जो रात दिन वहां हाजिर रहते

---

१ गेरी किसीजाति का नाम मालूम होता है ।

थे बखशी तुलमुल्क मुखलिसखां और हमीदुद्दीनखां बहादुर कई हजार सवारों के साथ जाकर काबू देखते रहें ज्योंही सुरंग उडे और सिर बेचनेवाले किलेमें घुसें उनकी मदद करें ।

५ जीकाद (बैशाख सुदि ७ । १४ अप्रेल) को तडके ही पहिले सुरंग में बत्ती दीगई अंदर की दीवार गिरी और बहुत से किलेवाले जल मरे दूसरी दीवार के वास्ते भी यही गुमान था कि अंदर की तर्फ गिरेगी इसलिये उनलोगों को जो हमला करने पर तुले खडे थे खबर नहीं की गई कि पीछे हट जाओ और बत्ती को आग दिखा दी गई यह दीवार इधर ही गिरी कई हजार आदमियों पर जो हमला करनेवाले थे पत्थर और मिट्टी के पहाड आ पडे और जो लोग मट्टी की गुफाओं में घात लगाये बैठे थे उनकी तो कबरें वहीं बनगई । इस धमाके की भौंचाल से जीना भी गिर पडा जिसके नीचे भी बहुतसे आदमी मौत की गोद में जा रहे और उनके बदन टुकडे २ होकर बिखर गये २ हजार के लगभग कामके आदमी व्यर्थ मारेगये ।

आदमियों के वास्ते बहुत बडा रस्ता आप से आप खुलगया और उस गडबडमें कई पियादे दौडकर दीवार के ऊपर भी चढ गये थे और पुकार २ कर कहते थे कि आओ यहां कोई नहीं है मगर यह हालत देखकर डर के मारे मोरचों में कोई ऐसा न था कि बहादुरी का पांव आगे बढाता काम बिगडगया और किया नहीं किया सब बराबर होगया ।

कई घडी पीछे जब कि मौका निकल गया था अंदरवालों ने देखा कि उधर से कोई नहीं दिखता है तो दीवार पर चढकर जगह मजबूत करली और बंदूक मारनी शुरू की इधर तो दमदमा भी बिखरगया था रहकले भी गिरपडे थे और काम वाले काम छोड बैठे थे फिर कौन सामना करसकता था अगर ऐसे वक्त में बहादुर बादशाह इनके सिरपर मौजूद होते तो वे लाशों के ढेरों पर चढकर किले में दाखिल होजाते सच है कि बगैर कामलेने वाले के काम अधूरे ही रहते हैं और सरदार बिना सिपाही बेसिरे होते हैं जो यह एक लाख भी हों तो

उस एक की मदद बगैर किसी गिनती में नहीं है और वह जो अकेला भी मैदान में आजावे तो इन १ लाख की मदद का मोहताज न हो।

इस आगमबुद्धि से बादशाह ने पहाड के नीचे डेरा खडा करने का हुक्म दिया था जहां से खुद और बादशाहजादे वहां तशरीफ ले जावें और अपने २ काम करें मगर तकदीर अपना काम कियाचाहती थी इसलिये सब अकलमंदों ने बडी आजजी से बादशाह को मना किया और उसदिन भी सवारी तैयार थी मगर काम बिगड जाने के पीछे जाने में क्या फायदा था।

बादशाहने जिस का दिल मजबूत और इरादा पक्का था वह हाल सुन कर कई बार कुरान की १ आयत पढी जिसका यह अर्थहै और उन घबराये हुए लोगों से कहलाया कि क्यों इतने वहम और घबराहट में पडगये हो गनीम तो तुम्हारे ऊपर नहीं आ पडाहै तुमने १ तदबीर की थीवह नहीं चली क्या एक छत नहीं गिरपडती है और लोग सोते हुवे नहीं मरजाते हैं।

उसीदिन सैयद सरफराजखां मुल्लाजी और बखशी उलमुल्कबहरेमंदखां की फौज को हुक्म हुआ कि जाकर तरबीयतखां की शामिलात में मोरचों को कायम रखें।

जो लोग जमीन में गडगये थे उनमें से जिन २ के वारिस पहुंचसके उन्होंने मुरदों और जखमियों को निकाला और मंजिल पर पहुंचाया दूसरों ने यह कहकर कि "अब कोई इलाज नहीं है जानेदो" कुछ न किया अजब बात यह हुई कि मीलिया पियादों ने, जो अपने भाइयों वेटों और यारों के जमीन में दबजाने से घबरा गये थे और मीरआतिश से जलेहुए थे जब देखा कि मुरदों का पत्थर और मिट्टी में से निकालना मुशकिल है और उन के दीन में जलाना वाजिब है तो मोरचे में जो बिलकुल लकडी का बनाहुआ था उसीरात को खबर किये बिना ही आग लगादी जो ७ दिन रात सुलगतीरही, वहां इतना पानी कहां था कि जो उस आग के जंगलको बुझाता। तमाम हिंदू और बाजे मुसलमान जिनके निकाल ने की फुरसत न मिली थी एक साथ जलगये। दुनियां अजब अग्नी कुंड है जिस दोस्त और दुशमन को मौत की झल

से बचने की मजाल नहीं है और कोई भी उसकी विचित्र गतियों का कुछ बखान नहीं करसकता है यह मंजिल अच्छी तो है मगर होशयार रहना चाहिये कि यहां गर्म हवा चला करती है।

इस सरदार (तरबीयतखां) ने रोटी के लालच और जान के डरसे जो चाकरों को बादशाहों के हजूर में हुआ करता है किलेके फतह करने में कई ऐसी कोशिशें की थीं कि जो समझ में नहीं आती थीं मगर क्या कियाजावे कि बंदा तो तदबीर करनेवाला है और खुदा तकदीर करनेवाला। इस बादशाहों और (शहंशाहों) के बादशाहके भाग की भी अजब कलाबाजी है कि जिसने इस ८९ वर्ष की बादशाही में जिधर मुंह किया है अखीरदरजे के मतलब और मनोरथ दौडकर उसके आगे आ खडे हुए हैं।

सन् ११११ हि० संवत् १७५७ सन् १७०० ई०।

२९ रमजान (चैत वदि १२ । ६ मार्च) को मुखबरों ने खबर पहुंचाई कि कमबखत रामा जो बराड की तर्फसे नाकाम होकर अपने ऊजड खेडे को लौटा था मरगया है।

१० शव्वाल (चैतसुदि १३।२१ मार्च) को फिर खबर आई कि उसका ५ वर्ष का बेटा भी जिसको उसके सरदारोंने अपना सरदार बनाया था उसीके पास जा पहुंचा है।

बादशाह के इकबाल का यह चमत्कार देखकर काफिर (रामा) के घरका मुखतार परसराम परनी[1] के किले से बाहर निकला जो सितारे से ७ कोस पर है और रूहुल्लाहखां के वसीले से कसूर माफ कराने को दरगाह में हाजिर हुआ।

सितारे के समझदार किलेदार सोमान ने भी देखा कि दूसरे लोग अर्ज करने और अपना काम बनाने में आगे बढजावेंगे और किले की दीवार तरबीयतखां के मोरचों की तर्फ से ७० गज आधी बुर्जतक गिरगई है बहुतसी

१ कलकत्तेकी प्रति में परली।

फौज कड़क बिजली और बे मुरव्वत तोपों के गोलों से उड़चुकी है और मुल्क जब तोप बादशाहजादे के मोरचों के पीछे पहाड पर चढादी गई है जो किले की इमारतों को ढा रहीहै ४०० आदमी सुरंगके उडने से जल मरे हैं फतहउल्लाहखां पहाड पर के मोरचों को किले के दरवाजे तक ले आया है चाहताहै कि एकही गोले में दरवाजे को उखाडदे और मजबूत कोट को गिरादे उसने बादशाह की डयोढी के सिवाय और कहीं अपने बचाव की सूरत नहीं देखी और आजमशाह के पास अपने वकील भेजे शाहजादे ने किले में के कई हजार मर्द औरतों की जानों पर रहम करके बादशाह से उन गुनाहगारों की सिफारिश की बादशाह ने कबूल करके हुक्म दिया कि किलेवाले अमन-पाकर किले से निकल जावें ।

१३ जीकाद (वैशाखसुदि १९ । २२ अप्रेल) को बादशाही फतह का झंडा किले के कंगूरों पर चढा । मुबारकबाद का शादियाना बजा । सितारा-बादशाह के तेजप्रताप से सूरज बनकर चमकने लगा और अपने भागबलसे बादशाही मुल्कों में मिलकर आबाद होगया ।

यह किला आजमशाह के वसीले से फतह हुआ था इसलिये इसका नाम आजमतारा रखागया ।

दूसरे दिन शाहजादा **सोंभान** को हाथ और गरदन बांधकर मुलाजिमत में लाया । हुक्म हुआ कि बंद खोलदें और उसको चौखट पर सिर घिसने देवें । ५ हजारी २ हजार का मनसब खिलअत कटार घोडा हाथी तोग अलम नक्कारा और २० हजार रुपया उस को इनायत हुआ और वह बादशाह को दुआऐं देने लगा ।

॥ इति ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
खेमराज-श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्, प्रेस-बम्बई.

क्रय्य पुस्तकें (इतिहासादि ग्रंथ ।)
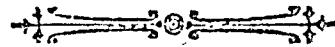
नाम. की.

इतिहासगुरुखालसा–(ओजवर्धक सिक्खोंका पूर्ण इतिहास) इसमें–गुरु नानकसाहबसे लेकर दशों बादशाहीतकका जीवनचरित्र भलीप्रकार वर्णित है..... ... ...

जापानका उदय–उत्साह एकतापूर्वक उद्योग करनेसे मनुष्य असाध्य कार्य भी शीघ्र करसक्ता है । किन्तु प्रत्येक बातमें त्रिबाहीकी मुख्यता मानीगई है । जापानियोंने उक्त उपायोंकी दृढता तथादया, धैर्य और राजभक्तिसे आशातीत जो उन्नति कीहै उन्हीं बातोंका संग्रह इस पुस्तकमें है ....

जैमिनीयअश्वमेध–भाषा–परममनोहर दोहा, चौपाईमें छन्दबद्ध भाषा अतीव मनोहर है. ग्लेज कागज.... ....

" तथा रफ कागज ....

नैपालका इतिहास–भाषामें स्व० पं० बलदेवप्रसादमिश्र रचित । इसमें–नैपालदेशभरका सांगोपांग वर्णन लिखा है ....

बुद्धका जीवनचरित्र–स्वामीपरमानन्दजी लिखित. ....

भारत भ्रमण–पांचों खण्ड सम्पूर्ण–इस ग्रंथमें हिंदुस्तानके सम्पूर्ण तीर्थस्थान, शहर, उनका इतिहास, जनसंख्या, हिंदू मुसलमान इत्यादि निवासियोंकी भिन्न २ संख्या, उनके मत, प्रसिद्ध २ शहरोंके भौगोलिक वृत्तान्त, कृषि और व्यापार सम्बन्धी विशेषवृत्त लिखागया है । इस पुस्तकके द्वारा तीर्थयात्रा करनेवालेको भारतवर्षके समस्ततीर्थ उनकी पौराणिक कथा इत्यादिक मिलती है । व्यापार या देशाटनके लिये यात्रा करनेवालेको जिस नगरमें जिस पदार्थकी प्रसिद्धि है उसका सब वृत्त वहांकी ऐतिहासिक वा भौगोलिक चुनीहुई

नाम. की. रु. आ.

बातें लिखीहुई है। इसलिये यह पुस्तक प्रत्येक मनुष्यको लाभलादायक है। श्रीमान् बाबू साधुचरणप्रसादजीने हजारों रुपये तथा मानसिक और शारीरिक बलके व्ययसे इसको बनाया है। इसकी छपाई तथा जिल्द बंधीकी सुन्दरता बहु-तही मनोहर है। प्रत्येक यात्रीके लिये इससे बडी सहायता मिलसकती है। इस ग्रंथकी उपयोगिता देखनेसेही मालूम पड-सकती है... .... ८—०

भूलोकरहस्य— .... ०—२

मदनकोष—अर्थात् जीवनचरित्रस्तोत्र—इसमें नामोंके अ-कारादि क्रमसे संसारके १००० महानुभावोंके उत्तमोत्तम चरित्र संस्कृत, हिन्दी, फारसी, इंग्रेजी आदि पुस्तकोंके आशयसे लिखेगये हैं. .... १—८

महाराणायशप्रकाश—"मलसीसर" ठाकुर भूरसिंह शेखावत संगृहीत. .... १—४

रामाश्वमेध—केवल भाषावार्तिक मनोहर जिल्द बँधी. .... २—०

रामाश्वमेध—भाषापद्यमें—रेवारामजीकृत—इसमें दोहा, चौपाई, और छन्दरामायणके अनुसार वर्णित है अवश्य लीजिये. ... २—०

रामाश्वमेध—भाषापद्यमें छोटा .... ०—१२

राजस्थानइतिहास—प्रथमभाग—अर्थात् कर्नल जेम्स टाडप्र-णीत—अंग्रेजीसे भाषानुवाद पूर्वभाग स्वर्गीय पं० बलदेवप्रसाद मिश्रकृत। सुन्दर कागज और विलायती कपडेकी जिल्द जिस-पर सोनेके अक्षर चकाचौंध करदेते हैं. .... १०—०

राजस्थानइतिहास—दूसराभाग—जिसमें—जोधपुर, बीकानेर जैसलमेर, जैपुर, शेखावाटी, बूँदी और कोटाका इतिहास है १०—०

नाम. की. रु. आ.

वाल्मीकीरामायण–केवल भाषा दो जिल्दोंमें । इसकी भाषा मूलपुस्तकके प्रत्येक श्लोकसे मिलाकर बनाई गईहै और श्लोकार्थ जाननेके लिये प्रत्येक सर्गके श्लोकांकभी डालेगये हैं । पुस्तक बडी होनेके कारण दो जिल्दोंमें बांधीगई है तथा दोनोंमें सुन्दर विलायती कागज और विलायती कपडा तथा जिल्दपर सोनेके अक्षर लगेहुए हैं । श्रीरामभक्तोंके लिये इस सर्वाङ्गसुन्दर ग्रन्थका न्योछावर अल्प रक्खा है ग्लेज कागजका दाम १०–०

'' तथा रफका ९–०

स्वपुरुषार्थ–छेदालालशर्माकृत । इसमें अनेक दृष्टान्तोंसे पुरुषार्थकी श्रेष्ठता तथा अंग्रेज, मुसल्मान आदि सज्जनोंके प्राचीन लेखोंसे शिल्पव्यापार आदिमें भारतकी सर्वोच्चता भलीभांति वर्णित है ०–८

स्वदेशसेवा–वर्तमान समयमें स्वदेशीका चारों ओर बडा आन्दोलन होरहा है इसकारण इसको अवश्य संग्रह कर इससे लाभ उठाइये ०–४

उपन्यास ग्रंथ–भाषामें ।

अजीबलाश–देखने योग्य पुस्तक है. ०–४

अदालतका स्वप्न .... ०–१॥

कमलासरस्वती (कहानीरूप रोचक है) ०–४

कादम्बरी–भाषा ०–८

कुन्दनन्दिनी–पं० बलदेवप्रसादमिश्रकृत विषवृक्षउपन्यास । इसमें–अधर्मकार्यका बुरापरिणाम, दाम्पत्यप्रेम, कुसंगका घोर फल, वन–उपवनकी सुन्दरता आनन्द, बुद्धिमानोंका भी संकटके समय कर्तव्यकार्यसे उपहास, पीछे हटजाना, गृहक्लेशका

नाम.	की. रु. आ.
भयंकर दृश्य, पापपुण्यका विचार तथा हासकी मधुरताका अनुभव भलीभांति वर्णित है	०–१२
कोटारानी–ऐतिहासिक उपन्यास	०–२
चपलाउपन्यास–(नामहीसे समझलो)	०–४
चन्द्रलोककीयात्रा–यह रेखागणित, बीजगणित, विज्ञान–(सायन्स) शास्त्रीय युक्तियोंसे भराहुआ, उत्साह तथा बलबुद्धिसे ओतप्रोत अतीव रोंचक उपन्यास देखनेही योग्य है अवश्य लीजिये	१–०
जगदेवपरमार उपन्यास–छपरहाहै.	
डबलबीबी–एक हिन्दू गार्हस्थ्य रोचक उपन्यास–इसमें पहिले विवाहितास्त्रीसे संतति न होसकनेके कारण लडकेके मावाप स्वयं दूसरी स्त्री करतेहैं, या वहुतसी सती स्त्री अपने स्वामीका दूसरा विवाह कराके अपने उपर आफत लातीहैं उसीका उपदेश पूर्ण वर्णित हैं.	०–१
त्रियाचरित्र–रक्षपालीकृत । इसमें नानाप्रकारके उदाहरणों समेत स्त्रीपुरुषोंका प्रेमलुब्ध चरित्र सुजनोंके सचेत होनेके लिये वर्णित है.	०–७
तीनपतोहू–तीन पतोहुओंका अपूर्व दृश्य	१–०
देवरानी जिठानी–सामाजिक उपन्यास (वाबू गोपालराम-द्वारा विरचित) । गृहस्थियोंको अवश्य पढना चाहिये ।	८–०
देवीउपन्यास–स्व० पं० बलदेवप्रसादमिश्र लिखित–सत्यघटना सामाजिक उपन्यास तीन खण्डोंमें देखनेही योग्य है	०–१२
दोबहन–यह भी एक अपूर्व उपन्यास पढने योग्य है	०–१२
धूर्तरसिकलाल–एक परमबोधजनक सामाजिक उपन्यास महता पंडित लज्जाराम शर्मा रचित । इस पुस्तकमें धूर्तरसिकलालका	